तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

उद्देश्यपूर्ण शैक्षिक विधियाँ

Purposive Pedagogical Practices

Vol. V

Special Edition on Emerging Trends in School Education

उद्देश्यपूर्ण शैक्षिक विधियाँ

Purposive Pedagogical Practices

Vol. V

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मु.), नई दिल्ली

Kendriya Vidyalaya Sangathan (HQ), New Delhi

© Kendriya Vidyalaya Sangathan

उद्देश्यपूर्ण शैक्षिक विधियाँ - Purposive Pedagogical Practices Vol. V
Special Edition on Emerging Trends in School Education

Chief Patron : Sh. Vikas Gupta, IAS, Commissioner

Co-Patron : Ms. Chandana Mandal, Additional Commissioner (Acad.)

Editor-in-Chief : Sh. Nagendra Goyal, Joint Commissioner (Training)

Editor : Dr. Ritu Pallavi, Assistant Commissioner (Training)

Co-ordinator : Ms. Ratna Pathak, AEO (Training)

Editorial Team
: Dr. Sayyada Aiman Hashmi (PGT Eng., PM SHRI KV Andrews Ganj, New Delhi)
: Ms. Jhanjha Chakravarty (PGT Eng., PM SHRI KV No. 3 Delhi Cantt. Shift 2)
: Sh. Basant Kumar (PGT Hindi, PM SHRI KV No. 3 Delhi Cantt. Shift 2)

DESIGNED BY:
Publication Section

Published by Joint Commissioner (Trg) on behalf of Kendriya Vidyalaya Sangathan.

Readers can send their comments and suggestions through e-mail at:
actrgkvshq@gmail.com

विषय-सूची / Index

क्र० सं० S.No.	प्रकरण/Title	लेखक/Author	पृ. सं. Page No.
	विद्यालय शिक्षा के विभिन्न चरणों में नवीन शैक्षणिक अभ्यास Innovative Pedagogical Practices across Different Stages of School Education		
1.	Making Mathematics Meaningful: The Concrete-Pictorial-Abstract Approach	Dibakara Bhoi	10
2.	बच्चों के लिए अभिनव फिटनेस गतिविधियाँ: एक वैज्ञानिक और खेल-केंद्रित दृष्टिकोण	उत्कर्ष	12
3.	Tarsia-Based English Learning in Sync with NEP and NCF Frameworks	Dr Sayyada Aiman Hashmi	14
4.	Katha Chitra: Weaving Social Change Through the Lens of Short Films	Tarun Kumar Dash	16
5.	'विज्ञान पहेली': विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास	डॉ. सुनीता गुप्ता	19
6.	किताब से नहीं, अनुभव से सीखें	विजय कुमार	21
7.	Sketching Minds, Not Just Notes: A Journey into Innovative Pedagogy through Sketch-noting	M Reshmi Irani	23
8.	The Saga of DNA: Where Art Meets Molecular Biology	Chetna Khambete	25
	शिक्षण-अधिगम और मूल्यांकन में तकनीकी एकीकरण Technology Integration in Teaching-Learning and Assessments		
9.	शिक्षण-अधिगम और मूल्यांकन में प्रौद्योगिकी एकीकरण	जगदीश कुमार गुप्ता	27
10.	Technology Integration in Teaching-Learning and Assessments	Himanshu	29
	कर्मचारियों के व्यावसायिक विकास में क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का प्रभाव Impact of Capacity Building Programmes in the Professional Development of Staff		
11.	Growing Together: Personal and Professional Growth in KVS	Asha Naithani	32
12.	केन्द्रीय विद्यालय में शिक्षक का निजी और व्यावसायिक विकास	जतिंद्र कौर	34
13.	KVS- a platform for growth: My journey from Mentee to Mentor- a Testimony	J.S.Bhatia	36
14.	A Life Shaped by KVs: My Journey of Personal and Professional Growth	Solomon Raj	38

विषय-सूची / Index

	दक्षता-आधारित शिक्षण और मूल्यांकन Competency-based Learning and Assessment		
15.	ज्ञान की बगिया: "ज्ञान की बगिया में खिले हर बच्चा"	पायल गुप्ता	40
16.	Nurturing Competencies: A Classroom Story from Karimnagar	E Vandana	42
17.	सशक्त शिक्षक, सशक्त के. वि. सं. : क्षमता निर्माण की झलकियाँ	-	44
18.	Nurturing Competence from the Start: A Primary Teacher's Perspective	P. Lokarchana	48
	सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा और मूल्य-आधारित शिक्षा Socio-emotional Learning and Value-based Education		
19.	सामाजिक-भावनात्मक अधिगम एवं मूल्य-आधारित शिक्षा	कृष्ण कुमार दुबे	51
20.	Socio-Emotional Learning and Value-Based Education	Hina Kausar	53
21.	मूल्य और भावनाएँ: आधुनिक शिक्षा की अनिवार्य नींव	रश्मि रानी	55
	स्कूलों में नेतृत्व और स्कूल संस्कृति में बदलाव Leadership in Schools and Transforming School Culture		
22.	स्वच्छ भारत:स्वच्छ विद्यालय अभियान के अंतर्गत एक नवाचारी पहल -'स्वभा'	मनीष कुमार शर्मा	57
23.	Seeds of Change: How Student Leadership Nurtures a Compassionate School Culture	Ramita Ganguly	59
24.	परिवार-विद्यालय-समुदाय: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की त्रिवेणी	कृष्ण कुमार श्रीवास्तव	61
	कार्य-जीवन संतुलन: एक शिक्षक का दृष्टिकोण Work-life Balance: A Teacher's Perspective		
25.	Balancing Chalk and Life: A Teacher's Journey Towards Harmony	Dr. T. A. V. Sharma	64
26.	Balancing Creativity and Curriculum in the Classroom	Ishita Verma	66
27.	समझ, संवेदना और सशक्तिकरण	कृति	68
	केंद्रीय विद्यालय में बहुभाषावाद/ भाषा शिक्षण Multilingualism/ Language Teaching in Kendriya Vidyalayas		
28.	हिंदी हैं हम	किरन सैनी	70
29.	बहुभाषावाद: सुर एक, स्वर अनेक	डॉ. मनप्रीत कौर	72
30.	केंद्रीय विद्यालय में हिंदी अध्यापन: चुनौतियाँ एवं समाधान	डॉ. कुलदीप कुमार पुष्पाकर	74

Message

Teachers play a pivotal role in touching countless lives with their knowledge, wisdom, love, and compassion. They leave an indelible impression on the tender minds they nurture. Over the years, in the quiet rhythm of their classrooms, they have gathered moments that remain etched in memory—moments of discovery, of reflection, of transformation. In adapting to new pedagogies and changing paradigms of education, they have not only shaped young minds but have also evolved as learners themselves.

Education, as we know, is a living process—ever-changing, ever-evolving. Within this dynamic world, teachers stand at the heart of a vibrant Ferris wheel of learning, joy, laughter, and growth. Each day brings its own lessons, its own challenges, and its own share of triumphs. There is a quiet satisfaction of seeing a spark of understanding in a student's eyes—life at its most meaningful within the walls of a school.

At KVS Headquarters, we felt it was time to give voice to these experiences—the unseen stories that unfold in classrooms every day. We invited our teachers to share their journeys, innovations, and insights through articles on diverse themes. The enthusiastic response we received has been heartening.

As a national system with a diverse footprint, KVS carries the responsibility of demonstrating what thoughtful, future-leaning education can look like.

This fifth volume on purposive pedagogical practices arrives at a moment when education is quietly but decisively reshaping itself. As we turn these pages, let us celebrate not just the achievements they record, but the spirit they embody—the spirit of continuous growth, empathy, and learning together in the evolving education scenario.

Vikas Gupta, *IAS*
Commissioner, KVS

आमुख

यह विशेषांक समकालीन शिक्षा की आत्मा को प्रतिबिंबित करता है, जहाँ शिक्षा मात्र पाठ्यवस्तु तक सीमित न रहकर संवेदनशीलता, विवेक और मानवीय मूल्यों के संवर्धन की सजीव प्रक्रिया बन चुकी है। यह हमारे लिए गौरव और प्रसन्नता का विषय है कि देश के कोने-कोने से शिक्षकों ने अपने अनुभवों, प्रयोगों और विचारों को इसमें संजोया है। इन लेखों में कक्षा के भीतर और बाहर होने वाले परिवर्तन स्पंदित हैं , जो कभी तकनीक सीखने को नई दिशा देते हैं, तो कहीं रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देते हैं। दक्षता निर्माण पर प्रस्तुत विचार यह रेखांकित करते हैं कि शिक्षक होने का अर्थ स्वयं निरंतर सीखते रहना है। शिक्षक किसी प्रशिक्षण कक्ष तक सीमित नहीं, बल्कि उसकी जिज्ञासा आत्मानुशासन में निहित होती है। इसी तरह कार्य-जीवन संतुलन पर लिखे गए लेख बताते हैं कि एक संतुलित मन ही विद्यार्थियों के भीतर संतुलित दृष्टि उत्पन्न कर सकता है—ठीक उसी तरह जैसे शांत जल में ही आकाश का सच्चा प्रतिबिंब उतरता है। यह संकलन केवल विचारों का संग्रह नहीं; यह हमारे समय की शैक्षिक यात्रा का सुखद अनुभव है। इसमें लिखे गए शब्द भविष्य की दिशाएँ भी सुझाते हैं और वर्तमान की धड़कनों को भी समझाते हैं।

यह संकलन हमारे शैक्षिक परिदृश्य का एक ऐसा दर्पण है, जिसमें बदलते समय की आकांक्षाएँ, संघर्ष और संभावनाएँ समान रूप से प्रतिबिंबित होती हैं। इसी आशा के साथ मैं सभी लेखकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ। उनका यह सृजन शिक्षण-जगत में विचारशीलता, संवेदना और नवाचार की नई लहर उत्पन्न करेगा।

चंदना मंडल, *अपर आयुक्त (शै.)*
केंद्रीय विद्यालय संगठन

संपादकीय

केंद्रीय विद्यालय संगठन ने अपनी समृद्ध संस्कृति और अद्वितीय विविधता के माध्यम से शिक्षा जगत में एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है। यह केवल विद्यालयों का एक समूह नहीं, बल्कि एक सशक्त शैक्षिक आंदोलन है—जो भाषा, भूगोल और सीमाओं से परे जाकर अपने मानकों और मूल्यों से स्वयं को निरंतर सिद्ध करता आया है।

यह विद्यालयी व्यवस्था एक ओर भारत की गौरवशाली विरासत, आदर्शों और सांस्कृतिक मूल्यों से गहराई से जुड़ी है, वहीं दूसरी ओर यह नवीन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF-2023) के सिद्धांतों, उद्देश्यों और नए शैक्षिक आयामों को साकार करने में अग्रणी भूमिका निभा रही है।

अनुभव आधारित शिक्षण, पठन-पाठन में तकनीक का समावेश, समावेशी शिक्षा, आधारभूत साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN), और STEAM आधारित शिक्षण—ये सभी तत्व आज के केंद्रीय विद्यालयों के शैक्षिक ताने-बाने में सुंदर रूप से गुंथे हुए हैं। इन सभी मानकों की स्थापना का श्रेय हमारे सृजनशील विद्यार्थियों और उनके मार्गदर्शक शिक्षकों को जाता है, जो निरंतर शिक्षण को शोध, प्रयोग और नवाचार के आधार पर विकसित करते हैं।

केंद्रीय विद्यालयों का यह शैक्षिक तंत्र (ecosystem) केवल संरचना नहीं—एक परंपरा है, एक प्रेरणा है और एक सतत् युगीन यात्रा है। यह यात्रा निरंतर बदलते परिदृश्यों को स्वीकारते हुए, अनुभवों से सीखते हुए, और समाज एवं हितधारकों से संवाद स्थापित करते हुए आगे बढ़ रही है। हमारी यह जिम्मेदारी है कि इस विरासत को न केवल संजोएँ, बल्कि इसे आने वाली पीढ़ियों तक अर्थपूर्ण और जीवंत रूप में पहुंचाएँ।

इस पत्रिका के माध्यम से हमारे शिक्षक और नेतृत्वकर्ता अपने अनुभवों, दृष्टिकोणों और कार्यों को आप तक पहुँचा रहे हैं। आपसे निवेदन है कि इन अनुभवों का हिस्सा बनें, इन्हें समझें, आत्मसात करें, और इनके प्रयासों को सार्थकता प्रदान करें।

PPP का यह अंक अपने पाठकों से रचनात्मक सहभागिता और सहृदय सहयोग की अपेक्षा करता है।

धन्यवाद।

— ऋतु पल्लवी

सहायक आयुक्त (प्रशि०)

विद्यालय शिक्षा के विभिन्न चरणों में नवीन शैक्षणिक अभ्यास
(Innovative Pedagogical Practices across different stages of school education)

विद्यालय शिक्षा के विभिन्न चरणों में नवीन शैक्षणिक अभ्यास न केवल सीखने को रोचक और सार्थक बनाते हैं, बल्कि छात्रों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार भी करते हैं। ये अभ्यास NEP 2020 की भावना के अनुरूप 21वीं सदी के कौशलों- रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, संचार, सहयोग और तकनीकी दक्षता का विकास करते हैं।

1

Making Mathematics Meaningful: The Concrete-Pictorial-Abstract Approach

"Tell me and I forget. Teach me and I remember. Involve me and I learn."

During an interaction with a few students from one of the schools, an inspector asked a boy in Class X a straightforward question on probability: "If a coin is tossed, what is the probability of getting a head?" The inspector was shocked to learn that the student had not understood the meaning of the terms "possible outcomes" and "favourable outcomes," and how probability is linked to these two concepts. Thus, the child had not understood the simple idea that if we toss a coin, there are two possibilities: a head or a tail, and the favourable outcome in this case is a head.

When the inspector inquired further about the student, he was further shocked to learn that the student is an excellent chess player who has earned accolades at various levels of the game. How can a student who has mastered the skills of the complex moves in the most mindful game fail in solving a simple question of mathematics?

My experience with the maths teachers as a student was not very good, but I somehow passed Class X with exactly 30% marks (in Odisha, 30% was the requirement to pass). I dreaded the maths teachers the most. I was awestruck at their exceptional ability in drawing figures and making calculations that were all Latin and Greek to me. Ask a few people at random and you will find that a large number of them have had similar experiences. As I grew up, I learned concepts and mastered basic math during my undergraduate and graduate studies. I had crammed the formulae, such as the area of a right-angle triangle being ½ bh, and that the area is to be expressed in square units, only to forget or exchange one for another erroneously. However, I had not had the opportunity to understand why and how the formula works. In graduation, as I observed the shapes, I could link them together. For instance, a right-angle triangle is half of a rectangle formed by the sides adjacent to the right angle. I also understood that square numbers help calculate area, and cubes help calculate volume. I knew that when similar 2-D figures are stacked, we get 3-D figures: rectangular 2-D figures of the same size stacked are cuboids, and circles of the same size stacked upon one another are cylinders. This helped me calculate volume by multiplying it by the height. Mathematics was so easy! I had failed to visualise the figures

and apply them in real-life situations at Foundational, Preparatory, and Middle Stages of my life.

Once, I saw a toddler writing the numbers up to a hundred. I turned the back pages of the innocent child's notebook, and I was very sad to see that he had written numbers up to ten about 20 times, then up to fifty about 20 times and then up to a hundred about 20 times. The mechanical process of writing numbers without focusing on their real-life application was agonising. Similar exercises dominate classroom transactions in several cases. Perimeter, area, volume, etc., are taught mechanically at the Foundational Stage and the Preparatory Stage: students are given formulae before they can study the concepts through concrete objects. Nowhere in the NCERT textbooks of Classes III-V do we find the formulae for finding the area, volume and perimeter. But, how is it that most students write the formulae in their notebooks? When asked, the concerned teachers also confidently state that they are teaching the students all concepts in an advanced manner. However, such teaching jeopardises 'concretisation/ mathematisation', which is essential in Foundational Numeracy. Learners gradually dread, hate, and avoid the subject, which is actually a fascinating subject that pervades all subjects.

Mathophobia prevails among students at all stages of school education. NCF 2005 states, "A majority of children have a sense of fear and failure regarding Mathematics. Hence, they give up early on and drop out of serious mathematical learning." According to the Annual State of Education (ASER) Report 2024, only 33.7% of the surveyed students could solve a numerical subtraction problem involving two-digit numbers without borrowing. Although this marks an improvement over the years (28.2% in 2018 and 25.9% in 2022), every parent, teacher, and administrator should understand that we are far behind in the universalisation of learning outcomes for Foundational Numeracy. The situation in Class VIII has not changed much over the years, and only about 45% students are proficient in basic mathematics. Policy makers have assessed the situations and framed policy documents to tackle the problem. NCF 2005, for instance, states, "The teaching of mathematics should enhance the child's resources to think and reason, to visualise and handle abstractions, to formulate and solve problems. This broad spectrum of aims can be covered by teaching relevant and important mathematics embedded in the child's experience." Furthermore, NEP-2020 has emphasised Foundational Literacy and Numeracy as a prerequisite for higher learning, and has thus made NIPUN Bharat a mission for the country's school education system.

Rightly did Benjamin Franklin once say, "Tell me and I forget. Teach me and I remember. Involve me and I learn." All maths educators must make genuine efforts to translate this quote into a reality in the classroom. All teaching of mathematics, especially at the Foundational stage, should involve learners by linking every maths problem to real life through mathematisation, visualisation and concept-based teaching using real-life objects and situations. A set of readily available eco-friendly objects, such as 100 tamarind seeds collected from a phuchka seller, can be used to teach counting, addition, subtraction, multiplication, and division at the Foundational Stage. However, to make it more engaging, a teacher may collect multiple kinds of objects and gradually present concept-based problems in the form of age-appropriate stories, as in 'The Lilavati' by Bhaskara II. Our learners must master one concept before moving to the next. For this to happen, the Singaporean Maths (Concrete-Pictorial-Abstract) Method, which revolutionised maths learning in the small country, should be applied. It is interesting to note that before the 1980s, Singapore didn't have its own textbooks; it relied on textbooks from the West. Now Singapore's achievement, Foundational Numeracy, becomes a beacon for the whole world, and the West adopts the method devised by Singapore. Our NCERT textbooks, covering up to Class VIII, encompass approximately 10 concepts per grade, accompanied by multiple pictures and engaging activities. Actually, all these activities are very thoughtfully designed to ensure Foundational Numeracy. All mathematics teachers should carefully study these books and actively conduct all activities so that learners in a particular grade master the targeted basic concepts before moving on to the next grade. Once mechanical exercises are replaced by competency-based questions centred on real-life situations, Maths will be easy, much like games. It will not only make learning maths joyful but also contribute substantially to making India a knowledge superpower.

Scan this QR Code for the audio story.

Dibakara Bhoi
Assistant Commissioner
KVS Regional Office Kolkata

2

बच्चों के लिए अभिनव फिटनेस गतिविधियाँ: एक वैज्ञानिक और खेल-केंद्रित दृष्टिकोण

जब मैंने शारीरिक शिक्षा शिक्षक के रूप में संगठन में अपनी यात्रा शुरू की, तो मैंने एक बात स्पष्ट रूप से देखी—बच्चों में ऊर्जा की कमी नहीं है। वे दौड़ते हैं, कूदते हैं, खेलते हैं, परन्तु अक्सर यह असंगठित होता है। वे गतिविधियों का आनंद तो लेते हैं, लेकिन यह नहीं समझ पाते कि यह क्यों ज़रूरी है या इसे सही तरीके से कैसे किया जाए। तभी मुझे लगा कि हमें विद्यालयों में फिटनेस को सिखाने का तरीका बदलना होगा।

मैंने तय किया कि फिटनेस को केवल कसरत या व्यायाम तक सीमित नहीं रखूँगा, बल्कि इसे रोचक, वैज्ञानिक और खेल-केंद्रित बनाऊँगा।

1. विज्ञान और गतिविधि का मेल - "बायो मूवमेंट सर्किट्स"

मैंने कक्षा में छोटे-छोटे स्टेशन बनाए, जहाँ बच्चे अलग-अलग व्यायाम करते—जैसे हाई नीज़ जंप, स्क्वैट्स, प्लैंक आदि। लेकिन इनके साथ मैं उन्हें यह भी समझाता कि इस व्यायाम में कौन-सी मांसपेशियाँ काम कर रही हैं, साँस लेना क्यों ज़रूरी है, या हृदय और फेफड़े किस तरह ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाते हैं।

बच्चों को यह बहुत अच्छा लगता। जब मैं जंप स्क्वैटस् कराते हुए "क्वाड्रिसेप्स और ग्लूट्स" का ज़िक्र करता, तो बच्चे उत्सुक होकर प्रश्न पूछते। कई बार वे इसे अपनी विज्ञान की कक्षा से जोड़कर बातें करते। यह देखकर मुझे सच में संतोष होता कि शारीरिक शिक्षा अब विज्ञान सीखने का भी एक माध्यम बन गई है।

2. खेल से जुड़ा फिटनेस - "क्रिकेट कंडीशनिंग"

मैं खुद क्रिकेट खेल चुका हूँ, इसलिए मैंने सोचा क्यों न अभ्यास को खेल से जोड़ें। मैंने बच्चों से दौड़ के अभ्यास को रनिंग बिटवीन विकेट्स जैसा कराया, अलग-अलग कोण से कैच पकड़ने की प्रैक्टिस कराई, और कंधों की मजबूती के लिए विशेष व्यायाम दिए।

बच्चों को यह बहुत मज़ेदार लगा, क्योंकि उन्हें लगा कि वे खेल ही रहे हैं। पर मुझे पता था कि इसी खेल-खेल में उनकी फुर्ती, संतुलन और समन्वय क्षमता विकसित हो रही है।

3. चोट से बचाव और शरीर की समझ

कई बच्चों को वार्म-अप, स्ट्रेचिंग या कूल डाउन की महत्ता नहीं पता होती थी। मैंने इसे अपनी आदत बना लिया कि हर गतिविधि से पहले और बाद में इन पर ज़रूर ध्यान दूँ। मैं उन्हें सरल भाषा में "हैमस्ट्रिंग स्ट्रेन " या "मसल फटीग" जैसे शब्द समझाता। यहाँ तक कि प्राथमिक स्तर के बच्चे भी समझने लगे कि पानी न पीने से ऐंठन क्यों होती है।

4. पोषण पर छोटी-छोटी चर्चाएँ

ड्रिल्स के बीच या पानी पीते समय मैं उनसे बात करता—प्रोटीन क्यों ज़रूरी है, कार्बोहाइड्रेट कैसे ऊर्जा देते हैं, और अच्छा रिकवरी स्नैकस कैसा होना चाहिए। जब मैंने बताया कि केले या पोहा, चिप्स या मिठाई से बेहतर प्री-वर्कआउट भोजन हैं, तो बच्चे इसे घर पर माता-पिता तक पहुँचाने लगे।

5. प्रगति का वैज्ञानिक आकलन

मैंने उन्हें रिएक्शन टाइम के लिए रूलर ड्रॉप टेस्ट, लचीलापन मापने के लिए "सिट एंड रीच" टेस्ट और व्यायाम से पहले व बाद की हृदयगति नापना सिखाया। बच्चों को ये छोटे-छोटे टेस्ट बहुत रोचक लगे, क्योंकि वे अपनी प्रगति को खुद देख पाते थे।

धीरे-धीरे बदलाव दिखने लगा। बच्चे अब शारीरिक शिक्षा की कक्षा का इंतज़ार करते। वे प्रश्न पूछते, अपनी विज्ञान कक्षा की बातें जोड़ते और फिटनेस को गंभीरता से लेने लगे। कुछ बच्चे स्कूल टीम के लिए अधिक मेहनत करने लगे, तो कुछ अपने शरीर और स्वास्थ्य को लेकर अधिक आत्मविश्वासी हो गए।

मैंने अनुभव किया कि फिटनेस को पूरी तरह बदलने की ज़रूरत नहीं है, बस उसे नए ढंग से प्रस्तुत करने की ज़रूरत है। जब हम व्यायाम को विज्ञान और खेल से जोड़ते हैं, तो बच्चे केवल शारीरिक नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी विकसित होते हैं।

एक शिक्षक के रूप में मैं मानता हूँ—शारीरिक शिक्षा अब केवल "शारीरिक" नहीं रह गई है। यह शिक्षा—ज्ञान, कौशल और प्रेरणा देने का माध्यम है ताकि बच्चे जीवनभर सक्रिय, स्वस्थ और सार्थक जीवन जी सकें। हम अब केवल "शारीरिक प्रशिक्षण प्रशिक्षक " नहीं रहे, बल्कि "शारीरिक शिक्षा शिक्षक " हैं—जहाँ हमारा काम केवल निर्देश देना नहीं, बल्कि सिखाना है।

Scan this QR Code for the audio story.

उत्कर्ष
टीजीटी (शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा)
पीएम श्री के.वि. नलगोंडा

3

Tarsia-Based English Learning in Sync with NEP and NCF Frameworks

Forget rote learning.
With Tarsia puzzles, students didn't just learn English—they pieced it together, argued over it, and celebrated every "aha" moment.

Can a puzzle designed for Mathematics find home in the English classroom? At first glance, the idea sounds absurd. Logic grids and geometric triangles hardly seem like companions for Shakespeare's sonnets, grammar drills, or poetic imagery. Yet in a senior secondary classroom at PM SHRI Kendriya Vidyalaya, Andrews Ganj, the impossible happened. The humble Tarsia puzzle leapt from numbers to narratives, from equations to enjambment—and in the process, rewrote the rules of English teaching.

From Dry Notes to Dynamic Play

English teachers know the challenge all too well. Themes in literature can feel abstract, grammar rules slip through memory like sand, and vocabulary lists often weigh students down with boredom. Too often, learners listen passively, scribble notes, and then promptly forget.

But the vision of NEP 2020 and NCF 2023 points in another direction—towards classrooms that are joyful, experiential, and interdisciplinary. The question was: how do we make that leap?

The answer came in the most unexpected form: Tarsia. Traditionally used to sharpen mathematical problem-solving, these interlocking puzzles suddenly offered a new way to approach English. What if, a teacher wondered, the very act of piecing triangles together could bring language alive? And so, lessons were no longer lectures but challenges to solve, games to play, and stories to assemble piece by piece.

Building Knowledge, One Triangle at a Time

The idea was deceptively simple. Puzzles were created to cover a wide spectrum of English Core learning, including grammar, vocabulary, poetic devices, and literary themes. One triangle might ask, *"You must wear a helmet,"* while its matching edge reads, *"Obligation."* When the two fit, grammar clicked—not as a lifeless rule but as a living connection.

Another puzzle tackled literature. Students pieced together themes from *The Last Lesson*, linking quotes to nationalism, linguistic identity, and nostalgia. Vocabulary puzzles turned synonyms and antonyms into matches to be discovered, not lists to be memorised.

The classroom buzzed with energy. Students huddled in groups, negotiating which piece fitted where, arguing over the meaning of a metaphor, or justifying a grammar choice. Even the quietest voices found confidence amid the noise of collaboration. What once felt like "work" now felt like play.

The Joy of Discovery

And the results? They spoke louder than any lecture. Pre- and post-tests showed striking improvements: poetic devices jumped from 62% to 85%, grammar modals from 60% to 87%, and vocabulary from 64% to 90%. The most significant leap came in grammar—often the bane of students—which saw a 45% relative improvement.

But beyond the numbers, it was the students' voices that mattered most:

"We didn't feel like we were studying. It was like solving a game."
"I actually remember grammar rules now because we matched and discussed them."

These reflections carried the sweetest reward of all—proof that learning sticks when it is experienced, not imposed.

Where Art Meets Logic
Perhaps the most delightful aspect of the experiment was its interdisciplinary flavour. Tarsia wasn't just about words. It was about shapes, patterns, and the art of fitting pieces together. Literature merged with design, language fused with logic, and suddenly English became something tactile, visual, and creative.

This art-integrated approach puts students at the very centre of their learning journey. They weren't simply absorbing knowledge—they were constructing it, touching it, arranging it, and debating it until the bigger picture revealed itself.

Challenges and Possibilities
Like all innovations, this one wasn't without hurdles. Designing meaningful puzzles required teacher time and creativity, and some learners needed a moment to grasp the mechanics. Yet these obstacles were minor compared to the gains. With shared resources and collaboration, such puzzles could easily become part of every teacher's toolkit.

And the idea doesn't stop at English. Imagine Chemistry formulas fitted together, History timelines pieced into place, or regional proverbs connected across cultures. A single low-cost tool holds the potential to revolutionise classrooms across India.

A Playful Future for Learning
The best part is that this idea is not limited to my classroom or my subject. Imagine a history class piecing together the causes and effects of a war, or a science class assembling the parts of a cell. This is a low-cost, high-impact tool that can bring experiential learning to life anywhere.

Most of all, the puzzle revealed something profound: our students are not empty vessels waiting to be filled with information. They are natural problem-solvers, collaborators, and creators—simply waiting for challenges that feel real. The triangle, a shape often associated with logic and certainty, ended up teaching us the most important lesson of all: when you give learners the pieces, they don't just build the right answers. They build confidence, curiosity, and a lifelong love for learning.

At its heart, this experiment with Tarsia puzzles did more than improve test scores. It reminded both teachers and students that learning doesn't have to feel like trudging through a textbook. It can be a puzzle—something to touch, explore, argue over, and finally, joyfully solve.

In a world where education seeks to build creativity, communication, collaboration, and critical thinking, the pieces fell neatly into place. What emerged was not just better grammar or sharper literary analysis but a new classroom culture—curious, confident, and collaborative.

Sometimes the most powerful revolutions don't come from high-tech gadgets or expensive reforms. Sometimes, they arrive in the simplest of forms—like a puzzle waiting to be solved.

Scan this QR Code for the audio story.

Dr Sayyada Aiman Hashmi
PGT English
PM SHRI KV Andrews Ganj, New Delhi

4

Katha Chitra: Weaving Social Change Through the Lens of Short Films

In a world overwhelmed by noise, fleeting distractions, and passive media consumption, "Katha Chitra" emerges as a powerful counter-narrative. This creative initiative harnesses the art of storytelling through short films to inspire, educate, and bring about meaningful change in society. Rooted in the belief that stories are the most potent vehicles for transformation, Katha Chitra is not merely a film project; it is a movement, a collaborative platform, and a learning experience that unites students, alumni, parents, and other stakeholders to reflect the realities of our society and spark dialogue on vital issues.

The Genesis of Katha Chitra

The idea of Katha Chitra was born out of a vision which recognised the immense potential of visual media in shaping young minds and societal attitudes. Dramatisation plays a vital role in imparting education in a joyful environment. It also helps in shaping young minds to be the voice of societal taboos. Cinema or film is quite enjoyable and easily accessible in this digital world compared to dramas or role-playing games. A drama or skit is the initial stage of Katha Chitra. With access to affordable technology, the growing popularity of digital platforms, and the creative energy of students and alumni, the groundwork was ripe for a project that combined art, education, and activism.

"Katha" means story, and "Chitra" means picture or visual—together they symbolise a narrative told through visuals. Each film produced under this banner is a short yet powerful tale, aimed not only at entertainment but more importantly, at provoking thought, encouraging empathy, and prompting action.

The Core Philosophy

At the heart of Katha Chitra lies a belief in the power of community-based storytelling. Unlike commercial cinema, which often targets mass appeal, Katha Chitra focuses on themes that resonate deeply with local communities and touches on issues that are often overlooked. These include gender equality, environmental conservation, mental health, education, child rights, communal harmony, etc.

The initiative aims to empower voices within the community—especially those of the youth—to speak out on these issues. It also emphasises the importance of participation from all quarters: students bring energy and imagination, alumni offer expertise and mentorship, parents provide support and perspective, and teachers ensure the content remains value-driven and pedagogically sound.

Structure and Participation

The structure of Katha Chitra is both collaborative and inclusive. The process begins with identifying relevant social themes. These themes are often people-sourced through brainstorming sessions involving students, faculty, alumni, and parents. Once a theme is chosen, the process unfolds in several stages:

1. **Story Development**: Original scripts rooted in

real-life experiences or imaginative narratives with strong social messages are written.

2. **Pre-production Planning**: Roles are assigned to students, teachers, alumni, parents for cast and crew, such as scriptwriting, directing, camera operating, acting, editing, costume designing, and make-up.
3. **Production**: The short films are shot on school premises, in nearby places, or in homes, depending on the storyline. Parents often help by providing locations, logistics, or props. School administration often provides support by arranging essential items.
4. **Post-production**: Editing, sound design, and subtitles are handled by students or alumni with relevant skills. Teachers and parents review the films to ensure they are age-appropriate and impactful.
5. **Screenings and Dissemination**: The completed films are screened during school events, parent-teacher meetings, community gatherings, and are uploaded on YouTube or shared via social media to reach wider audiences.
6. This democratized process helps every participant feel a sense of ownership and pride in the finished product. More importantly, it teaches real-life skills like teamwork, communication, critical thinking, and digital literacy.

> *"Feeling truly privileged and blessed to be a part of the experimental project 'Katha Chitra' as the cinematographer and editor. It offered me a scope for an incredible learning experience, and I'm grateful for the opportunity. Huge appreciation to the entire team-our hard work and dedication helped in materialising our vision. As an alumnus of the school, it felt amazing to come back and be a part of something so special."*
>
> ***- Ayush Dash***
> ***Alumnus of KV Koraput***

The Impact on Students

One of the most visible and immediate impacts of Katha Chitra has been on the students. As active participants in the storytelling and filmmaking process, they are no longer passive learners but creators. They learn to articulate their thoughts, defend their viewpoints, collaborate with diverse individuals, and explore technical and artistic domains that go far.

Moreover, by engaging with social themes through research, interviews, and dramatisation, students develop a deep, empathetic understanding of the issues their films tackle. Whether it's portraying the struggles of a child with a learning disability or highlighting the importance of road safety, students develop a personal connection with the stories, which enhances their moral and emotional development. Many students who were once shy or disengaged have found a voice through the project. They speak with passion and clarity about the issues they care about.

Strengthening Community Bonds

Katha Chitra is as much about community engagement as it is about filmmaking. The participation of parents and alumni brings a multi-generational dimension to the project. Alumni return not just to guide the next generation but also to reconnect with the values that shaped their own journeys. Parents who might otherwise remain on the periphery of school life become collaborators and supporters.

These bonds are further strengthened during film screenings and discussions, where diverse members of the community come together to view and discuss the films. These conversations often extend beyond the screen, sparking initiatives such as clean-up drives, mental health awareness workshops, or inclusive education programmes.

A Platform for Underrepresented Voices

One of the most commendable aspects of Katha Chitra is its commitment to inclusion. The project actively seeks to involve students from all backgrounds, encouraging participation from those who may not usually find the spotlight—children from economically weaker sections, students with special needs, or those who struggle academically.

In this safe and creative space, every child is valued

not for their grades, but for their voice, their ideas, and their contribution to the collective storytelling effort. The films themselves often explore marginalised experiences and give visibility to perspectives that are rarely represented in mainstream media.

Filmmaking and Recognition

The issues related to school, students and society have been focused on and addressed through short films with powerful storytelling. The unmatched skill in acting, editing, direction, and storytelling has brought glory to the students, school, teachers, parents, and alumni.

Details of short films and recognition

Sl No	Short films with themes	Recognition
1	**Sadak** A short film on road safety	Two students received the best actor award, and the other participants(students) were felicitated in the National Road Safety Short Film Festival organised by the State Transport Authority, Odisha.
2	**Parivartan** A short film on HIV/AIDS awareness	Received recognition from the District AIDS Protection and Control Unit, Koraput, Odisha
3	**Master Ji** A short film on road safety	Participated in the National Road Safety Short Film Festival organised by the State Transport Authority, Chhattisgarh and got an appreciation certificate.
4	**Dada Ji Ka Thaila** A short film on single-use plastic and its adverse effects	Participated in AICEeCC 2023-24, organised by CIET, NCERT, New Delhi and adjudged as the best e-Content.
5	**Pahiya Kursi** A short film on Inclusive Education	Participated in AICEeCC 2024-25, organised by CIET, NCERT, New Delhi and won two prestigious awards – Best actor (Two students) and Best Film (e-content)

Looking Ahead: The Future of Katha Chitra

With every short film, *Katha Chitra* is building a digital archive of stories that not only captures the present societal landscape but also reflects the evolving consciousness of the younger generation. The project has immense potential to grow in several meaningful directions—organising an annual *Katha Chitra Film Festival* where students from other schools can participate and showcase their work, collaborating with NGOs, media houses, and educational platforms to scale impact and ensure wider reach, offering regular training workshops in storytelling, camera work, editing, and acting for both students and parents, and even integrating the initiative into the academic framework as part of project-based learning, civic education, and media literacy.

Conclusion

Katha Chitra is a shining example of how schools can move beyond traditional academic instruction to foster creativity, empathy, and civic responsibility. In a time when society often feels fragmented and disengaged, this initiative reminds us of the unifying and transformative power of stories—especially when those stories are told by children, for children, and about the world they wish to live in.

By placing the camera in the hands of the young and inviting the community to participate in the storytelling process, Katha Chitra is not just creating short films; it is making a lasting impact. It is planting the seeds of change, one frame at a time.

Scan this QR Code for the audio story.

Tarun Kumar Dash
PRT
PM SHRI KV Koraput
(National Awardee Teacher 2025)

5

'विज्ञान पहेली': विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

'विज्ञान पहेली' के माध्यम से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, नवाचारी पद्धति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसका लक्ष्य खोजपरक कौशल को विकसित करना है।

हमारे विद्यालय में बच्चों को विज्ञान पहेलियाँ वितरित की जाती हैं। जब विद्यार्थी इन पहेलियों को पढ़ते हैं, तो वे स्वयं उनके उत्तर खोजने का प्रयास करते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें किसी विचार या अवधारणा के बारे में अपना स्वयं का दृष्टिकोण बनाने के लिए प्रेरित करती है। पहेलियों को हल करने के दौरान विद्यार्थी वैज्ञानिकों और उनके योगदान से भी परिचित होते हैं।

विज्ञान का उद्देश्य समस्याओं की पहचान करना, उनके समाधान खोजना और समाज के कल्याण एवं प्रगति हेतु आदर्श प्रस्तुत करना है। विज्ञान की यही भावना और मूल्य मानव जाति को विभिन्न क्षेत्रों में विकास के पथ पर अग्रसर करती है। अतः युवाओं को विज्ञान शिक्षा की ओर आकर्षित करना आवश्यक है। पाठ्यक्रम भी इस प्रकार तैयार किए जा रहे हैं कि प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी व्यक्तिगत क्षमता और देश की आवश्यकताओं के अनुरूप सीखने और बढ़ने का अवसर मिल सके।

अनुसंधान यह दर्शाते हैं कि पारंपरिक व्याख्यान पद्धति की तुलना में गतिविधि-आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों में गहरी समझ और दीर्घकालिक स्मृति का विकास होता है। Dereskiwsky (2007) ने पाया कि विद्यार्थियों की स्मृति क्षमता कम होने का एक प्रमुख कारण शिक्षकों द्वारा अपनाई गई पारंपरिक और कम प्रभावी शिक्षण पद्धतियाँ हैं। इसलिए छात्रों की स्मृति और समझ को बेहतर बनाने के लिए नवाचारी शिक्षण दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

विगत शोधों (Udu, 2018a; Wilson & Varma-Nelson, 2016) में सहकारी अधिगम, कॉन्सेप्ट मैपिंग और अन्य गतिविधि-आधारित रणनीतियों के लाभ बताए गए हैं। इन पद्धतियों ने विद्यार्थियों में सक्रिय सहभागिता, प्रयोगशीलता और गहरी समझ को बढ़ावा दिया है। इसी के अंतर्गत हमारे विद्यालय में विज्ञान पहेली की प्रभावशीलता को महत्त्व दिया गया, जिससे विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो सके।

बच्चों की अपनी भाषा में विज्ञान शिक्षण का महत्व

बच्चों की अपनी भाषाओं में विज्ञान शिक्षा विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान कौशल और वैज्ञानिक पद्धति के प्रति गहरी समझ विकसित करती है। यह गतिविधि-आधारित और व्यावहारिक दृष्टिकोण न केवल आधुनिक शिक्षण रुझानों के अनुरूप है, बल्कि भविष्य के वैज्ञानिकों और नवोन्मेषकों को तैयार करने में भी सहायक है।

अनुसंधान बताते हैं कि अपनी भाषा और आलोचनात्मक सोच पर आधारित विज्ञान शिक्षण से विद्यार्थियों की विज्ञान शब्दावली, लेखन कौशल और वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ में उल्लेखनीय सुधार होता है।

विज्ञान पहेली का प्रयोग

यह पद्धति सीखने को रोचक और सहभागितापूर्ण बनाती है। पहेलियों के माध्यम से वैज्ञानिकों और उनकी खोजों/आविष्कारों के प्रति जागरूकता बढ़ती है। विद्यार्थियों में सामान्य ज्ञान एवं वैज्ञानिक जानकारी दोनों का विस्तार होता है। सही उत्तर मिलने पर उनमें आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का संचार होता है। सही उत्तर न मिलने पर भी प्रयास करने की प्रक्रिया विद्यार्थियों को स्वयं सीखने में सक्रिय भागीदार बनाती है।

एक वायु है प्राण बचाती, दूजी बूझो जो आग बुझाती| तीसरी वायु भोजन पकाती, तीनों का तुम नाम बताओ, उत्तर जाओ खोज के लाओ|	एक पद्धति ऐसी आई, जल उत्पादन हमें सिखाई वर्षा जल एकत्र करें प्रकृति उसे फिर शुद्ध करे विधि का तुम नाम बताओ उत्तर कोई खोज के लाओ
प्रश्न- प्राण वायु किस वायु को कहते है? उत्तर (A) हाइड्रोजन (B)आक्सीजन (C) नाइट्रोजन (D) सभी प्रश्न- आग बुझाने में कौन-सी गैस का उपयोग किया जाता है? उत्तर (A) CO_2 (B) O_2 (C)H_2 (D) सभी	प्रश्न- पहेली का सही उत्तर बताओ- प्रश्न- जल उत्पादन की तकनीक किन स्थानों में उपयोगी है? उत्तर – (A) रेगिस्तान (B) मैदानी इलाके (C) पहाड़ (D) सभी जगह प्रश्न- जल उत्पादन या संवर्धन तकनीक में किस जल का संचयन होता है ? (A) भूमिगत जल (B) वर्षा जल (C)नदियों का जल (D) सभी

सूर्य किरण की ऊर्जा को, हरि पर्ण लियो चुराए| नीर और पोषक तत्व संग, भोजन लियो बनाए| विधि का नाम जो खोज लाए, मेरी सहेली वह बन जाए|	अगरबत्ती जलाते पूजा घर में, खुशबू फैले चारों ओर | चने भिगोए भर कटोरी, कढ़ाई भर फूल जाते क्यों| विज्ञान छिपा क्या खोज के लाओ कारण इसका मुझे बताओ|
प्रश्न-1 दी गई पहेली में किस प्रक्रिया के बारे में बताया गया है? (A) प्रकाश संश्लेषण B) वर्ण विक्षेपण (C) परावर्तन (D) कोई नहीं प्रश्न- 2 इस प्रक्रिया का विधिवत अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक का नाम बताओ- (A) जॉन इनगेनहौज़ (B) केल्विन (C)एम् दी हैच एंड स्लक (D) कोई नहीं	प्रश्न-1 अगरबत्ती की खुशबू फैलने का वैज्ञानिक कारण क्या है ? उत्तर- (A) विसरण (B) परासरण (C) दोनों (D) कोई नहीं प्रश्न-2 चने फूलने के बाद आकर में बड़े हो गए, क्यों? (A) विसरण (B) परासरण (C) दोनों (D)कोई नहीं

इस अभिनव पहल से हमने यह पाया कि **जब हम** अपनी भाषा में नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ, जैसे विज्ञान पहेली/पज़ल, आदि अपनाते हैं तब विद्यार्थियों की ज्ञान-स्मृति (Retention) और विज्ञान विषय की समझ में उल्लेखनीय सुधार होता है।

Scan this QR Code for the audio story.

डॉ. सुनीता गुप्ता
टीजीटी विज्ञान
पीएम श्री के.वि. बालाघाट

6

किताब से नहीं, अनुभव से सीखें

कक्षा में जब मैं बच्चों को 'आसपास की दुनिया' पढ़ाता हूँ, तो यह मेरे लिए केवल एक विषय नहीं, बल्कि बच्चों के साथ की जाने वाली एक अनोखी यात्रा बन जाती है। मेरा हमेशा यही प्रयास रहता है कि वे इसे केवल किताबों तक सीमित न रखें, बल्कि अपने अनुभवों और परिवेश को गहराई से समझें। अक्सर मैं बच्चों को कक्षा से बाहर विद्यालय के बगीचे में ले जाता हूँ। वहाँ जाकर जब वे पेड़ों की छाया में खड़े होते हैं, पत्तियों की बनावट को छूते हैं, फूलों की खुशबू महसूस करते हैं और छोटे-छोटे कीड़े-मकौड़ों की हलचल देखते हैं, तो उनकी आँखों में उत्सुकता की चमक साफ झलकती है। पक्षियों को देखकर जब हम उनके रंग, आवाज़ और आदतों पर चर्चा करते हैं, तो बच्चों की जिज्ञासा और अवलोकन की क्षमता अपने आप विकसित होने लगती है। उस समय मुझे लगता है कि मैंने वास्तव में उन्हें जीवन से जोड़कर सिखाने का सही रास्ता चुना है।

मैं बच्चों को जल, वायु और मिट्टी के महत्व पर न केवल चर्चा के माध्यम से, बल्कि प्रत्यक्ष प्रयोगों द्वारा भी सिखाता हूँ। जब मैं पानी में पत्ते डालकर उन्हें यह दिखाता हूँ कि हल्की चीज़ें तैर सकती हैं और भारी चीज़ें डूब जाती हैं, तो उनकी मुस्कान और आश्चर्य मुझे यह विश्वास दिलाते हैं कि सीखने का सबसे अच्छा माध्यम अनुभव ही है। मौसम बदलने पर आकाश के रंग, बादलों के आकार और हवा की दिशा पर बच्चों से प्रश्न करना, उनमें अपने परिवेश को ध्यान से देखने की आदत डालता है।

मेरे अनुभव में स्थानीय वातावरण से जुड़े उदाहरण सबसे प्रभावी होते हैं। जब बच्चे अपने घर, बाजार या मोहल्ले में देखी हुई चीज़ों को पाठ से जोड़ते हैं, तो उन्हें लगता है कि पढ़ाई किताब की दुनिया से निकलकर उनकी

अपनी दुनिया का हिस्सा बन गई है। यही जुड़ाव सीखने को सहज और आनंददायक बना देता है। कभी-कभी मैं उन्हें समूहों में बाँटकर गतिविधियाँ कराता हूँ—जैसे कक्षा की वस्तुओं को प्राकृतिक और कृत्रिम में बाँटना या चित्र बनाकर यह दिखाना कि वे अपने आसपास क्या देखते हैं? यह गतिविधियाँ बच्चों के लिए खेल जैसी होती हैं, लेकिन उनके भीतर पर्यावरण की गहरी समझ को जन्म देती हैं।

मैं यह मानता हूँ कि मूल्यांकन केवल परीक्षा से नहीं होना चाहिए। बच्चों के सवाल, उनकी जिज्ञासा, गतिविधियों में उनकी भागीदारी ही मेरे लिए उनके सीखने का सबसे सटीक पैमाना हैं। जब मैं देखता हूँ कि कोई बच्चा पक्षी की चहचहाहट को पहचानकर उसका वर्णन करने लगता है या पानी में डूबती-तैरती वस्तुओं का कारण समझा पाता है, तो मुझे गर्व होता है कि मैंने उन्हें सिर्फ पढ़ाया नहीं, बल्कि जीवन से जोड़कर सीखने का अवसर दिया है।

‘आसपास की दुनिया’ को गतिविधियों और अनुभवों के माध्यम से पढ़ाना मेरे लिए एक व्यक्तिगत संतोष है। यह केवल विषय की समझ तक सीमित नहीं रहता, बल्कि बच्चों और उनके पर्यावरण के बीच गहरा संबंध भी स्थापित करता है।

विजय कुमार
प्राथमिक शिक्षिक
पीएम श्री के.वि. डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद, नई दिल्ली

7

Sketching Minds, Not Just Notes: A Journey into Innovative Pedagogy through Sketch-noting

As a teacher, there are moments when you notice something that makes you think, *maybe there's a different way to engage my students.* It happened one day when I was walking around my Class XII classroom, checking in on students while they prepared for a classroom discussion. I saw one of my students, Souvik, whom I usually consider more reserved, scribbling in the margins of his notebook. A glance revealed the usual doodles: a tree, a star, some swirling lines. However, I then noticed something: the doodles were connected to the lesson. He had drawn a lone flower blooming under a dark cloud — and that's when it struck me. We were reading 'A Thing of Beauty', and his sketch perfectly captured the poem's idea that beauty acts as a balm against the gloom of life.

Instead of brushing it off as just another distraction, I paused. What if these doodles weren't just mindless sketches? What if they were a sign of deeper engagement? This thought stuck with me, and it led me to experiment with a new approach in my teaching: sketch-noting.

What is Sketch-noting?

Sketch-noting, also known as visual notetaking, is a creative approach to capturing ideas and concepts through a combination of drawings, symbols, and text. It's not about being an artist—it's about translating ideas into visuals that make them easier to understand and remember.

This method taps into a learner's visual and kinesthetic senses, turning traditional note-taking into a much more engaging and personalised activity.

In the context of art-integrated learning, sketch-noting fits perfectly. It's not just about incorporating art into lessons; it's about fostering critical thinking and creativity in ways that resonate with every student, regardless of their learning style. Whether a student is a visual learner, a kinesthetic learner, or someone who thrives on verbal communication, sketch-noting has something to offer.

How I Introduced Sketch-noting in My Classroom

The first step was simple: I introduced the idea by showing students examples of sketch-notes—bright, lively, and somewhat abstract representations of lessons. These were created by others, primarily from online sources. I didn't give them a textbook explanation of sketch-noting. Instead, I asked them, "What do you think these sketches are saying about the lesson?"

To my surprise, the class dove into interpreting the visuals with enthusiasm. "This one shows the journey of a hero," one student pointed out. "This is about breaking free from chains," said another.

That's when I introduced the term sketch-noting. "Today, I want you to sketch-note the poem we're about to read together," I told them, explaining that they didn't need to be perfect artists, just creative thinkers.

I even made a deal with them: "If your sun looks like an omelette, but you still understand the theme — I call that a win."

When we read "Keeping Quiet" by Pablo Neruda, I encouraged them to sketch what they felt as we discussed the poem's themes.

The response was overwhelming. The students who often sat quietly, waiting for the class to end, now had their pencils flying as they sketched a clock, a globe, and chains. They were not just reading the poem; they were seeing it, feeling it.

Why Sketch-noting Works

There are many reasons why I've found sketch-noting to be such a powerful tool in my classroom.

Sketch-noting involves multiple senses—sight, touch, and even movement. When students draw as they listen or read, they become active participants.

To draw something, students need to understand it. This is the beauty of sketch-noting: it forces learners to process the information and decide what's essential. They become more invested because they're not just transcribing—they're making it their own.

Every student's sketch-note is different. Some are filled with vibrant drawings, others with quick doodles and stick figures. This kind of freedom allows students to represent their understanding in a way that makes sense to them.

In a typical classroom, we have a beautifully diverse crowd—some who need visuals, some who prefer words, some who learn by doing. Sketch-noting is a rare strategy that caters to all three. It's like the potluck of pedagogy—wholesome, inclusive, and surprisingly effective.

Visual memory is strong. When students review their sketch-notes, they're likely to remember concepts more vividly. It becomes their personalised mind map.

Overcoming Challenges

I won't say it was all smooth sailing. Some students were initially reluctant. "Ma'am, I can't draw," Sonasila declared. I smiled and told her, "If you can draw a smiley face in your WhatsApp status, you can sketch-note Shakespeare, don't worry!"

Slowly, the class warmed up to the idea. They stopped worrying about how their drawings looked and focused more on what they meant.

One of my most memorable moments was when Aditya—usually very quiet, and often anxious during assessments—showed me a sketch-note of a story's protagonist as a winding road with signposts at turning points. It was not only creative, but it was accurate and deep. And yes, he beamed with pride when I asked if I could display it on the classroom board.

Expanding Sketch-noting to Other Lessons

After the success with poetry, I brought sketch-noting into prose comprehension, character analysis, and even revision activities. Students started making visual summaries of chapters and themes. Students took ownership, and the classroom became not just a place to learn but also a place to create.

Conclusion: A New Way to Learn

Sketch-noting has transformed how my students connect with English. It has made lessons more engaging, inclusive, and memorable. In a classroom as diverse as ours in KVS, where every learner brings a different strength, sketch-noting offers an equal platform.

More than a technique, it has become a way of thinking—visually, creatively, and reflectively. It has shown me that when we give students a little freedom to draw their thoughts, we don't just get better notes—we get better thinkers.

And if the margins of their notebooks are now filled with meaningful sketches instead of just 'Class XII rocks' or 'Ravi was here'—I call that progress.

Scan this QR Code for the audio story.

M Reshmi Irani
PGT English
PM SHRI KV NO. 2 Kharagpur

8

The Saga of DNA: Where Art Meets Molecular Biology

In the world of senior secondary education, the subject of molecular biology often arrives in the classroom wearing the heavy cloak of complex terminology and intricate diagrams. DNA, RNA, replication, transcription, translation—the words themselves seem to belong to a secret society of scientists. But what if we pulled back that cloak and revealed the story of life in a way that sings, dances, and narrates itself?

That is precisely what happened when molecular biology found a companion in art. What began as an experiment in pedagogy soon transformed into a vibrant celebration of creativity, culture, and science—woven together into one unforgettable learning experience.

A Scroll of Secrets in Koshika Nagar

The classroom turned into a stage, and the tale of DNA began in the mythical kingdom of *Jeewanrajya*. A cheerful glove puppet greeted the students with a warm *namaste*, and the journey unfolded. DNA was no longer just a molecule; it became a revered scroll of secrets resting in the Royal Library—the nucleus of *Koshika Nagar*, or Cell City.

Students didn't just see DNA; they imagined it as a winding, double-helix manuscript written in the sacred letters A, T, G, and C. Genes became mantras, histones turned into golden spools, and nucleosomes into garlands. Suddenly, chromosomes weren't dry diagrams from a textbook but magnificent sceptres ruling the city of life.

Heroes, Sages, and Guardians

As the narrative deepened, enzymes took on roles of heroic scribes and messengers. Helicase unzipped the DNA scroll like a daring adventurer, while DNA Polymerase became the tireless scribe copying its sacred code. Then came the Singing Sage, RNA Polymerase, who transformed the DNA mantra into messenger RNA—a new scroll carrying life's instructions to the ribosome, the city's protein factory.

The drama continued with the arrival of the guardians, the tRNAs, each holding a pearl-like amino acid and carrying keys that matched the codons on the mRNA. With each meeting, a shimmering garland of proteins was formed. These proteins, like unsung heroes, went forth to build, protect, and nurture *Koshika Nagar*.

Culture Meets Science

What made this journey extraordinary was how

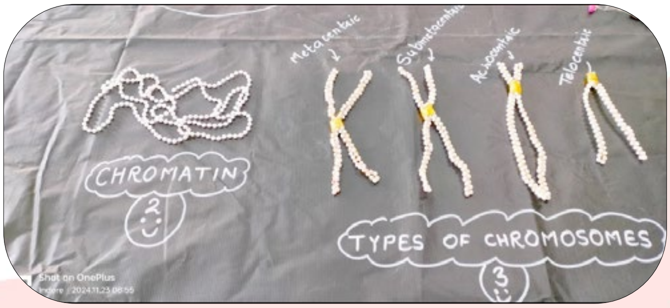

seamlessly cultural metaphors intertwined with molecular processes. Nucleosomes became garlands, proteins performed a molecular *dance*, and the genetic code itself felt like a timeless epic. Students found themselves relating to science not as distant observers but as participants in a story that belonged to both their cultural imagination and their scientific curiosity.

From Diagrams to Drama

Learning didn't stop at listening. Students built 3D models of DNA helices, crafted chromosomes out of beads, and created puppets to bring the narrative alive. Local materials, aligned with the spirit of sustainability in NEP 2020, were transformed into teaching tools. The classroom became a gallery, a stage, and a laboratory all at once.

The impact was evident. Complex concepts that once demanded rote memorisation now lingered in memory through stories, songs, and visuals. Students were not just learning; they were laughing, performing, reflecting, and, above all, connecting with life at its most fundamental level.

The Celebration of Life

The final act of this epic was a reminder that every protein formed in *Koshika Nagar* was more than a chemical—it was a builder of life. The students closed the journey with awe, realising that the same DNA scroll unites all living beings, just as diverse languages and cultures weave together India's identity.

A Teacher's Reflection

Looking back, the "Saga of DNA" project was more than just a lesson plan; it was a transformative journey. It combined the rigour of science with the soul of art and culture, echoing the vision of NEP 2020 to nurture curiosity, creativity, and critical thinking.

As the puppet narrator reminded the students at the end:

"Within you lies a timeless story—a molecular epic that connects you to every corner of Jeewanrajya."

In that moment, molecular biology wasn't just studied. It was lived.

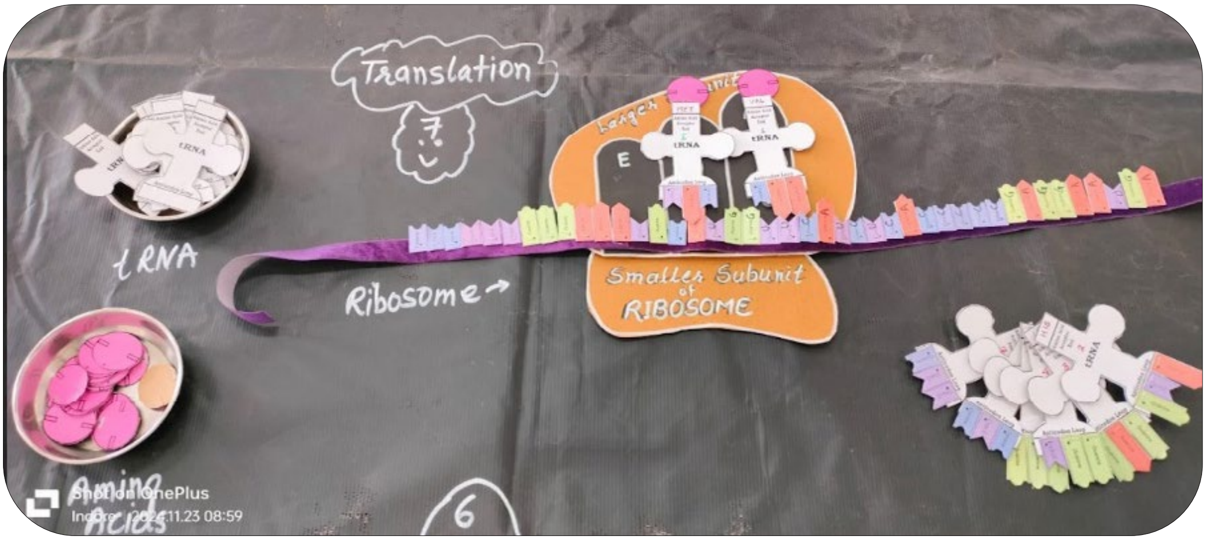

Scan this QR Code for the audio story.

Chetna Khambete
PGT Biology
PM SHRI KV IIT Indore
(National Awardee Teacher 2023)

(शिक्षण-अधिगम और मूल्यांकन में तकनीकी एकीकरण)
(Innovative Pedagogical Practices across different stages of school education)

Technology integration in teaching, learning and assessment empowers classrooms with interactive tools, digital resources and real-time feedback. Smart boards, educational apps and online assessments make learning engaging, personalised and efficient. When thoughtfully used, technology builds 21st-century skills, supports diverse learners and transforms education into a dynamic, future-ready experience.

९

शिक्षण–अधिगम और मूल्यांकन में प्रौद्योगिकी एकीकरण

एक मशहूर कहावत है: "सिद्धांत रास्ता दिखाता है, लेकिन अनुभव हमें सही निर्णय लेना सिखाता है।" अधिगम का अनुभव कई तरीकों से मिलता है—कभी प्रयोगों से, कभी गतिविधियों से लेकिन इन दोनों की अपनी सीमाएँ भी हैं। प्रयोग और गतिविधियाँ तभी सही परिणाम देती हैं जब इन्हें सही तरीके से किया जाए। विज्ञान, गणित, जीव विज्ञान और अभियांत्रिकी जैसे विषयों में कई सूक्ष्म अवधारणाएँ होती हैं, जिन्हें केवल प्रयोगों के ज़रिए समझना मुश्किल होता है। ऐसे में ऐनिमेशन, फ्लैश या अन्य डिजिटल दृश्य-चित्रण मददगार होते हैं। आधुनिक डिजिटल तकनीक हमें यही सुविधा देती है। इसलिए आज के समय में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी का उपयोग और एकीकरण बेहद ज़रूरी बन गया है।

21वीं सदी और प्रौद्योगिकी

21वीं सदी में ज्ञान के संप्रेषण और अधिग्रहण की प्रक्रिया में गहरा परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन मुख्यतः शिक्षा में प्रौद्योगिकी के तीव्र एकीकरण के कारण संभव हुआ है। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालयों में यह बदलाव केवल एक प्रवृत्ति नहीं, बल्कि एक अनिवार्य विकास है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रौद्योगिकी के एकीकरण पर बल दिया है ताकि समानता, समावेशन और गुणवत्ता को प्रोत्साहित किया जा सके।

कक्षा और प्रौद्योगिकी

कक्षा अब शिक्षक-केंद्रित से विद्यार्थी-केंद्रित मॉडल में परिवर्तित हो चुकी है। डिजिटल उपकरणों, इंटरैक्टिव प्लेटफ़ॉर्म्स और स्मार्ट लर्निंग सिस्टम्स ने इस बदलाव को गति प्रदान की है। विविध पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों और एकीकृत पाठ्यक्रम की चुनौतियों से जूझ रहे केन्द्रीय विद्यालयों के लिए प्रौद्योगिकी- रोचक, लचीले और व्यक्तिगत अधिगम, समाधान प्रदान करती है।

सिम्युलेशन, 3D मॉडल्स, वर्चुअल प्रयोगशालाएँ और शैक्षिक खेलों जैसे उपकरण अमूर्त अवधारणाओं को ठोस समझ में बदल देते हैं। उदाहरण के लिए, परमाणु की संरचना या मानव परिसंचरण तंत्र जैसी जटिल अवधारणाएँ इंटरैक्टिव ऐनिमेशन द्वारा आसानी से समझाई जा सकती हैं।

शिक्षकों को सशक्त बनाती प्रौद्योगिकी

रे क्लिफर्ड का कथन उल्लेखनीय है:
"प्रौद्योगिकी शिक्षकों की जगह नहीं लेगी, लेकिन जो

शिक्षक प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग करेंगे, वे निश्चित रूप से दूसरों की जगह ले लेंगे।"

केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षक अब केवल ज्ञान संप्रेषक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक बन गए हैं। स्मार्ट बोर्ड, टैबलेट्स, लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम्स (LMS), और AI-संचालित प्लेटफ़ॉर्म्स ने शिक्षकों को सक्षम बनाया है कि वे आकर्षक पाठ योजनाएँ डिज़ाइन कर सकें। गूगल क्लासरूम, दीक्षा और पीएम ई-विद्या जैसे मिश्रित अधिगम मॉडल्स का उपयोग कर सकें, LMS, डैशबोर्ड्स से विद्यार्थियों की प्रगति पर नज़र रख सकें, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार व्यक्तिगत शिक्षण प्रदान कर सकें।

विद्यार्थियों के लिए प्रौद्योगिकी

आज के विद्यार्थी "डिजिटल नेटिव्स" हैं। वे डिजिटल उपकरणों का प्रयोग कई शैक्षणिक गतिविधियों के लिए करते हैं जैसे वीडियो, गेम-आधारित क्विज़ और सिम्युलेशन, ऑनलाइन मंच और साझा दस्तावेज़ों पर समूह कार्य, स्क्रीन रीडर, कैप्शनिंग और भाषानुवाद आदि।

मूल्यांकन में प्रौद्योगिकी

परंपरागत मूल्यांकन रटने पर आधारित रहा है। परंतु NEP 2020 ने दक्षता-आधारित मूल्यांकन पर बल दिया है। डिजिटल उपकरण इसमें सहायक हैं जैसे- गूगल फॉर्म्स, क्विज़िज़, त्वरित प्रतिक्रिया देने वाले क्विज़, ई-पोर्टफोलियो के माध्यम से प्रोजेक्ट्स और जर्नल्स का मूल्यांकन आदि। AI-आधारित प्लेटफ़ॉर्म्स से अधिगम अंतराल की पहचान, रीयल-टाइम मूल्यांकन के लिए Socrative और Mentimeter जैसे ऐप्स।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की पहल

के.वि.स. की पहल के तहत स्मार्ट कक्षाओं में ICT-सक्षम कक्षाएँ, इंटरैक्टिव बोर्ड, पैनल और टैबलेट्स शामिल हैं। Google Workspace, SWAYAM और NISHTHA जैसे ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म शिक्षण को सशक्त बनाते हैं। NDLI और ई-ग्रंथालय जैसी डिजिटल संसाधन उपलब्ध हैं, साथ ही शिक्षकों को ICT व डिजिटल दक्षता पर सतत् प्रशिक्षण मिलता है।

चुनौतियाँ

डिजिटल शिक्षा को अपनाने में कई चुनौतियाँ सामने आती हैं, जिनमें अधोसंरचना की कमी जैसे पर्याप्त हार्डवेयर और इंटरनेट सुविधाओं का अभाव प्रमुख है। सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के कारण डिजिटल विभाजन बना रहता है। कई शिक्षकों की डिजिटल तैयारी अपेक्षित स्तर पर नहीं होती, साथ ही साइबर सुरक्षा और गोपनीयता भी महत्वपूर्ण चिंताएँ हैं।

उपाय और उपयोगिता

फ़्लिप्ड क्लासरूम मॉडल अपनाकर सीखने की प्रक्रिया को अधिक सहभागितापूर्ण बनाया जा सकता है। ई-पाठशाला और दीक्षा जैसे ओपन एजुकेशनल संसाधनों का उपयोग शिक्षण को समृद्ध करता है। पारंपरिक और डिजिटल मूल्यांकन का मिश्रण संतुलित आकलन सुनिश्चित करता है। विद्यार्थी परियोजनाओं को डिजिटल रूप में प्रोत्साहित करना तथा अभिभावकों को डिजिटल माध्यम से जोड़ना, सीखने की गुणवत्ता को और बढ़ाता है।

शिक्षण-अधिगम एवं मूल्यांकन में प्रौद्योगिकी का एकीकरण केवल उपकरणों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिकता, शिक्षण पद्धति और विद्यार्थी संलग्नता को बदलने की प्रक्रिया है। केन्द्रीय विद्यालय इस यात्रा में पहले से अग्रणी हैं और हम राष्ट्रीय शैक्षिक लक्ष्यों के अनुरूप डिजिटल सशक्तिकरण की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं।

भविष्य की कक्षा केवल दीवारों तक सीमित नहीं होगी, बल्कि यह एक गतिशील स्थान होगी जहाँ प्रौद्योगिकी और शिक्षण कला मिलकर हर विद्यार्थी के लिए प्रेरणा, सशक्तिकरण और उत्कृष्ट अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने में सहायक होगी।

Scan this QR Code for the audio story.

जगदीश कुमार गुप्ता
प्रधानाचार्य
पीएम श्री के.वि. सत्तेनपल्ली (आंध्र प्रदेश)

10

Technology Integration in Teaching - Learning and Assessments

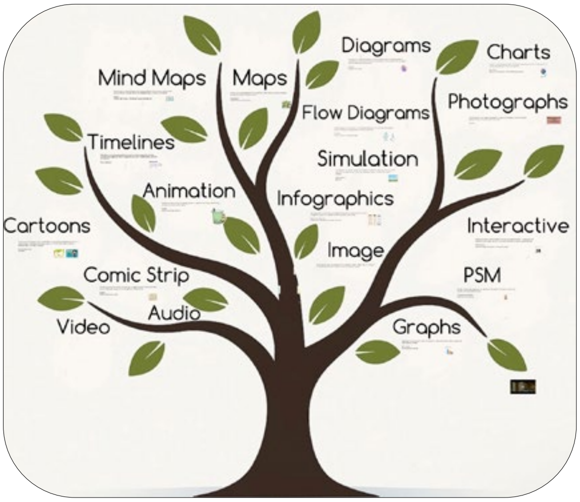

In today's world, technology has become an integral part of our daily lives, and the same is true for education. As a primary teacher in Kendriya Vidyalaya Sangathan, I have experienced the growing need to make teaching more effective, student-friendly, accessible, interactive, and engaging. Technology, when used wisely, becomes a powerful tool that not only helps us teach better but also makes learning more joyful and meaningful for children.

In this article, I will share my thoughts and classroom experiences on how technology can be integrated into teaching, learning, and assessments in simple and practical ways.

Understanding the Role of Technology in Education

When we hear the term technology, we often think it is only for technical people. But that is not true. Many of us think technology in education means only using computers or smartphones in the classroom. However, technology includes any digital tool or resource that helps learning. It can consist of audio-visual aids such as projectors and smartboards, educational apps, AI tools, online quizzes, and more. Technology provides us with numerous ways to enhance teaching and learning.

One important thing to remember is that technology should support teaching, not replace it. As teachers, our role is significant. Let technology assist the teaching, not take over. It should support learning, not substitute the teacher.

Technology in the Teaching Process

In the classroom, I often use digital tools to introduce or explain new topics. For example, a self-made, print-rich *Picture Dictionary* helps my students understand new words in English. The dictionary is designed in such a way that children can decode the new word, relate it to its associated picture, and understand both its meaning and usage. Children are naturally attracted to print-rich visuals. These visuals improve their concentration and help them retain words better. Another effective method I have adopted is using an interactive word search game. Students take it as a challenge and try to find the keywords of a particular chapter in the word search.

To develop reading skills in students, I have created digital flashcards and games. I have also designed a drag-and-drop activity for sight words. These small innovations make learning playful. When students participate actively, they learn more effectively and retain information longer.

Technology for Learning Support

Every child learns differently. Some are quick readers, while others need more time. Technology allows us to personalise learning. For example, I share interactive

resources with students so they can learn at their own pace. This way, they don't feel left behind.

Many free mobile apps help students practice reading, phonics, and vocabulary. I recommend apps like *Google Read Along* for developing foundational reading skills. In my classroom, I sometimes allow children to use tablets to play educational games during the reading period.
In one project, I created posters that displayed the proficient reading level as determined by the TARA assessment. With the help of AI, I generate stories in both English and Hindi within the word limit of the proficient level (e.g., Class 3 – 70 WCPM). Then, using design apps like Canva, I create posters and display them in the classrooms. Using sand timers, students read these passages in a fun and challenging way. This is an example of how technology can be utilised to address current needs.

Technology in Assessment
Assessment is a crucial part of the teaching and learning process. With digital tools, assessment becomes more continuous and learner-friendly. I use Quizizz to create simple quizzes. Students enjoy clicking answers, and I get instant results. This saves time and helps me identify learning gaps quickly.
I also use the paper mode of Quizizz to conduct fun quizzes. It brings excitement into the classroom, and even shy students participate eagerly.
For oral assessment, I sometimes ask students to record short videos of themselves reciting a poem or reading a passage. They share it with me through messaging apps. This method reduces pressure on children and gives them more time to prepare.

Challenges and Solutions
Integrating technology is not without its challenges. I believe the two biggest obstacles to adopting technology are fear and a lack of awareness. I have seen people avoid using technology because they fear it will invade their personal life or kill their creativity. Others stay away simply because they are unaware of the latest tools and developments.

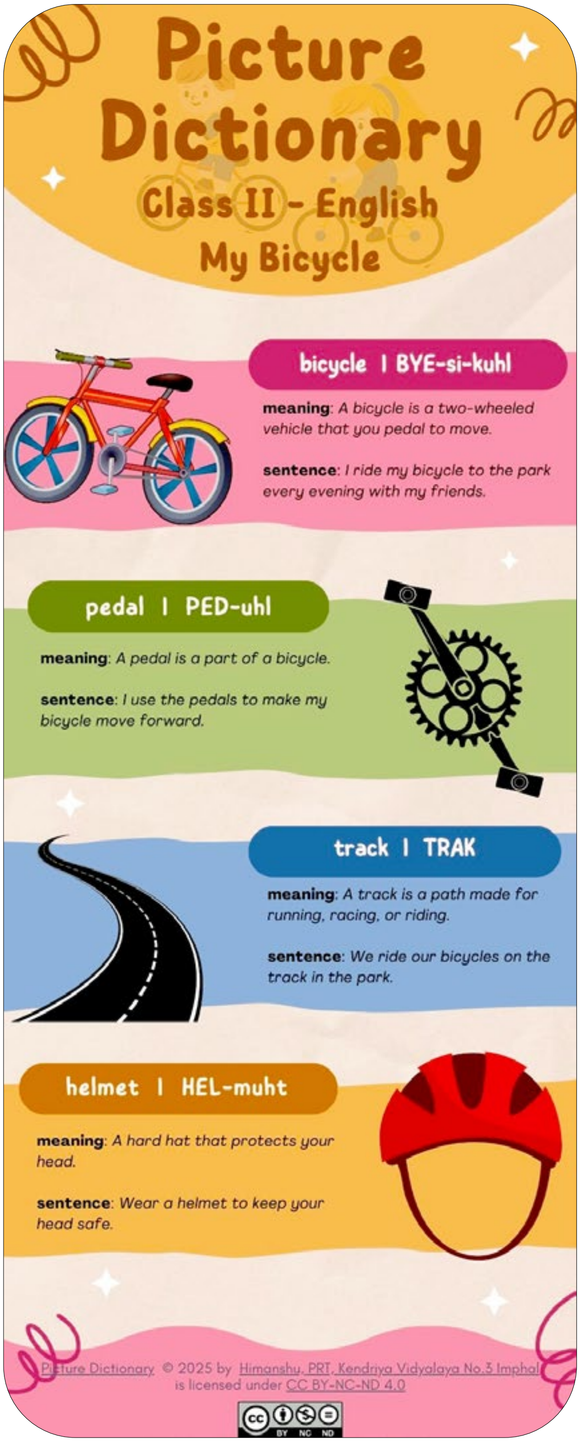

But this is not the case. First and foremost, we need to develop the belief that technology is here to stay—and we must learn to use it wisely. Some people complain that technology has adverse effects on our lives. However, like any other tool, it depends on how we use it. Anything can be misused, but that does not mean we should stop using it. With the right mindset, we can live and grow alongside technology.
Of course, there are also practical issues. Sometimes, devices don't work correctly. Internet connectivity can be a significant issue, particularly in remote areas. Also, not all children have access to smartphones or computers at home.
As teachers, we need to be flexible. I always keep backup activities ready in case the technology fails. I also try to keep most digital activities simple so that they can be done with minimal resources.
Another challenge is teacher training. Many teachers

feel hesitant or nervous when using new tools. I believe peer learning is the best solution. I learned to use various tools by observing other teachers and attending brief training sessions. We should continue to explore and discover—step by step.

Building a Positive Digital Culture

Technology must be used ethically and responsibly. Just as we teach children about what is good and evil in other areas, we should also educate them about the benefits and drawbacks of technology.

We should teach children about digital safety, including the importance of not sharing personal information online and using devices in a balanced manner. At my school, we occasionally hold special sessions on cyber safety. We should tell our kids, "When earnings or profits are unusually high, it can be a sign of danger."

Additionally, we should be mindful of not overusing technology. Screen time should be limited, especially for younger children. A good mix of traditional and digital methods is most effective.

I recommend that my fellow teachers read about the TPACK framework. It explains how technology can be used in a balanced and effective way.

Way Ahead

Technology is here to stay. Instead of fearing it, we should embrace it with a positive mindset. As teachers, we have an excellent opportunity to make our classrooms more engaging, inclusive, and future-ready. By integrating technology thoughtfully into teaching, learning, and assessment, we can reach every child more effectively.

Let us take small steps—one tool at a time, one activity at a time. With curiosity and commitment, we can transform the way we teach and the way children learn. After all, the real power of technology lies not in the device, but in the hands of a creative teacher.

Let's come together and start walking on the path of becoming a digital teacher, as envisaged in the NEP 2020.

A message for my fellow teachers: 'Technology won't replace teachers, but teachers who use technology will replace those who don't.'

Scan this QR Code for the audio story.

Himanshu
PRT
KV No.3 Imphal, Leimakhong

(कर्मचारियों के व्यावसायिक विकास में क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का प्रभाव)
(Impact of Capacity Building programmes in Professional Development of staff)

Capacity Building Programmes help teachers upgrade their skills, explore new teaching methods and understand students' needs better. Through practical training and meaningful discussions, teachers become more confident and effective in the classroom. These programmes lead to improved teaching practices and create a positive impact on students' learning and overall academic experience.

11

Growing Together: Personal and Professional Growth in KVS

It is often said that education is a journey, not a destination. And within the hallowed corridors of Kendriya Vidyalayas (KVS), this journey becomes a shared experience between students and teachers, intertwined in a bond of learning, growth, and mutual transformation. As someone who has lived this rhythm both as a student and as a teacher, I believe that the growth of individuals in KVS is not just parallel-it is deeply interconnected.

The Personal Journey of a Student

When a young child enters the school gates of a Kendriya Vidyalaya, they come with dreams, hesitations, and boundless curiosity. KVS, with its structured yet flexible environment, provides them the platform to explore, experiment, and evolve. What makes KVS unique is its diversity. Students from various parts of the country, different cultures, and backgrounds come together under one roof. This cultural melting pot becomes a fertile ground for personal development.

In this environment, students not only acquire academic knowledge but also develop empathy, adaptability, and collaboration skills. Through morning assemblies, CCA activities, sports meets, and inter-house competitions, they discover their strengths, face their fears, and learn to express themselves. Whether it is a hesitant child finding her voice during a poem recitation or a shy boy teaching to lead a house team in a quiz competition, KVS becomes a space of transformation.

A remarkable example of how KVS nurtures student potential is the inspiring journey of Sanvi Kunwar, a Class 12 student of PM SHRI KV Raiwala, who participated in the prestigious Sakura Science Exchange Program in Japan. Organised by the Japan Science and Technology Agency (JST), this programme fosters international collaboration and innovation in science and technology. During her time in Japan, Sanvi visited cutting-edge research institutions, participated in hands-on science workshops, and engaged in meaningful cultural exchange. This life-changing experience not only deepened her scientific knowledge but also inspired her to contribute to global sustainability challenges. Sanvi's journey reflects the kind of global opportunities KVS facilitates for its students, empowering them to grow beyond the classroom and become future leaders.

But personal growth doesn't come without challenges. Many students come from families with limited resources or are frequently relocated due to their parents' transferable jobs. Amidst this uncertainty, KVS becomes their constant. Teachers play a crucial role in anchoring them emotionally and intellectually. They don't just teach subjects; they mentor, listen, and guide.

Teachers: The Guiding Light

For teachers in KVS, professional growth is inextricably linked to personal development. With every transfer, they enter a new school, a new city, and a new community. This constant movement could be seen as a disruption, but most KVS teachers will tell you-it is a blessing in disguise. Each new posting brings fresh challenges, new students, new colleagues, and new opportunities to learn.

Professional growth in KVS is multidimensional. Teachers are encouraged to attend in-service training programmes, participate in workshops, and take up responsibilities beyond their classroom teaching. From exam coordinators to club in-charges, from CCA planning to mentoring weaker students, each role further hones their skills. These experiences make them not just better educators but also better human beings.
Another motivating aspect of being part of KVS is the

clear and merit-based opportunity for promotion. Teachers are eligible for higher responsibilities and promotions through departmental exams and selection boards. This structured growth path not only keeps teachers motivated but also ensures the system rewards sincere and competent professionals.

Moreover, the introduction of digital tools, the National Education Policy (NEP) 2020, and the CBSE's competency-based education models have provided both teachers and students with new platforms for growth. Teachers are learning to integrate technology, adapt to experiential learning methods, and evaluate students beyond rote learning. Students, in turn, are being encouraged to think critically, work collaboratively, and explore their innate talents.

One of the most transformative phases in recent years was the shift to online teaching during the COVID-19 pandemic. Faced with sudden school closures, KVS teachers demonstrated extraordinary resilience in response. They quickly adapted to digital platforms like Google Classroom, Zoom, and Microsoft Teams. Many of them, who had never used such tools before, learned to create virtual classrooms, conduct live sessions, upload study materials, and provide real-time feedback to students.

It wasn't easy. Internet issues, digital illiteracy among students and parents, and the lack of a conducive learning environment at home were significant hurdles. Yet, through continuous peer support and training, teachers transformed their pedagogical methods. They used videos, interactive quizzes, digital worksheets, and even recorded voice notes to ensure continuity in learning. Students, too, adapted and gradually became more independent learners. This phase brought about a cultural shift in teaching and learning in KVS that continues to enrich classrooms to this day.

Shared Growth: Learning from Each Other

In KVS, the growth of students and teachers is not a one-way street. Students inspire teachers as much as teachers encourage students. A curious question from a student can lead a teacher to deeper research. A heartfelt letter from a student can revive a teacher's spirit during a tough day. The laughter shared during a class picnic, the discussions after a morning assembly, the team spirit during Annual Day preparations-all these build connections that foster shared growth.

But what touches me the most is the personal bond that teachers form with their students. These relationships transcend the formal boundaries of classroom instruction. A teacher remembers the struggling boy who improved his grades with gentle nudges. A student remembers the teacher who stood by her when she failed to qualify for a competition. In KVS, such stories are not rare; they are the very fabric of life.

Challenges and the Road Ahead

The need of the hour is to create more opportunities for reflective practices. Teachers must be given time and space to reflect on their teaching, interact meaningfully with peers, and find moments for self-care. Students must be encouraged to pursue hobbies, engage in community service, and be guided by mentors who care not just about their grades but also about their dreams.

Conclusion: A Journey Worth Taking

Personal and professional growth in KVS is not defined solely by awards or designations. It is about the quiet moments of triumph, the resilience built through change, the friendships formed in the classroom, and the values carried for a lifetime.

Of course, the journey isn't without its bumps. Time constraints, administrative workload, lack of resources, and the emotional toll of frequent relocations are real issues. Students face peer pressure, competition stress, and family expectations. Teachers often face burnout, self-doubt, and the challenge of keeping pace with the ever-changing field of pedagogy. But what makes KVS special is its resilience. There is an unspoken understanding in every Vidyalaya. As we move forward, let us continue to nurture this beautiful relationship between students and teachers-a relationship rooted in trust, growth, and a shared dream of learning. Ultimately, **education is not just about what we learn in books, but who we become in the process.**

Scan this QR Code for the audio story.

Asha Naithani
PGT English
PM SHRI KV Raiwala

12

केन्द्रीय विद्यालय में शिक्षक का निजी और व्यावसायिक विकास

जिस प्रकार विद्यालय में शिक्षक की भूमिका छात्रों के शैक्षिक जीवन और विकास पर प्रभाव डालती है और छात्रों को ज्ञान प्रदान करने के साथ उनके व्यक्तिगत विकास में भी भूमिका निभाती है उसी प्रकार विद्यालय एक शिक्षक के व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। केन्द्रीय विद्यालय का शिक्षक और विद्यार्थी होना दोनों ही अपने आप में गर्व का विषय है। सभी केन्द्रीय विद्यालयों में शिक्षा की जो समान गुणवत्ता सुनिश्चित है वह अन्यत्र नहीं मिलती। इसका समान पाठ्यक्रम, कम खर्च में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा इसे अन्य से अलग बनाती है।

विद्यालय में कार्य करते हुए हम कई प्रकार के बहुमुखी विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों से मिलते हैं और उनके साथ नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करते हुए शोध और नवाचार करते हैं, जिसका प्रभाव शिक्षक के विकास पर भी पड़ता है। शिक्षक का व्यावसायिक विकास उसके शिक्षण से संबंधित कौशल और ज्ञान में सुधार करने से संबंधित है, जिसके द्वारा हम नवीनतम तकनीकों और प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना सीख रहे हैं, शोध और नवाचार में शामिल होकर नए विचारों को विकसित कर रहे हैं। केन्द्रीय विद्यालय शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के साथ नवीनतम संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करवाता है। जब से विद्यालयों में पीएम. श्री. योजना को लागू किया गया है इसके सकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों तथा अध्यापकों पर पड़े हैं। यह हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन को भी प्रदर्शित करता है। इसके द्वारा शिक्षकों को अपने विकास के काफी अवसर दिए गए हैं जैसे शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान किए जा रहे हैं जिससे छात्रों को बेहतर तरीके से पढ़ाया जा सके, पढ़ाने के लिए डिजिटल कक्षाओं और ऑनलाइन पुस्तकें उपलब्ध करवाना, शिक्षकों को मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान करना ताकि वह अपने शिक्षण कौशल में सुधार कर सकें तथा अन्य शिक्षकों और विशेषज्ञों से मिलने का अवसर प्रदान करता है। शिक्षक अपने अनुभव और प्रदर्शन के आधार पर पदोन्नति प्राप्त करते हैं, अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में आगे बढ़ कर विशेषज्ञ के रूप में पहचाने जाते हैं, प्रशासनिक भूमिकाओं में भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करते हैं। अब बदलते समय और तकनीक के साथ अध्यापकों को नई तकनीकों के अनुकूलन और अतिरिक्त कार्य सीखने के लिए तैयार रहना होगा ताकि हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकें। पीएम श्री योजना में विद्यालयों के आधुनिकीकरण और अध्यापकों के क्षमता निर्माण पर बल दिया जा रहा है जिससे अध्यापक नया सीखने के साथ वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बना सकें। केन्द्रीय विद्यालय एक आदर्श विद्यालय माने जाते है जहाँ प्रत्येक शिक्षक यह मौका चाहता है कि वह आदर्श अध्यापक के रूप में कार्य करें और अपने आसपास के विद्यालयों का भी मार्गदर्शन करें जिससे उनका अपना विकास हो सके। यदि एक शिक्षक उन्नति करता है तो उसका लाभ हमारे विद्यार्थियों को होता है और वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के योग्य बनते है तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और छात्रों की उन्नति के साथ अपने भविष्य को भी आकार देने में भी मदद करते हैं।

एक शिक्षक के विकास से विद्यार्थियों को भी लाभ होगा और वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बन सकेंगे। विद्यालय सहकर्मियों के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है जहाँ

अध्यापक एक-दूसरे के विचारों, अनुभवों और सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करते हैं और पुस्तकालय, उपकरण, संसाधन प्रदान करता हैं जिससे शिक्षक अपनी शिक्षण सामग्री को समृद्ध करते हैं और प्रशासनिक भूमिकाएँ प्रदान करके नेतृत्व कौशल को विकसित करने का अवसर देता है। संगठन द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार, प्रमाण पत्र तथा प्रशस्ति पत्र व्यावसायिक विकास को प्रेरित करते हैं। नए शिक्षण प्रयोग तथा नवाचारों से रचनात्मकता को भी बढ़ावा मिलता है।

शिक्षक का निजी विकास उसके व्यक्तिगत गुणों और विशेषताओं के आधार पर भी होता है जिसका कारण उसके निरंतर अपने ज्ञान और कौशल में सुधार करना होता है। इसके अतिरिक्त दूसरों की भावनाओं को समझने में सक्षम होना, नैतिकता और मूल्यों का पालन करना भी निजी विकास को प्रबल करते है और भविष्य के लक्ष्यों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। केन्द्रीय विद्यालय द्वारा शिक्षक के लिए नियमित प्रशिक्षण और कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं जिसमें सहकर्मियों के साथ सहयोग करके अपने अनुभव और ज्ञान को साँझा किया जाता है। यहाँ एक शिक्षक अपनी योग्यता और प्रशासनिक ज्ञान के आधार पर पदोन्नति के माध्यम से उप-प्राचार्य अथवा प्राचार्य के पद पर नियुक्त किया जा सकता है और यदि वह किसी क्षेत्र में विशेषज्ञ है तो विषय विशेषज्ञ के रूप में काम कर सकता है अथवा एक प्रशिक्षक के रूप में शिक्षकों को प्रशिक्षण दे सकता है। विद्यालय में रहते हुए कई ऐसे मौके मिलते है जैसे भाषा संगम के अंतर्गत कई नई भाषाओं के उच्चारण की जानकारी होना, एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत विभिन्न राज्यों की संस्कृति से परिचित होना, नए पाठ्यक्रम के विकास में भाग लेना, शिक्षक शोध और अनुसंधान में भाग लेना अथवा शैक्षिक पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित करने का अवसर मिलता है। इन महत्त्वपूर्ण अवसरों के माध्यम से केन्द्रीय विद्यालय में एक शिक्षक अपने करियर में आगे बढ़ सकता है और अपने कौशल व ज्ञान को विकसित कर सकता है।

शिक्षक का निजी और व्यावसायिक विकास विद्यालय में उनकी भूमिका के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। विद्यालय में छात्र और शिक्षक को मिलकर काम करना होता है ताकि शिक्षक अपने निजी और व्यावसायिक विकास में सुधार करने के साथ विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्रदान करके उनका भविष्य उज्ज्वल कर सके।

इन सभी प्रयासों से केन्द्रीय विद्यालय अध्यापकों के ज्ञान, कौशल, रचनात्मकता, सृजनात्मकता, आत्मविश्वास को बढ़ा कर उनके विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है जो विद्यार्थियों की शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है। आज का समय तकनीक और प्रौद्योगिकी का अवश्य है परन्तु इस आधुनिक युग में भी अध्यापक का स्थान कोई नहीं ले सकता और केन्द्रीय विद्यालय का अध्यापक होने के नाते हमें इन विद्यालयों को और स्वयं को अधिक मजबूत बनाने के लिए काम करना चाहिए ताकि हम अपने विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान कर सकें और देश के भविष्य को उज्ज्वल बना सकें।

शिक्षक है जगत निर्माता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण जगाता
केन्द्रीय विद्यालय में पढ़ाकर, विद्या का प्रकाश फैलाता

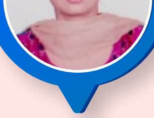

जतिंद्र कौर
पीजीटी हिंदी
पीएम श्री के. वि. टी. बी. पी. भानु, पंचकूला

Scan this QR Code for the audio story.

13

KVS- a Platform for Growth: My Journey from Mentee to Mentor- a Testimony

A growing employee is a boon for an organisation. KVS, a pioneer institute in the education sector, appoints teachers after due scrutiny at various levels. Once appointed, it empowers its employees and provides ample opportunities for growth.

The training programmes organised by KVS provide us with the opportunity to learn, innovate, and collaborate with human resources working in the education field. Collaboration, a 21st-century skill, is the need of the hour. Vidyalaya-level, cluster-level, regional-level, and national-level training programmes provide us with a base to interact with other teachers. This peer learning shapes minds in the desired way.

I joined KVS as a Primary Teacher. Initial training at the regional level and an in-service course at the national level gave me an insight into various dimensions of teaching. It groomed me as a teacher. The sessions organised by KVS helped me understand the NCF 2005.

Kendriya Vidyalaya Sangathan keeps pace with changing technology and designs its training programme to keep all stakeholders updated. It collaborates with giants and gives due exposure to all employees. In 2010, KVS partnered with one of the leading companies in the IT sector and collaborated on the THINKQUEST platform, an online platform designed to promote Project-Based Learning. I was selected as a leader from my Vidyalaya. After completing basic training, KVS provided me with the opportunity to attend higher-level training with Oracle. Thus, I became a Master Trainer of ThinkQuest. This platform also offered me the opportunity to serve as a judge for international online competitions. All this happened when online activity was a distant dream for a majority of students in the country.
Kendriya Vidyalaya Sangathan's Zonal Institutes of Education and Training serve as a hub for training. When we attend training programmes at ZIETs, it seems they work on autopilot mode. Everything from the training hall, mess, and hostel is set to serve the best. Dedicated Training Associates, under the direction of the Director, and qualified Guest Lecturers make sure that the training content percolates to the ground level. I have attended various trainings at ZIETs and have found them very fruitful. ZIETs also provides a base for training by eminent institutes and NGOs working in the educational field.

NEP 2020 emphasises the professional development of teachers. I want to share a trajectory of my professional growth, with special reference to the National Mission for Mentoring. Sec 15.11 of NEP 2020 envisaged a mission to create a pool of mentors who are willing to provide support to mentees. The Ministry of Education, Government of India, assigned the task to the National Council for Teacher Education. NCTE responded aptly by initiating a pilot project to implement NMM, for which 30 schools were selected nationwide. KVS played a significant role in this project, as about 50% of the schools were Kendriya Vidyalayas. PM SHRI Kendriya Vidyalaya, Ordnance Factory, Bhandara, was the only Kendriya

Vidyalaya selected from the Mumbai region.

The pilot project provided me with exposure to some of India's finest talents. It is worth mentioning that a significant portion of the initial group of mentors was from KVS. Teachers, Principals, and Officials from KVS who acted as mentors made us feel at home. The unconditional support from NCTE made the learning process comfortable. Attending sessions with mentors gave insight into novel aspects of education and motivated us to innovate. This opportunity boosted my confidence level. We were in constant touch with the NMM team at NCTE, and hand-holding by KVS officials helped us cross all technical barriers. As in the pilot project stage, there was a limited number of mentors and mentees, allowing us to delve deeply into the mentoring mission. Group sessions facilitated collaboration in which all participants shared ideas on the given topic. Collaboration, a much-needed 21st-century skill, was the basis of all development. Individual sessions with mentors gave a personal touch to the learning process. In an interesting session on 'Art Integrated learning', a mentor showed the artwork he has done in his Navodaya Vidyalaya. We discussed the work done in our Kendriya Vidyalaya under BALA project (Building as a Learning Aid). The exchange of ideas was fabulous and was not limited to a session. Later, working on the same theme, we at PM SHRI KV Bhandara developed an interactive 'Learning Wall'. This project was recognised as an NEP2020 initiative by KVS. A small seed sown in the session evolved into a giant tree.

Meanwhile, I also got an opportunity to attend a training programme jointly organised by Microsoft and CBSE. The guidance by trainers and free access to Microsoft tools gave me the rare opportunity to explore Microsoft for educational purposes. After a thorough assessment, I received the badge of 'Microsoft Certified Teacher'. My self-esteem and satisfaction level were at an all-time high.

We also attended the year-end seminar organised by NMM in New Delhi, where feedback on the mentoring platform was shared in depth. A day's workshop with all mentors and selected mentees from 30 schools provided an excellent platform for 'brainstorming'. The icing on the cake was the sessions by leading educationists, which extended our vision. The bonding between all stakeholders became stronger. This seminar also instilled in me a wish to serve as a mentor.

Guidance by the KVS Regional Office and Headquarters helped us to accelerate. We, in turn, guided other Vidyalayas about NMM. When NCTE called for applications for Mentors, I applied and was selected for the same. During this transition, mentors from various Kendriya Vidyalayas guided me. Earlier, I used to take training sessions at the KVS level; today, I am

taking national-level sessions on the NMM platform as a Mentor. Sessions on Foundational literacy and numeracy, story, and toy-based pedagogy are helping to propagate ways of implementing NEP2020 on a pan-India basis. This growth from teacher to mentor has given new meaning to my career.

Scan this QR Code for the audio story.

J.S.Bhatia
HM
PM SHRI KV O.F Bhandara

14

A Life Shaped by KVs: My Journey of Personal and Professional Growth

For many, Kendriya Vidyalaya is just a workplace. For me, it is home. My journey with Kendriya Vidyalaya has not merely been professional; it has been lifelong, deeply personal, and transformative. As a proud Kendriya Vidyalaya alumnus and now a teacher, the milestones of my life have unfolded within these schools — from my childhood to my career. Each Kendriya Vidyalaya I studied in and later served has not only shaped my profession but also my person.

Growing Up in Kendriya Vidyalaya Classrooms: From Kanyakumari to Kashmir

I had the privilege of starting my schooling at Kendriya Vidyalaya No. 1, Air Force Station, Tambaram, Chennai, in South India. Here, I was fortunate to have been blessed with teachers who combined warmth, discipline, and profound knowledge. My teachers not only imparted lessons from textbooks but also life values that have stayed with me. Even today, I am in touch with many of them — their impact has been that profound.

As a young student, I vividly remember watching many enthusiastic North Indian teachers who had come to South India to teach. Their dedication, cultural adaptability, and enthusiasm left an indelible impression on me. Unknowingly, it planted a seed within me — a desire to one day give back to this system as they had.

Later, I continued my education at Kendriya Vidyalaya Raiwala, Dehradun. This transition brought a whole new set of experiences. Moving from the southern tip of India to the foothills of the Himalayas meant I had to adjust to new environments, languages, and cultural nuances. A stark contrast was that while in South India I had studied most subjects in English, in North India, many subjects were taught in Hindi. Adapting to this linguistic shift as a student was challenging, but it taught me resilience, flexibility, and the ability to learn beyond my comfort zone.

These experiences — stretching from **Kanyakumari to Kashmir** — shaped my cross-cultural understanding. They taught me tolerance and acceptance of different cultures, languages, and religions, lessons that are crucial in today's world. These are the very values I consciously impart to my students now, helping them to grow as responsible, inclusive citizens of modern India.

Teaching in Baramulla: Lessons Beyond the Classroom

When I began my career as a teacher, one of my most memorable postings was Kendriya Vidyalaya Baramulla, Kashmir. A small school with around 400 children, nestled amidst breathtaking natural beauty, it was an experience I deeply cherish.

I still remember the crisp air and quiet mornings as I walked to school in snowfall, my footprints fresh on the white paths. It wasn't just the landscape that left me awestruck; it was the resilience and warmth of the people. Interacting with students who displayed curiosity, determination, and an eagerness to learn in all conditions humbled and inspired me every day.

Being in a smaller Kendriya Vidyalaya meant I wore many hats — teaching, coordinating, mentoring, and even organising community activities. The close-knit school and community helped me develop deeper relationships and greater responsibility.

From Baramulla to Dehradun: Scaling New Heights

My transfer to Kendriya Vidyalaya ITBP, Dehradun, presented a completely different scenario. From a

small school of 400, I stepped into a bustling institution with over 3,000 students. The transition was immense — and invigorating. The pace of activities, the variety of students, and the scale of responsibilities widened my horizons and sharpened my skills.

Here, I learned to manage large classrooms, coordinate inter-school competitions, guide academic excellence, and facilitate cultural events on a bigger canvas. Every day presented a new challenge and an opportunity to grow.

The diversity of Kendriya Vidyalaya students — coming from all parts of India — meant that cross-cultural experiences continued to enrich me, both personally and professionally. Once again, the importance of tolerance, respect, and acceptance was reaffirmed, values that I now actively strive to instil in my students.

A Journey of Lifelong Learning and Professional Growth

Having studied and taught in Kendriya Vidyalayas across the country, I can confidently say that no other institution offers such rich opportunities for holistic growth. Continuous in-service training through workshops, orientation programmes, and refresher courses has kept me abreast of innovative teaching methodologies and pedagogical advancements. Regular exposure to ICT-enabled teaching has empowered me to make classrooms more dynamic and interactive, an essential skill in today's digital age. Equally enriching has been my involvement in cultural and co-curricular activities—whether guiding students for national-level competitions, organising cultural fests, or coordinating CBSE activities—which sharpened my leadership, organisational, and mentoring skills. Moving seamlessly between English and Hindi improved my language proficiency, while national transfers across diverse regions enhanced my empathy, adaptability, and cross-cultural communication. Above all, the diversity of KV students, representing every corner of India, continually reaffirmed the values of tolerance, respect, and acceptance, enriching me personally and professionally and inspiring me to nurture the same in my learners.

Today, as I stand before my students, I often recall the teachers who once stood before me — teachers who inspired me not only to pursue knowledge but also to impart it with passion and purpose. Kendriya Vidyalaya has made me more than a teacher; it has made me a mentor, facilitator, and lifelong learner.

Conclusion

My life in Kendriya Vidyalayas — as a student and a teacher — has given me experiences that are as diverse and beautiful as India itself. From the snowy mornings of Baramulla to the bustling classrooms of Dehradun, and from the gentle warmth of Tamil Nadu to the vibrant spirit of Uttarakhand, every Kendriya Vidyalaya has given me a lesson, a story, and a purpose.

Kendriya Vidyalayas have not only shaped my profession but have also shaped my person. It has given me a platform for personal enrichment, professional excellence, and, above all, a chance to make a difference — just as my teachers once did for me. For this, I remain forever grateful.

Scan this QR Code for the audio story.

Solomon Raj
TGT English
PM SHRI KV I.T.B.P, Dehradun

(दक्षता-आधारित शिक्षण और मूल्यांकन)
(Competency-based Learning and Assessments)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करती है जो रटंत विद्या से आगे बढ़कर आलोचनात्मक सोच, मौलिकता और विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करे। प्रत्येक पाठ को सुस्पष्ट शिक्षण परिणामों और कक्षा-विशिष्ट योग्यताओं के साथ जोड़ा जाना चाहिए। देश भर के शिक्षकों को आधुनिक शैक्षणिक रणनीतियों से लैस किया जा रहा है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षण और मूल्यांकन योग्यता-आधारित हो। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करना है, उन्हें करियर और जीवन दोनों के लिए आवश्यक कौशल से युक्त करना है।

15

ज्ञान की बगिया:
"ज्ञान की बगिया में खिले हर बच्चा"

प्राथमिक विभाग की मुख्याध्यापिका के तौर पर मैंने विद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अनुरूप एक अभिनव पहल "ज्ञान की बगिया" आरम्भ की है। इस परियोजना का उद्देश्य कक्षा 1 और 2 के छोटे विद्यार्थियों को व्यक्तिगत तथा इंटरएक्टिव कार्ड्स के माध्यम से अपनी गति से सीखने का अवसर प्रदान करना है। इस पद्धति से बच्चे न केवल बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) को मजबूत करेंगे, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को आनंददायक और सहज भी पाएंगे।

मेरा दिन- मेरा कार्ड - "ज्ञान की बगिया" में एक विशेष गतिविधि "मेरा दिन – मेरा कार्ड" भी शामिल है। इस व्यवस्था में हर बच्चा प्रतिदिन एक नया इंटरएक्टिव कार्ड पूरा करता है। कार्ड को पूरा करने की प्रक्रिया पूरी तरह लचीली है– विद्यार्थी इसे स्वयं हल कर सकते हैं या अपने मित्र की मदद लेकर भी पूरा कर सकते हैं। इससे बच्चों में आत्मनिर्भरता के साथ-साथ समूह में कार्य करना (टीमवर्क) और आपसी सहयोग की भावना भी विकसित होती है।

अगले दिन विद्यार्थी अपना कार्ड किसी अन्य मित्र के साथ बदल लेते हैं। इस प्रकार, प्रत्येक दिन बच्चों के सामने एक नया कार्ड, नई गतिविधि और नई चुनौती आती है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि सीखना एकरस न हो अर्थात नीरस न हो, बल्कि बच्चों को हमेशा कुछ नया और रोचक अनुभव मिले।

इस आदान-प्रदान की पद्धति से न केवल विद्यार्थियों की निरंतर सक्रियता और रुचि बनी रहती है, बल्कि वे मित्रतापूर्ण प्रतियोगिता के माध्यम से और भी उत्साह से सीखते हैं। बच्चे अपने साथियों की सहायता करते हुए पीयर-ट्यूटरिंग की भूमिका निभाते हैं, जिससे ज्ञान का साझा और गहन आदान-प्रदान होता है। कुल मिलाकर, "मेरा दिन – मेरा कार्ड" सीखने को एक आनंददायक, चुनौतीपूर्ण और सहयोगात्मक अनुभव

में बदल देता है, जो बच्चों के शैक्षिक और सामाजिक विकास के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। यह पहल शिक्षा को केवल पुस्तकों और कक्षाओं तक सीमित नहीं रखती, बल्कि विद्यार्थियों को इंटरएक्टिव तरीके से सीखने के लिए प्रेरित करती है। बहुविषयक विषयों का एकीकरण करके यह सुनिश्चित किया गया है कि बच्चे भाषा, गणित और अन्य विषयों में समान रूप से प्रगति करें। साथ ही, यह पहल बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास पर भी विशेष ध्यान देती है।

ज्ञान की बगिया के मुख्य लाभ :-

ज्ञान की बगिया' कई खूबियों से भरी एक ऐसी सीखने की दुनिया है जहाँ हर बच्चा अपनी गति से आगे बढ़ सकता है। कार्ड-आधारित गतिविधियाँ इसे खेल जैसा मज़ेदार व रोचक बनाती हैं, जिससे बच्चों की सक्रियता स्वतः बढ़ जाती है। इसकी सबसे बड़ी खूबी है—इसे कभी भी, कहीं भी इस्तेमाल किया जा सकता है, और शिक्षक व अभिभावक दोनों ही बच्चों की प्रगति आसानी से देख सकते हैं। यह सभी बच्चों को उनकी क्षमता के अनुसार सीखने का मौका देकर समावेशिता को बढ़ावा देता है। डिजिटल संसाधनों के साथ मिलकर यह तकनीक-समृद्ध शिक्षा का शानदार अनुभव तैयार करती है। खेल-खेल में सीखने की सुविधा अनुभवात्मक अधिगम को मजबूत करती है, जबकि शब्दावली, उच्चारण और लेखन कौशल में सुधार करके भाषा विकास को भी प्रोत्साहित करती है। माता-पिता घर पर इसका उपयोग कर बच्चों के साथ एक सीखने वाला माहौल बना सकते हैं। सबसे बढ़िया बात यह है कि यह कम लागत में तैयार हो सकता है—पुराने आई-कार्ड्स को दोबारा इस्तेमाल कर नए, इंटरएक्टिव कार्ड बनाए जा सकते हैं।

अंत में, 'ज्ञान की बगिया' सीखने को सरल, रोचक और सबके लिए सुलभ बनाने वाली एक प्रभावी पहल के रूप में उभरती है। यह व्यक्तिगत गति से सीखने, खेल-आधारित गतिविधियों, डिजिटल संसाधनों और पारिवारिक सहभागिता को एक साथ जोड़कर एक समग्र अधिगम वातावरण तैयार करती है। कम लागत में तैयार होने के कारण यह नवाचार सभी के लिए उपयोगी और व्यावहारिक है। कुल मिलाकर, यह आधुनिक शिक्षा की बदलती जरूरतों को पूरा करते हुए बच्चों के समग्र विकास की दिशा में एक मजबूत कदम साबित होती है।

पायल गुप्ता
मुख्याध्यापिका
पीएम श्री के.वि. गोल मार्केट, नई दिल्ली

Scan this QR Code for the audio story.

16

Nurturing Competencies: A Classroom Story from Karimnagar

In today's era of globalisation, when skill-based professionals are in high demand, competency-based education has become more than just an academic concept—it is a necessity. Unlike traditional exam-focused teaching, competency-based learning shifts the spotlight onto the learner, making education student-centred and self-directed. It enables learning to occur both inside and outside the classroom, with assessment extending beyond marks to include peer feedback and self-reflection. Yet, for schools like ours, the challenge lies in balancing this vision with the reality of an exam-driven system, where performance in board exams still determines promotion and progress.

At PM SHRI KV Karimnagar, I felt the urgency of bridging this gap. Science, often viewed as a subject heavy with theory and technicalities, can also serve as a window for experiential learning and the development of genuine competencies. To help my students prepare not only for exams but also for life, I embarked on a project that would weave activity-based learning, reading habits, and graded practice into our daily classroom routine.

The first step was to introduce activity-based learning, where the class was divided into peer groups with a mix of abilities and competencies. Each group was assigned an activity, which they had to plan and present collectively. One such session still lingers in memory: when the class explored the sounds produced by different musical instruments. The students in charge transformed the music room into a lively laboratory of sound. As they struck chords and beat drums, they explained the science of vibrations with a confidence that surprised even them. The rest of the class listened with rapt attention, learning not only about instruments but also about collaboration, expression, and the joy of discovery. Group discussions and presentations gave each student a voice, encouraged participation, and nurtured their sense of competence.

Alongside activities, I placed a strong emphasis on textbook reading. I had observed that students rarely opened their NCERT books outside of exam season. Therefore, I restructured our classroom periods into sessions that included brainstorming, learning, reading, and evaluation. Students were encouraged to bring their textbooks every day, to highlight key points, frame and answer questions, and carefully study diagrams and labels. Gradually, they began to see the textbook not as a burden but as a guide, a source of answers, and a friend in their preparation. They learnt to use technical terms correctly, attempted diagrams with clarity, and faced exam questions with growing confidence. Most importantly, they developed the habit of reading—a skill that would serve them far beyond the classroom.

The third pillar of this project was the use of graded worksheets, carefully designed to cater to varying levels of learning ability. Without explicitly telling students that they were being grouped, I distributed question banks and practice sheets of different difficulty levels. This subtle differentiation allowed each student, from high achievers to slow learners, to work at their own pace without fear of comparison. As students practised and progressed, I watched their confidence bloom. Many who once hesitated to answer even simple questions began attempting more challenging ones, interpreting problems correctly, and writing with conviction. This approach not only improved results but also helped my class X students achieve a 100% pass rate, with encouraging outcomes in classes IX and VIII as well.

These practices—though seemingly simple—proved transformative when carried out in the true spirit of

understanding individual student needs. They motivated learners to read, explore, and engage actively, fostering deeper comprehension and building self-belief. More than just raising exam scores, the effort cultivated learners who could identify and harness their own competencies, who were no longer afraid of science but rather excited by it.

Looking back, the journey reminds me that competency-based education is not about discarding the exam system but about enriching it. By blending experiential learning with structured preparation, motivating students to participate, and providing them with tools suited to their levels, we can prepare them not only for good academic results but also for life beyond school. The smiles of my students as they discover their strengths remain the most significant outcome of all.

Scan this QR Code for the audio story.

E Vandana
PGT Biology
PM SHRI KV Karimnagar

17

सशक्त शिक्षक, सशक्त के. वि. सं. : क्षमता निर्माण की झलकियाँ

केंद्रीय विद्यालय संगठन (KVS) के अंतर्गत शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान (ज़ोनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग) ग्वालियर, व्यावसायिक विकास के क्षेत्र में उत्कृष्टता का प्रतीक है। यह संस्थान के.वि.सं. के शिक्षण एवं गैर-शिक्षण कर्मचारियों की शैक्षिक और प्रशासनिक क्षमताओं को निखारने के लिए समर्पित है। यहाँ प्रशिक्षण पारंपरिक तरीकों से आगे बढ़कर अनुभवात्मक, गतिविधि-आधारित और आनंदमय शिक्षण पद्धतियों पर आधारित है, जो प्रशिक्षण की परिभाषा को ही नया रूप देता है।

यहाँ उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो शिक्षकों और गैर-शिक्षण कर्मचारियों दोनों को आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, नई शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) और समग्र विकास के अनुरूप प्रशिक्षित करते हैं।

जीट, ग्वालियर प्रशिक्षण के उद्देश्य

नई शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों के अनुरूप जीट, ग्वालियर अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करता है:

- क्षमता निर्माण: शिक्षण एवं प्रशासनिक कौशल का विकास।
- अनुभवात्मक शिक्षा: वास्तविक गतिविधियों के माध्यम से गहन समझ।
- नवाचारपूर्ण शिक्षण: रचनात्मक, समावेशी और तकनीकी दृष्टिकोण।
- आनंदमय शिक्षा: सकारात्मक वातावरण में आजीवन सीखने की प्रेरणा।

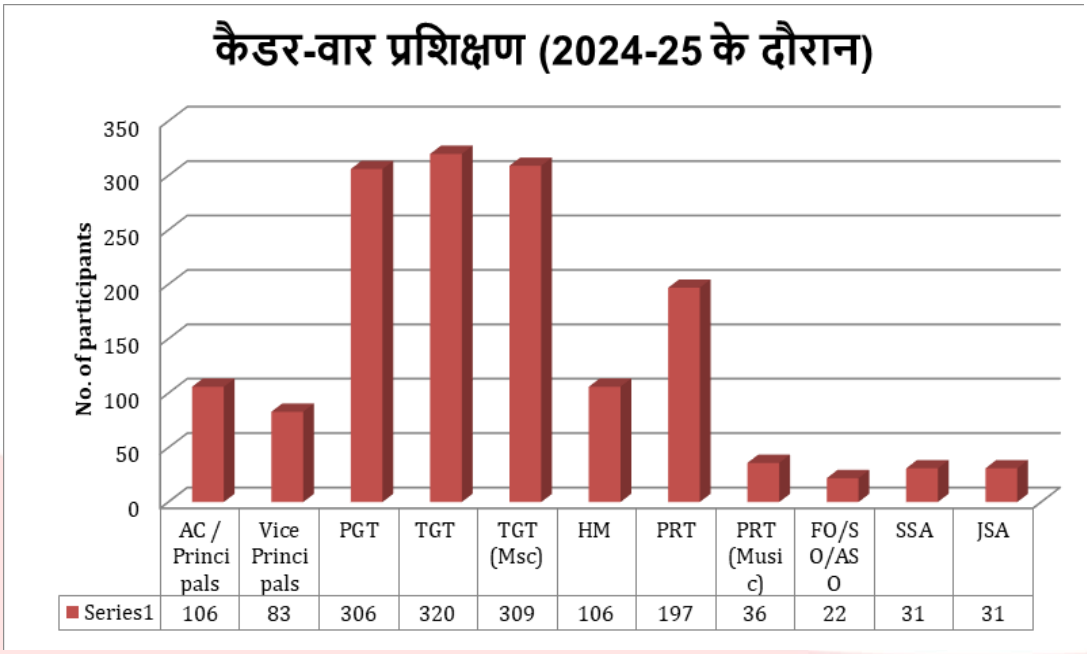

- समग्र विकास: भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सहयोग और आत्मचिंतन को बढ़ावा।
- नीति उन्मुखता: एनईपी 2020 और अन्य राष्ट्रीय शैक्षिक दिशानिर्देशों से सामंजस्य।

कैडर-वार प्रशिक्षण: वर्ष 2024-25 में जीठ, ग्वालियर ने कुल 1547 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया, जिनमें सेवाकालीन प्रशिक्षण (इन-सर्विस कोर्स), इंडक्शन कोर्स, ओरिएंटेशन कार्यक्रम और विभिन्न कार्यशालाएँ शामिल थीं।

प्रशिक्षण की विशेषताएँ

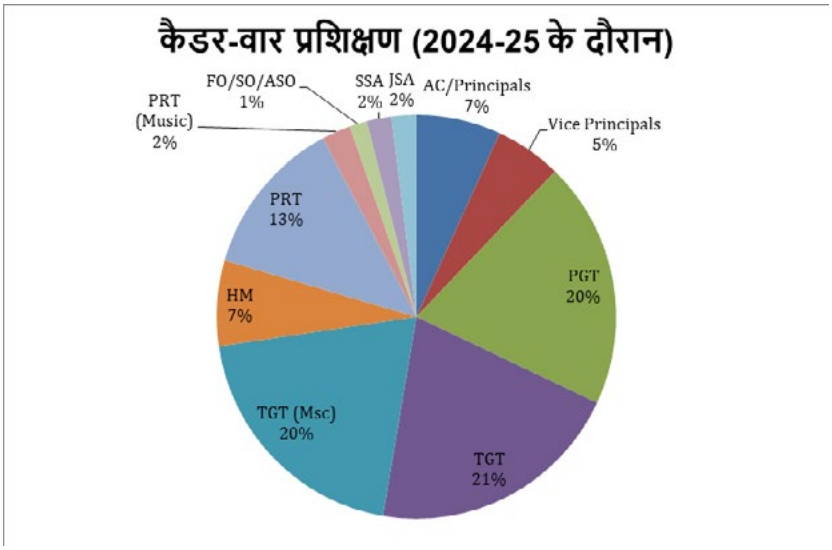

माहवार प्रशिक्षण

माहवार प्रतिभागियों की संख्या (2024-25)

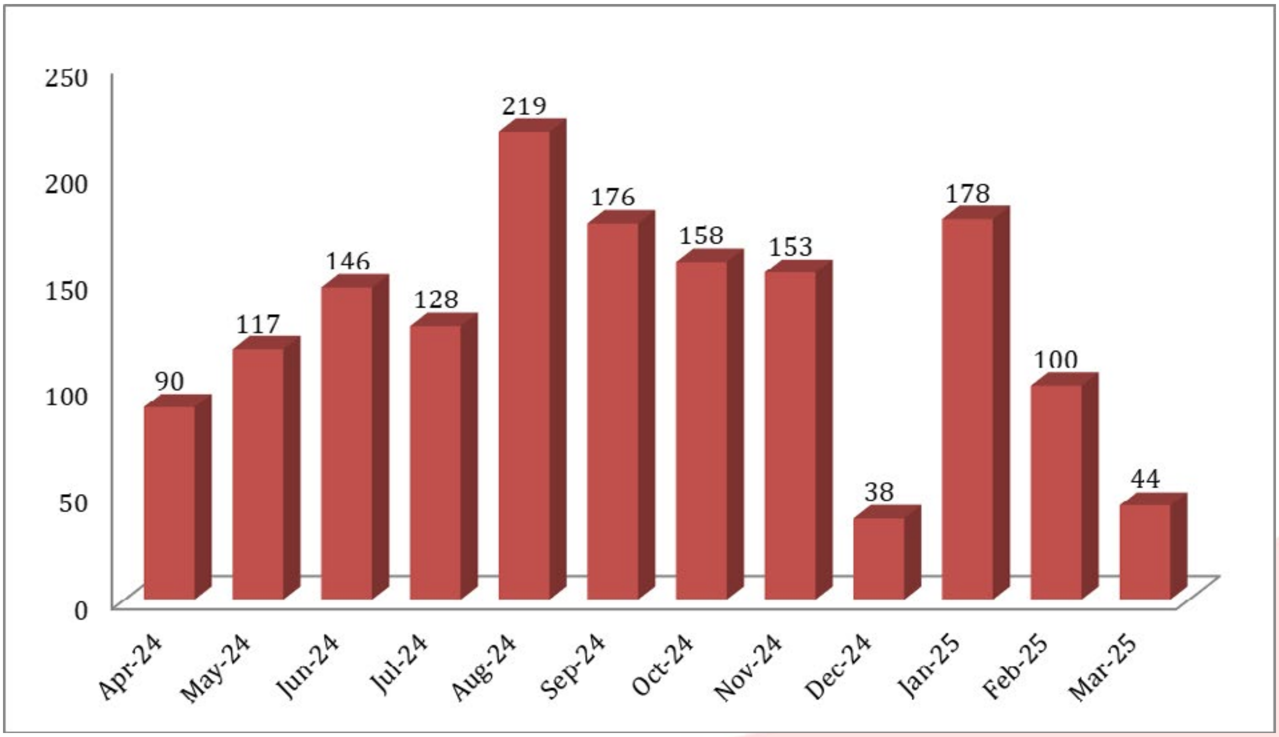

Total Participants:-1547

माहवार प्रतिभागियों की संख्या (2024-25)

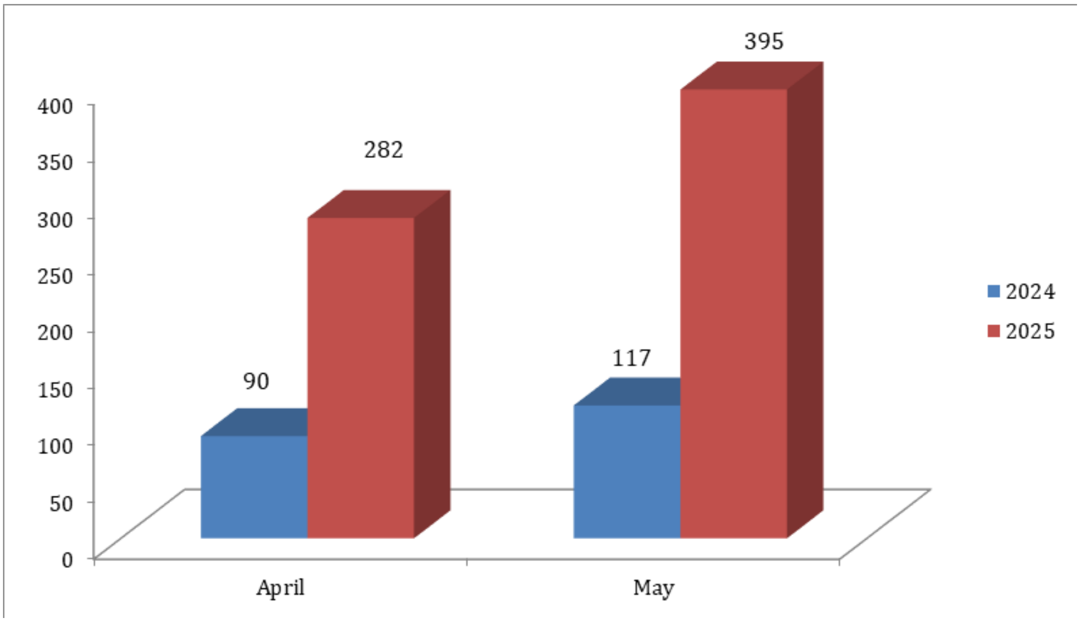

माह-वार प्रशिक्षण: प्रशिक्षण कैलेंडर के अनुसार वर्ष भर विभिन्न समूहों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किए गए।

अनुभवात्मक शिक्षा: केस स्टडी, सिमुलेशन और रोल-प्ले जैसी गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागी सिद्धांत और व्यवहार को जोड़ते हैं तथा वास्तविक समस्याओं का समाधान खोजते हैं।

गतिविधि-आधारित शिक्षण (ABL): जटिल अवधारणाओं को सरल बनाने के लिए गणित, विज्ञान, भाषाओं और प्रशासन से जुड़े हाथों-हाथ कार्य दिए जाते हैं। प्रशिक्षण में खेल, क्विज़, समूह चर्चा और प्रोजेक्ट्स शामिल होते हैं।

आनंदमय शिक्षण वातावरण:
संगीत, कहानी-वाचन, सहयोगात्मक कार्य और माइंडफुलनेस अभ्यासों के माध्यम से तनावमुक्त और रोचक माहौल तैयार किया जाता है।

कला एवं खेल आधारित शिक्षण: एनईपी 2020 के अनुरूप शिक्षण में कला और खेल को एकीकृत करने के तरीके प्रतिभागियों को सिखाए जाते हैं।

प्रौद्योगिकी एकीकरण: दीक्षा, ई-पाठशाला, वर्चुअल लैब्स, स्मार्ट बोर्ड और एलएमएस जैसे आईसीटी टूल्स का प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही डिजिटल सुरक्षा और ब्लेंडेड लर्निंग पर सत्र आयोजित होते हैं।

समावेशी शिक्षा एवं एनईपी फोकस: सत्रों में मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता, बहुभाषावाद, क्षमता-आधारित शिक्षा और मूल्यांकन सुधार पर ध्यान दिया जाता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी पद्धतियों पर भी कार्यशालाएँ होती हैं।

गैर-शिक्षण स्टाफ का प्रशिक्षण: ऑफिस प्रक्रियाएँ, ई-गवर्नेंस, वित्त प्रबंधन और संचार कौशल पर केंद्रित प्रशिक्षण दिए जाते हैं।

सहकर्मी शिक्षण: प्रतिभागियों के बीच श्रेष्ठ गतिविधियों और अनुभवों को साझा करने की परंपरा, जिससे सहयोगात्मक विकास होता है।

स्वास्थ्य उन्मुख प्रशिक्षण: प्रतिदिन प्रातः 6 से 7 बजे योग सत्र आयोजित किए जाते हैं, ताकि प्रतिभागी शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकें और यह उनकी दिनचर्या का हिस्सा बने।

निष्कर्ष

जीठ, ग्वालियर, शिक्षकों और कर्मचारियों के पेशेवर विकास में रूपांतरणकारी भूमिका निभा रहा है। यहाँ के प्रशिक्षण केवल सत्र भर नहीं होते, बल्कि जीवन और कार्यशैली बदल देने वाले अनुभव होते हैं। प्रत्येक प्रशिक्षण का समापन *कार्यान्वित करने योग्य सुझावों, फीडबैक और ठोस परिणामों* के साथ किया जाता है।

यह संस्थान प्रशिक्षण के बाद भी प्रतिभागियों से निरंतर जुड़ा रहता है और एक-दो महीने बाद ऑनलाइन रिफ्लेक्टिव सत्र आयोजित करता है, ताकि वास्तविक कक्षाओं में प्रशिक्षण के प्रभाव का आकलन किया जा सके।

आधुनिक उपकरणों, नवाचारी तरीकों और आनंदपूर्ण शिक्षण भावना से सुसज्जित कर, जीठ ग्वालियर ऐसा सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न कर रहा है जो पूरे के.वि.सं. नेटवर्क के हज़ारों विद्यार्थियों तक पहुँचता है।

Scan this QR Code for the audio story.

18

Nurturing Competence from the Start: A Primary Teacher's Perspective

When I look back at my years as a primary school teacher in Kendriya Vidyalaya Kadapa, I see how much classrooms have changed. There was a time when learning meant memorising pages of textbooks, repeating facts, and preparing for tests that judged success in marks alone. Today, that picture is fading. In its place, a brighter, more hopeful vision is taking shape—one where learning is meaningful, joyful, and deeply connected to the child's world. Competency-Based Learning and Assessment (CBLA), closely aligned with the National Education Policy (NEP) 2020, has been at the heart of this transformation.

What Competency Means in the Early Years

Competency-based learning is not about rushing through syllabus; it is about ensuring that children can actually apply what they are learning. For a six-year-old in Class I, this does not mean solving complex problems or writing long essays. It means grasping the magic of letters and numbers, listening with understanding, speaking with confidence, recognising patterns, and learning the values of empathy and responsibility.

In English, that may look like a child listening to a story and retelling it in their own words, reading sentences with comprehension, or tracing letters until they grow bold enough to write. In Mathematics, it could be counting beads, measuring pencils with strips of paper, or comparing the weight of objects on a simple balance. These small, hands-on tasks are not just activities—they are stepping stones toward literacy, numeracy, and life skills.

How Competency-Based Learning Comes Alive

In my own classroom, English lessons often begin with stories, rhymes, and picture reading. When we read "The Magic Tree," I asked my students to imagine different endings, to describe the characters, and to act out the scenes. Their excitement told me that they were not only following the plot but also thinking beyond it. Reading sessions grew more confident when children worked in pairs, helping each other with phonics and new words. Writing, too, became less about spelling mistakes and more about expression—whether through tracing, drawing, or building words with pictures.

Maths, once dreaded, became a game of discovery. Counting with beads, grouping ice-cream sticks, or solving the puzzle of how to share fruits among friends gave meaning to numbers. Clay turned into triangles and circles, pencils became rulers, and everyday objects became tools for comparison. Slowly, the subject that many children feared became one they looked forward to, because it connected with their daily lives.

Assessing for Growth, Not Just Grades

Perhaps the most refreshing change in CBLA is how we assess learning. Instead of waiting for exams to declare winners and losers, assessment

now becomes part of the learning journey. Learning outcomes are clear and age-appropriate: can the child retell a story, solve a simple sum, or recognise shapes? Rubrics replace marks, with feedback that guides improvement rather than discourages.

Portfolios full of drawings, writings, and teacher notes capture each child's progress over time. Anecdotal records tell the story of shy children who found their voice in group work or of hesitant readers who bloomed when given space and patience. Assessment is no longer a verdict; it is a mirror that reflects growth.

Overcoming the Hurdles

The path to CBLA has not been without challenges. In the beginning, there were few ready-made resources, and teachers spent long hours creating worksheets and activities. Training was essential, as was convincing parents who still expected traditional exams and ranks. Maintaining portfolios in large classrooms also required effort.

But together, we found ways forward. Teachers began sharing lesson plans and tools with one another. Parents were invited to orientation programmes where they saw their children learn joyfully and understood the value of this new approach. Digital folders and apps made planning and record-keeping easier. Step by step, the hurdles turned into opportunities for collaboration.

The Visible Impact

A year into this journey, the results were undeniable. Children grew more curious and confident. They began asking questions, connecting ideas across subjects, and applying what they learned outside the classroom. Learning gaps, especially

in reading and numeracy, were caught early and addressed with care. Even children who struggled with writing found their strengths in oral activities or visual tasks. Peer learning flourished, with children helping each other and celebrating each other's progress.

A Step Towards NEP's Vision

What gives me the greatest satisfaction is knowing that this approach aligns so beautifully with NEP 2020. The policy calls for foundational literacy and numeracy by Grade 3, for experiential and joyful learning, and for assessment that supports growth rather than rote memory. Through CBLA, we are already seeing those goals come alive

in our classrooms. The NIPUN Bharat Mission, with its focus on foundational skills, finds its roots here too—and we in Kendriya Vidyalayas are proud to be part of that mission.

Looking Ahead

Technology is also beginning to play its part. Interactive apps help children learn letters and numbers at their own pace. Audio-visual tools make stories and concepts come alive for different types of learners. Portfolios and assessment data are easier to maintain and share with parents. These tools add a new dimension to CBLA without taking away the warmth of human interaction.

For me, as a primary teacher, competency-based learning has redefined what it means to teach. It is no longer about finishing chapters or preparing for exams. It is about helping children think, express, create, and grow. When students understand why they are learning and how it connects to their lives, education transforms from a race into a journey—a journey of joy, discovery, and confidence.

And in every little step of that journey—whether a child reads a sentence for the first time, measures a pencil, or shares a story with a smile—I see the future of education taking shape, one competency at a time.

Scan this QR Code for the audio story.

P. Lokarchana
PRT
PM SHRI KV Kadapa

(सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा और मूल्य-आधारित शिक्षा)
(Socio-emotional Learning and Value-based Education)

Education is about transforming lives and shaping pupils into worthy future citizens of the nation. In today's digital age, children are increasingly becoming mechanical and robotic, with declining moral values and a diminishing social and emotional quotient. Hence, there is no denying that socio-emotional learning and value-based education are the need of the hour. It is the foremost responsibility of teachers to identify and integrate opportunities within their classroom interactions and content delivery that nurture empathy, compassion, and integrity. By refining the finer sensibilities of new-age learners, educators can help them grow into emotionally balanced, morally upright, and socially responsible human beings.

19

सामाजिक-भावनात्मक अधिगम एवं मूल्य-आधारित शिक्षा

भारत में शिक्षा परंपरागत रूप से अकादमिक उत्कृष्टता पर केंद्रित रही है। किंतु 21वीं सदी में परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं—आज केवल बौद्धिक क्षमता ही पर्याप्त नहीं, बल्कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व की भी आवश्यकता है।

प्रधानाचार्य के रूप में मैंने अनुभव किया कि यदि विद्यार्थियों को केवल अंक प्राप्ति की ओर मोड़ा जाए तो वे जीवन के बड़े संघर्षों के लिए तैयार नहीं हो पाते। इसलिए हमने अपने विद्यालय में **सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL)** और **मूल्य-आधारित शिक्षा (VBE)** को शिक्षा की धुरी बनाया।

सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विद्यार्थी अपनी भावनाओं को समझते और नियंत्रित करते हैं, सकारात्मक लक्ष्य निर्धारित करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं, दूसरों के प्रति सहानुभूति विकसित करते हैं, जिम्मेदारी पूर्ण निर्णय लेना सीखते हैं। हमने विद्यालय में इन पाँच प्रमुख क्षमताओं—आत्म-जागरूकता, आत्म-प्रबंधन, सामाजिक जागरूकता, संबंध कौशल और जिम्मेदार निर्णय—को विकसित करने के लिए गतिविधियाँ शुरू कीं।

विद्यार्थियों को आज डिजिटल विचलनों, बढ़ते दबाव और सामाजिक विषमताओं का सामना करना पड़ता है। हमारे विद्यालय में हमने देखा कि SEL गतिविधियों जैसे *कक्षा वाद-विवाद, सामूहिक चर्चा, परामर्श सत्र* से न केवल उनके

आत्मविश्वास में वृद्धि हुई बल्कि उनका अकादमिक प्रदर्शन भी बेहतर हुआ।

हमारे विद्यालय में हमने **सत्य, सेवा, करुणा, जिम्मेदारी और सम्मान** जैसे मूल्यों को केवल पुस्तकों से नहीं बल्कि व्यवहार और क्रियान्वयन से सिखाने की पहल की। प्रातःकालीन सभा में 'आज का विचार', देशभक्ति गीत और नैतिक प्रसंग विद्यार्थियों के मन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। एनईपी 2020 ने विद्यालयों को प्रेरित किया कि शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर **अनुभवात्मक अधिगम, जीवन कौशल और नैतिक शिक्षा** के साथ जोड़ा जाए। हमने *कक्षा 6 से 12* तक SEL और VBE को गतिविधियों, नाट्य प्रस्तुति, सामुदायिक सेवा और परियोजनाओं में समाहित किया।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन सदैव विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति प्रतिबद्ध रहा है। इसी उद्देश्य के अंतर्गत हमारे विद्यालय में मूल्य-शिक्षा के सुदृढ़ ढांचे को अपनाते हुए जागरूकता सप्ताह, सद्भावना दिवस तथा सामुदायिक एकता सप्ताह जैसे आयोजनों का सफलतापूर्वक संचालन किया गया। इन पहलों ने विद्यार्थियों में न केवल राष्ट्रीय चेतना को सशक्त किया, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों की समझ भी विकसित की। विद्यालय में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL) को प्रोत्साहित करने हेतु परामर्शदाता की उपलब्धता, जीवन कौशल सत्रों का आयोजन और सहपाठी परामर्श कार्यक्रम जैसी पहलें संरचित रूप से लागू की गईं। कोविड काल जैसे चुनौतीपूर्ण समय में भी विद्यालय ने डिजिटल साधनों के प्रभावी उपयोग से ऑनलाइन प्रातःकालीन सभाओं, वेबिनारों और संवाद सत्रों के माध्यम से SEL को निरंतरता प्रदान की।

विद्यालय में संचालित इको क्लब, इंटीग्रिटी क्लब सहित विभिन्न सृजनात्मक मंचों ने विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जिम्मेदारी, नैतिकता और सहानुभूति जैसी मूलभूत मान्यताओं को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वरिष्ठ विद्यार्थियों द्वारा कनिष्ठ छात्रों को शैक्षणिक सहायता और भावनात्मक सहयोग प्रदान करने की परंपरा ने विद्यालय में सौहार्दपूर्ण वातावरण को और मजबूत किया। साथ ही, अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए मूल्य-आधारित पेरेंटिंग वर्कशॉप्स आयोजित की गईं, जिनके माध्यम से घर और विद्यालय दोनों स्तरों पर मूल्यों की एकरूपता और सकारात्मक अनुशासन का वातावरण बन सका।

मूल्य-आधारित शिक्षा को विद्यालयीन प्रक्रियाओं में प्रभावी ढंग से शामिल करने में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आईं। प्रशिक्षित शिक्षकों की सीमित उपलब्धता तथा पाठ्यक्रम की व्यस्तता के कारण प्रारंभिक चरण में इसके कार्यान्वयन में कठिनाइयाँ रहीं। इसके अतिरिक्त, मूल्यों और भावनात्मक विकास का आकलन करना भी सहज नहीं था। बावजूद इसके, सतत् शिक्षक-प्रशिक्षण, चिंतनात्मक डायरी लेखन, सहपाठी समीक्षा और नियमित व्यवहार-पर्यवेक्षण जैसी तकनीकों ने इन चुनौतियों को दूर करते हुए विद्यालय में मूल्य-शिक्षा को सफलतापूर्वक स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रधानाचार्य के रूप में मेरा दृढ़ विश्वास है कि **शैक्षणिक सफलता तभी स्थायी होती है जब वह भावनात्मक दृढ़ता, नैतिकता और सामाजिक चेतना के साथ जुड़ी हो।** हमारे विद्यालय में SEL और VBE की पहल ने विद्यार्थियों को न केवल बेहतर विद्यार्थी बल्कि बेहतर इंसान बनने की दिशा में अग्रसर किया है। यही एनईपी 2020 और केन्द्रीय विद्यालय संगठन की सच्ची भावना है।

कृष्ण कुमार दुबे,
प्रधानाचार्य
पीएम श्री के.वि. कोस्सीपोर

Scan this QR Code for the audio story.

20

Socio-Emotional Learning & Value-Based Education

A Small Effort That Touched Young Hearts

Teaching young children has always been close to my heart — not just lessons from books, but the values they can carry for a lifetime.

Some time back, I got an idea. A Bal Mela in school — not just for fun, but to teach children something more meaningful. With the support of our Principal, Rajendran Sir, who encouraged me from the outset, I decided to proceed. His kind words and belief in me gave me the confidence I needed. Our Headmistress, Smita Ma'am, gave her full support on the ground, whether it was helping organise materials or motivating the children. She was there throughout, like a firm hand on my shoulder.

We included the activity under the Scouts and Guides category. I explained to the students: "You will create your own stalls. You will plan what to sell. You will decorate, advertise, and interact." The response? Pure excitement. They began generating ideas on their own, including handmade craft items, snacks, bookmarks, games, and small gifts. They made posters. Discussed prices. Talked about customers.

I stood there watching and smiling. They were thinking, collaborating, learning — without even knowing they were learning. They were solving problems, managing tasks, and making decisions. For me, that was the beginning of something special.

Before the Mela, I had one more thing to tell them. Whatever amount we earn, we will donate it to an orphanage. Their eyes widened. Not with confusion, but joy. I could see it in their faces — they felt proud that their little effort would help someone else.

The day of the Bal Mela was full of colour, laughter, and energy. Children calling out to teachers and visitors. "Please come to our stall!" "Ma'am, we have a game!" Some ran around, some explained things with such confidence. For a moment, they weren't students — they were responsible, independent little souls.

After the event, we all visited the orphanage, where we donated. That visit — it changed something in all of us. The children who always laughed loudly became quiet. The ones who ran carefree now sat still, thinking. They shared sweets, talked to the children, and played with them. But their expressions said more than words ever could. One boy came to me quietly and said, "Ma'am, don't they have parents like us?" I nodded slowly. He just looked away, eyes filled with thoughts he couldn't express.

And then came the most unexpected thing. One student — often naughty, always disturbing his classmates — started behaving differently. He became polite. More careful with his words. More thoughtful. His parents noticed and called me. "We don't know what happened, Ma'am, but he's changed." It wasn't just him. Many parents called me after that. Some said their kids packed old toys to give away. Some started asking questions about helping others. One mother said, "Ma'am, now my son says he wants to open a home for poor children when he grows up." I was speechless.

This wasn't just about a school event anymore. It had touched something deeper. I realised — values like kindness, empathy, and gratitude are best taught

when children experience them. You can't force it with rules or chapters. But when they see the world and feel the emotions of others, something shifts inside. I'm so grateful to Rajendran Sir, who gave me the space to take this step. His quiet support meant a lot. And Smita Ma'am — her practical help, her presence during every small and big task — that's what made this possible. She was not just a guide, but a partner in this whole journey.

Today, when I look back, I don't just see a successful event; I know a moment that stayed in children's hearts. Maybe even changed their path a little. And that, to me, is the real meaning of education. I will continue doing such things. Not grand things. But small steps that bring light into their minds and hearts. Because if one little boy learns to be more compassionate, if one little girl decides to share instead of keep, then everything is worth it.

Scan this QR Code for the audio story.

Hina Kausar
PRT
PM SHRI K V Payyanur

21

मूल्य और भावनाएँ: आधुनिक शिक्षा की अनिवार्य नींव

आज की शिक्षा व्यवस्था में बच्चों के सामने केवल पढ़ाई-लिखाई से जुड़ी चुनौतियाँ ही नहीं, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और मानसिक कठिनाइयाँ भी लगातार बढ़ रही हैं। शिक्षा का असली उद्देश्य केवल अंक और प्रमाणपत्र प्राप्त करना नहीं है, बल्कि ऐसा व्यक्तित्व गढ़ना है जो संवेदनशील, जिम्मेदार और नैतिकता से युक्त हो। आजकल सामाजिक मूल्यों और मानवीय संस्कृतियों का पतन हमें देखने को मिल रहा है। कहीं न कहीं इसका कारण सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा और नैतिक मूल्य आधारित शिक्षा का अभाव है। विद्यार्थियों को भविष्य में अच्छे नागरिक बनाने के लिए आवश्यक है कि विद्यालय केवल बौद्धिक ज्ञान न दें, अपितु उन्हें सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा और मूल्य आधारित शिक्षा भी प्रदान करें। यह शिक्षा बच्चों को अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और दूसरों के साथ स्वस्थ संबंध बनाने की क्षमता प्रदान करेगी।

आज के समय में केवल बच्चे ही नहीं, बल्कि युवा, वयस्क भी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। प्रतिस्पर्धा, तनाव, अकेलापन, तकनीकी साधनों पर अत्यधिक निर्भरता इन सबका असर व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। यदि विद्यालय स्तर पर ही बच्चों को आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, सहयोग और सहानुभूति जैसे कौशल सिखा दिए जाएँ तो वे जीवन में आने वाली चुनौतियों को संतुलित रूप से झेल पाएँगे। इन्हीं चुनौतियों के समक्ष जब एक नवयुवक या नवयुवती खुद को अकेला पाता है और भावनात्मक रूप से असफल समझता है, तो उसके दुष्परिणाम हमें और आपको देखने को मिलते हैं।

मूल्य आधारित शिक्षा का अभाव ही विश्व में अशांति का मूल कारण बना हुआ है। दैनिक रूप से यह केवल हमारे देश को ही नहीं बल्कि विश्व को भी दीमक की तरह भीतर से खा रहा है। देशों के बीच मतभेद, लड़ाई-झगड़े, धार्मिक असंतोष इसका ही परिणाम है। नैतिकता, ईमानदारी, जिम्मेदारी, करुणा और देशभक्ति जैसे मूल्य समाज की नींव हैं। यदि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन पर केन्द्रित रहेगी और मूल्यों की अनदेखी करेगी, तो विद्यार्थी सफल तो होंगे, लेकिन संवेदनशील नागरिक नहीं बन पाएँगे।

विद्यालयों में छात्रों के संवेदनशील एवं सहयोगी व्यक्तित्व के निर्माण के लिए विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों का समावेश अत्यंत प्रभावी सिद्ध होता है। समूह चर्चा, भूमिका-अभिनय, कहानी-वाचन,

कथानक तथा नाट्य-प्रयोग जैसे माध्यम न केवल विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति-कौशल विकसित करते हैं, बल्कि उनमें मानवीय संवेदनाओं की गहरी समझ और एक-दूसरे के प्रति सहयोग की भावना भी उत्पन्न करते हैं। समूह-कार्य की प्रक्रिया उन्हें सामूहिक जिम्मेदारी निभाने, निर्णय साझा करने और सहभागिता के महत्व को समझने का अवसर प्रदान करती है।

चित्रकला, संगीत, नृत्य और खेल जैसी सह-शैक्षिक गतिविधियाँ बच्चों को अपनी भावनाओं को स्वस्थ व रचनात्मक रूप से व्यक्त करने का मंच उपलब्ध कराती हैं। इसी प्रकार विद्यालय की प्रार्थना सभा, सांस्कृतिक कार्यक्रम

और नैतिक मूल्यों से जुड़े आयोजन बच्चों के दैनिक जीवन में नैतिकता, अनुशासन और मानवता के सिद्धांतों को सहज रूप से एकीकृत करने में सहायक होते हैं।

विद्यालयों में मूल्य-आधारित शिक्षा और सामाजिक-भावनात्मक विकास को सुदृढ़ बनाने का एक महत्वपूर्ण, परंतु अपेक्षाकृत कम विकसित पहलू है—मार्गदर्शन और परामर्श की संगठित व्यवस्था। इसका मूल उद्देश्य विद्यार्थियों के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास में व्यक्तिगत सहयोग प्रदान करना है, ताकि वे चुनौतियों का सामना आत्मविश्वास के साथ कर सकें। व्यक्तिगत परामर्श विशेष रूप से उन बच्चों के लिए लाभकारी होता है जो कम आत्मविश्वास, व्यवहारगत कठिनाइयों या भावनात्मक असंतुलन से जूझ रहे होते हैं; यह उन्हें अपनी भावनाओं को पहचानने, समझने और संतुलित रखने में सहायता प्रदान करता है।

समूह परामर्श भी समान रूप से प्रभावी है, क्योंकि यह विद्यार्थियों के बीच सहयोग, संवाद, परस्पर सम्मान और सहानुभूति की भावना को सुदृढ़ करता है। साथ ही, शिक्षकों को परामर्श एवं मार्गदर्शन संबंधी प्रशिक्षण उपलब्ध कराने से वे कक्षा-शिक्षण में अकादमिक उद्देश्यों के साथ-साथ भावनात्मक एवं मूल्य-आधारित शिक्षा को भी संतुलित रूप से शामिल कर पाते हैं। इस प्रकार परामर्श व्यवस्था विद्यालयों में विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए एक सशक्त आधार प्रदान करती है।

आज के युग में विद्यार्थी तनाव, चिंता, नशे की लत, अति आकांक्षाएँ, आक्रामकता, प्रतिस्पर्धा, पारिवारिक अपेक्षाएँ, आत्महत्या, सामाजिक तुलना आदि गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं। यहीं सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा और मूल्य आधारित शिक्षा एक जीवन रक्षक भूमिका निभाती है। यह शिक्षा बच्चों को कठिनाइयों से निपटने का साहस, आत्म-नियंत्रण, धैर्य और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता प्रदान करती है।

विद्यालयों में मार्गदर्शन की कला सभी शिक्षकों में होती है, बस समय रहते उसका उचित उपयोग इस प्रक्रिया को और गहराई देता है।

इस प्रकार यदि विद्यालय में सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा, मूल्य आधारित शिक्षा और उचित समय पर सही परामर्श व मार्गदर्शन दिया जाए तो बच्चों के जीवन में आशानुरूप संतुलन और सुरक्षा का भाव स्थाई रूप से स्थापित हो सकता है, जोकि सामाजिक, मानसिक और वैश्विक शांति का मूल है।

Scan this QR Code for the audio story.

रश्मि रानी
प्राथमिक शिक्षिका
के.वि. मैथन डैम, धनबाद (झारखंड)

(स्कूलों में नेतृत्व और स्कूल संस्कृति में बदलाव)
(Leadership in Schools and Transforming School Culture)

विद्यालय नेतृत्व वो प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यालय के प्रधानाचार्य, शिक्षक व विद्यार्थी एक साझा दृष्टि बनाते हैं, लोगों को जोड़ते हैं और बदलाव का मार्ग प्रशस्त करते हैं। विद्यालय संस्कृति उन मान्यताओं, रिवाज़ों और दृष्टिकोणों का समग्र रूप है जो विद्यालय को एक "पहचान" देता है। आज, विद्यालय पारंपरिक कक्षाओं तक सीमित नहीं रह गए हैं; वे जीवंत शिक्षण समुदायों में बदल गए हैं जहाँ संवाद, सहयोग और रचनात्मकता फल-फूल रही है—जो आत्मविश्वासी और ज़िम्मेदार छात्र नेताओं के उभरने का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। जब विद्यालय में सच-मुच सुधार करना हो, तो नेतृत्व द्वारा संस्कृति में बदलाव लाना ज़रूरी होता है ताकि नई सोच, बेहतर शिक्षण पद्धतियाँ और सकारात्मक माहौल सभी में जड़ें जमा सकें।

22

स्वच्छ भारत: स्वच्छ विद्यालय अभियान के अंतर्गत एक नवाचारी पहल – 'स्वभा'

महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी जागरूकता प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। उन्होंने "स्वच्छ भारत" का सपना देखा था, जिसके लिए वह चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए कार्य करें। महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया और इसके सफल कार्यान्वयन हेतु भारत के सभी नागरिकों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की गई।

इसके अंतर्गत स्वच्छ भारत: स्वच्छ विद्यालय भी शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार का एक राष्ट्रीय अभियान है। इस अभियान की एक प्रमुख विशेषता यह सुनिश्चित करना है कि भारत के प्रत्येक विद्यालय स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए कार्यप्रणाली को और अच्छी तरह से लागू करें जिससे विद्यालयों में विद्यार्थियों सहित सभी स्वेच्छा से स्वच्छता बनाए रखें। यह अत्यंत आवश्यक है कि विद्यालय में स्वच्छ जल व्यवस्था, साफ-सफाई और स्वच्छता सुविधाओं का आसानी से उपलब्धता होनी चाहिए। स्कूलों में पानी, साफ-सफाई और स्वच्छता से तात्पर्य तकनीकी और मानव विकास घटकों के ऐसे संयोजन से है जो स्कूल में एक स्वस्थ वातावरण बनाने और उचित स्वास्थ्य एवं स्वच्छता परिपाटी विकसित करने या उनका समर्थन करने के लिए आवश्यक हैं। मानव विकास घटक वे गतिविधियाँ हैं जिनसे स्कूल के भीतर ऐसी स्थितियों को और बच्चों की ऐसी आदतों को बढ़ावा मिलता है जो पानी, साफ-सफाई और स्वच्छता संबंधी बीमारियों को रोकने में सहायक हैं। कहा भी

गया है कि स्वच्छ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।

विद्यालयी स्वच्छता की प्रथम इकाई कक्षाएँ होती है और विद्यालयों में स्वच्छता का मूल्यांकन कक्षाओं से ही होता है। प्राथमिक कक्षाओं में अधिकतर स्टेशनरी वेस्ट (पेन्सिल के छिलके, कागज़ के टुकड़े आदि) कक्षा की फर्श पर विद्यार्थियों द्वारा जाने-अनजाने में फैल जाते हैं। ऐसे में या तो विद्यार्थी बार-बार उसे फेंकने कूड़ेदान तक जाते हैं या वह वहीं अपनी सीट के पास गिरा देते है। विद्यार्थी को उठकर बार- बार कूड़ेदान तक जाने के लिए शिक्षक से अनुमति लेने की अनुशासनात्मक प्रवृति भी शिक्षण-अधिगम में कहीं न कहीं व्यवधान डालती है। प्रत्येक कालांश में उत्पन्न हुए स्टेशनरी वेस्ट को बार-बार साफ़ भी नहीं किया जा सकता। अधिकतर गतिविधि-आधारित कक्षाओं में तथा सह अधिगम गतिविधि (सी. एल. ए.) पूर्व में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ (सी. सी. ए.) कालांश में कागज के टुकड़े कक्षा की फर्श पर भारी मात्रा में गिरे पड़े होते हैं। जिनसे कक्षा-कक्ष की स्वच्छता प्रभावित होती है एवं अचानक किसी आगंतुक या अभिभावक के विद्यालय आने पर कक्षा का वातावरण व परिवेश स्वच्छ प्रदर्शित नहीं होने से कक्षा एवं विद्यालय की छवि, स्वच्छता के दृष्टिकोण से अच्छी नहीं बनती है।

शिक्षण-अधिगम के लिए कक्षा-कक्ष की स्वच्छता को एक उत्तम मनोवैज्ञानिक प्रभावशाली साधन के रूप में स्वीकार किया जाता है और यहीं से विद्यार्थियों में स्वच्छता के प्रति व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न होती है। पिछले दस वर्षों के शिक्षण के दौरान यह विषय बार-बार मुझे इस बात के लिए प्रेरित करता रहा कि वह कौन से सार्थक उपाय हो सकते हैं? जिनसे विद्यार्थियों के अन्दर सकारात्मक बदलाव लाया जा सके तथा कक्षा को हमेशा साफ सुथरा रखा जा सके। इस अभियान के निरंतर चलने से यह क्रियात्मक शोध के प्रतिफल के रूप में एक नवाचार बनकर सार्थक होकर हमारे सामने आया है।

विद्यार्थियों का अपना एक छोटा सा बॉक्स-Mymidbin 'स्वभा' - My Mini Dust Bin, जिसमें विद्यार्थी अपने स्टेशनरी वेस्ट (पेन्सिल के छिलके, कागज़ के टुकड़े आदि) को रख लेते हैं तथा घर जाते समय विद्यालय के कूड़ेदान में डाल देते है या फिर घर ले जाकर घर के कूड़ेदान में डाल देते हैं। यह बॉक्स घर में रखे, प्रयोग में न लाए जाने वाले बॉक्स से निर्मित किया गया है ,जिसे विद्यार्थी बड़े उत्साह से लेकर आए तथा उसका प्रयोग करने के उपरांत यह पाया गया कि प्राथमिक कक्षाओं में स्टेशनरी वेस्ट से मुक्ति के उपरांत कक्षाएँ शिक्षण-अधिगम अनुकूल वातावरण प्रदर्शित करने लगी। अब बार-बार विद्यार्थी कूड़ेदान तक जाने की अनुमति भी नहीं मांगते तथा शिक्षण-अधिगम में व्यवधान भी नहीं होता। यदि अचानक से कोई भी अभिभावक एवं आगंतुक आते हैं तो कक्षाएँ हमेशा साफ़-सुथरी दिखती है। इस नवाचारी प्रयोग से सबसे ज्यादा खुश विद्यालय के स्वच्छता सेवा कर्मी हैं, जिन्हें छुट्टी के बाद कक्षाओं में फैला कचरा कम मिलता है और वे कम समय में कक्षाओं को साफ भी कर लेते हैं। यह प्रयास क्रियात्मक शोध के पहल के रूप में कक्षा चतुर्थ एवं कक्षा पंचम में क्रियान्वित किया गया है। कक्षा प्रथम से तृतीय तक अगले अभियान के तहत इसे क्रियान्वित किया जायेगा।

स्वभा - (स्वच्छ - भारत) - इस Mymidbin - My Mini Dust Bin का नाम स्वच्छ भारत मिशन के प्रतीक चिन्ह ,गांधी जी के चश्मे में लिखे "स्वच्छ भारत" के स्वच्छ शब्द से 'स्व' तथा भारत के 'भा' से निर्मित कर - 'स्वभा' रखा गया है। स्व का अर्थ - स्वयं या अपना या निज से है, तथा भा प्रत्यय का अर्थ- चमक/प्रकाश/दीप्ति है इससे उद्धृत अर्थ - स्वयं द्वारा प्रकाशित होना या स्वयं द्वारा दीप्ति उत्पन्न करने से है। क्योंकि जो वस्तु जितनी साफ़ होती है उतनी चमकदार होती है। इस नवाचार का ध्येय वाक्य है **–'स्वभा है साथ तो कक्षा है साफ़'**

Scan this QR Code for the audio story.

मनीष कुमार शर्मा
प्राथमिक शिक्षक
के.वि.नर्मदानगर

23

Seeds of Change: How Student Leadership Nurtures a Compassionate School Culture

In the bustling educational landscape of India, where young minds are shaped and futures are forged, the impact of leadership often transcends the traditional roles of headmasters and prefects. Authentic leadership, the kind that profoundly transforms a school's social culture, often blossoms unexpectedly from the very students who are learning and growing. The recent events within our school, while challenging, serve as powerful testaments to this truth, showcasing how deeply ingrained values, nurtured by dedicated educators like myself, can empower students to become agents of positive change.

I've always believed that my role as a teacher, especially as a TGT English in Kendriya Vidyalaya Sangathan, extends far beyond textbooks and grammar. It's about shaping hearts and minds. The wide spectrum of students from diverse social strata here makes the job incredibly alluring, offering me the chance to be a teacher to all. I share here moments of challenge where my students rose to the occasion, showing incredible initiative and proactive spirit.

The air in the staff room grew heavy with concern when some unknown people created and circulated morphed pictures of a teacher. It was a vile and unsettling act. But amidst the shock, something truly remarkable unfolded. It was **Priyansh**, a bright and usually reserved Class XI boy, who quietly took the lead. He didn't just express sympathy; he galvanised his classmates. I watched, deeply moved, as my students —the very ones I had taught for years — united in solidarity. They spoke out with conviction, protesting peacefully and demanding accountability. Their collective voice, strong and unwavering, echoed the very values of **respect, empathy, and justice** that we had tirelessly discussed in class. This wasn't just an act of loyalty to a teacher; it was a powerful display of applied learning. Priyansh, along with his peers, demonstrated that the lessons of compassion and standing up for what is right had taken deep root. Their spontaneous leadership not only provided crucial support to me, their teacher, but also sent a clear message about the kind of ethical environment they expected within their school community.

Leadership in fostering a humane culture isn't always about making grand gestures or confronting injustice. Sometimes, it manifests in the quiet wisdom of a child who sees the world through a unique lens. I recall a particularly memorable brainstorming session in my 10th-grade English class. We were discussing the qualities of a true friend. Hands shot up with typical answers: "smart," "funny," "athletic." Then, a quiet voice emerged from the back of the room. It was **Anushyut**, a bright autistic child in my class, whose mind often works in wonderfully unexpected ways. When it was his turn, he said, "Someone with **humanity**."

A hush fell over the room. In a space often geared towards intellect and outward attributes, his simple yet profound statement resonated deeply. It served as a potent reminder that genuine connection transcends superficial traits and lies in the realm of **empathy, understanding, and shared human experience**. Anushyut, through his innocent yet apt articulation, became an unexpected leader in that moment, shifting the perspective of his classmates and encouraging them to consider the emotional and ethical dimensions

of their relationships. His words acted as a catalyst, urging everyone to treat the concept of friendship —and by extension, all human interactions —with a more profound sense of seriousness and compassion. He truly showed them what it meant to lead with awareness.

Furthermore, the spirit of selfless leadership often emerges in the everyday struggles and acts of kindness among students. I recall a young boy, let's call him Rohan, who was grappling with some difficult family issues. He loved cricket more than anything, but buying a new kit seemed impossible. He tried to communicate his predicament to me a few times, but perhaps I didn't fully grasp the depth of his struggle, leaving him disheartened.

It was in this moment of quiet vulnerability that **Shantanu**, one of Rohan's close friends and a class monitor, stepped in. Shantanu, understanding the significance of Rohan's passion for cricket, made an extraordinary act of empathy and support. Unknown to Rohan, Shantanu meticulously saved his tiffin money for an entire month, foregoing treats and snacks, to help him acquire the necessary cricket kit. This quiet act of generosity was a powerful testament to the leadership that resides in caring for another's well-being. It exemplified a deeper understanding of friendship and a willingness to prioritise the needs of a loved one. This kind of leadership, rooted in empathy and a genuine desire to uplift others, showcases the transformative power of young minds that think beyond themselves. Shantanu's actions, unseen by many but deeply felt by Rohan, embodied the very essence of transformation through personal sacrifice.

When such instances of student-led compassion and courage are recognised, appreciated, and nurtured within the school environment, they become invaluable seeds for the future. Priyansh, Anushyut, and Shantanu – they, along with so many other students, have already demonstrated a remarkable capacity for empathy, ethical action, and a commitment to the well-being of others. These are the very leaders our society desperately needs. By validating their actions and highlighting the positive impact they have, we, as educators, can foster a culture where such leadership thrives. This, in turn, contributes to the creation of responsible and compassionate individuals who will go on to transform society, carrying forward the lessons of humanity and justice they learned within the nurturing walls of their school.

In conclusion, the examples witnessed in our school underscore the vital role of students in shaping and transforming social culture. Their spontaneous acts of solidarity, insightful perspectives, and selfless generosity demonstrate that leadership is not confined to titles or positions. It resides in the values instilled, the empathy cultivated, and the courage to act on what is right. By recognising and celebrating these instances of student leadership, we can actively contribute to the development of future leaders who will prioritise humanity, ethics, and the collective good, ultimately leading to a more compassionate and just society. The seeds of change are being sown in our classrooms, and it is our collective responsibility to nurture their growth.

Scan this QR Code for the audio story.

Ramita Ganguly
TGT English
PM SHRI No. 2 Ishapore

24

परिवार–विद्यालय–समुदाय: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की त्रिवेणी

शिक्षा में परिवार एवं समुदाय की भागीदारी अनिवार्य है क्योंकि इससे लाभार्थी और योगदानकर्ता दोनों को व्यापक और सक्रिय रूप से शामिल किया जा सकता है। चूँकि शिक्षा का विकास परिवार और समुदायों के विकास के संदर्भ में ही देखा जाता है, और हम जानते है कि अच्छी शिक्षा एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण करती है। लेकिन आज के समय में शिक्षा एकांकी रूप से सरकार एवं समाज के द्वारा प्रतिस्थापित कुछ शिक्षा संस्थानों के अंदर ही सीमित हो कर रह गई है। जिसमें मात्र शिक्षक विद्यार्थी और विद्यार्थी का परिवार ही सम्मिलित हो रहा है बाक़ी समाज के राजनीतिक, प्रशासनिक एवं व्यावसायिक रूप से समृद्धशाली उच्च शिक्षित वर्ग का अनुभव हम इन शिक्षा केंद्रों तक नहीं ला पा रहे हैं। आज का शिक्षा तंत्र मात्र अपने विषय का सिलेबस पूर्ण करने मैनेजमेंट द्वारा प्रतिपादित जिम्मेदारियों को निभाने एवं बच्चों को एक कक्षा से अगली कक्षा में प्रोन्नत करने का साधन मात्र बन कर रह गए है।

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥". यह श्लोक महोपनिषद् में मिलता है और इसका अर्थ है कि जो लोग संकीर्ण मानसिकता वाले होते हैं, वे "यह मेरा है" या "वह पराया है" ऐसे भेद करते हैं, जबकि उदार हृदय वाले लोगों के लिए तो पूरी पृथ्वी ही एक परिवार होती है. कहने का अर्थ यह है कि प्राचीन काल से ही हमने सम्पूर्ण वसुधा को अपना परिवार ही माना है जो सामुदायिक भागीदारी को सुनिश्चित करता है। *सहभागिता* का अर्थ है किसी चीज़ का हिस्सा बनना। इसका हिस्सा बनने के कई तरीके हैं: (1) किसी विशेष सेवा का उपयोग करना; (2) संसाधन, सामग्री और श्रम का योगदान देना; (3) उपस्थित होना; (4) किसी विशेष मुद्दे पर परामर्श प्राप्त करना; (5) सेवा प्रदान करने में शामिल होना; (6) निर्णय लेने में भाग लेना। चूँकि शिक्षा एक जटिल और विविध आयामों से निहित प्रक्रिया है, इसलिए सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु बहु-उद्देशीय रणनीतियाँ बनाने की आवश्यकता होती है, जो समग्र विकास और सफलता के अभिन्न अंग हैं। कई साझेदारों को शिक्षा संस्थानों, शिक्षकों और संकाय के साथ मिलकर ऐसी प्रथाओं और नीतियों का विकास करना चाहिए जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच को पूरे समाज की ज़िम्मेदारी बना दें। इसका तात्पर्य यह है कि योजना बनाने, प्रबंधन करने और सफलता का मूल्यांकन करने में विभिन्न प्रकार के भागीदारों - परिवारों, शिक्षकों, समुदायों, निजी उद्यमों, तथा सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों - की सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए।

अच्छे स्कूलों को नौकरशाही की एक शाखा के रूप में नहीं देखना चाहिए बल्कि, उन्हें, उनकी उप-प्रणालियाँ मानकर, सामाजिक समग्रता के अन्य सभी अंगों के साथ अत्यधिक अंतःक्रियाशील बनाने की आवश्यकता पर बल देना चाहिए। इसका उद्देश्य छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों को उनकी शिक्षा के प्रति ज़िम्मेदारी देना और सफलता के लिए साझा जवाबदेही का एक ढाँचा प्रदान करना है। ज़िम्मेदारी की इस धारणा में दो अनिवार्य क्षेत्र शामिल होने चाहिए: (1) निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी; और (2) मूल्यांकन और प्रतिक्रिया के साथ नियमित और संरचित भागीदारी।

ऐसा करने के लिए, हमें लोगों की ऊर्जा को उन्मुक्त करना होगा ताकि शिक्षा पूरे समुदाय की चिंता का विषय बन सके। हमें ऐसे हालात और संस्थागत माहौल बनाने होंगे जहाँ लोग शिक्षा के अपने लक्ष्यों को स्पष्ट कर सकें और शैक्षिक विकास में अपना योगदान दे सकें। इस प्रकार की सहभागिता सकारात्मक परिणामों के लिए साझा जवाबदेही का संकेत देती है। सहभागिता में एक साझा लक्ष्य प्राप्त करने की तात्कालिकता की भावना होनी चाहिए। लक्ष्य के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति के माध्यम से, स्कूल, विश्वविद्यालय और समुदाय बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए रणनीतियाँ बना सकते हैं और परिवारों, छात्रों, व्यावसायिक नेताओं, समुदाय-आधारित संगठनों, नीति-निर्माताओं और अन्य लोगों को समन्वित और प्रभावी कार्यों में शामिल कर

सकते हैं। शिक्षा में समुदाय और परिवार की भागीदारी को यदि एक सशक्त और रचनात्मक अनुभव के रूप में समझा जाए, तो यह लोगों को ज्ञान, जागरूकता और लोकतांत्रिक अनुभव के साथ-साथ आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, गौरव और स्वायत्तता प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। वे समस्याओं के समाधान के लिए कदम उठा सकते हैं। यह उन्हें किसी भी प्रक्रिया के परिणाम की ज़िम्मेदारी और जवाबदेही में भी भागीदार बनाता है।

इस प्रकार की सहभागिता सकारात्मक परिणामों के लिए साझा जवाबदेही का संकेत देती है। साझा जवाबदेही के लिए नए प्रतिमानों की आवश्यकता है जो परिवर्तन की प्रक्रिया में शिक्षार्थियों और समुदायों को निष्क्रिय लाभार्थियों के रूप में नहीं, बल्कि शैक्षिक प्रणालियों के भीतर परिवर्तन के सक्रिय अभिकर्ता के रूप में शामिल करें। छात्रों को निष्क्रिय श्रोता के रूप में नहीं देखा जा सकता, शिक्षकों को पूर्वनिर्धारित पाठ्यक्रम के निष्क्रिय निष्पादक के रूप में नहीं देखा जा सकता, और अभिभावकों को शिकायतों और परिणामों के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में नहीं देखा जा सकता।

साझा जवाबदेही का अर्थ है कि स्कूलों और विश्वविद्यालयों को सहभागिता के उत्प्रेरक बनना चाहिए और शैक्षिक प्राथमिकताओं, लक्ष्यों, रणनीतियों और प्रदर्शन के इर्द-गिर्द सार्वजनिक बहस और आम सहमति बनाने के लिए जगह और अवसर पैदा करने चाहिए।

आज पुनः इस सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता को समझते हुए पीएम श्री योजना के अंतर्गत विभिन्न केंद्रीय विद्यालयों एवं राज्य सरकार के विद्यालयों के लिए आवश्यक रूप से छात्रों के भ्रमण कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय लैब, स्मारक, राष्ट्रीय संग्रहालय एवं वन विहार आदि में विद्यालय के छात्रों को भ्रमण के लिए भेजा जा रहा है। जिससे उन्हें बाहरी दुनिया से न केवल परिचय कराया जाता है बल्कि उनको कुछ नया समझने और महसूस करने का अनुभव भी होता है। विद्यालय के आस-पास स्वच्छता कार्यक्रमों में सहभागिता से इनको अपने आस-पास के वातावरण एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक होने का मौका मिलता है और यहीं छात्र पुनः वापस अपने परिवार में जाकर इन सब मापदंडों को उनसे संबंधित परिवार जनों को न केवल समझाते हैं बल्कि उन्हें पालन करने के लिए भी प्रेरित करते हैं।

उदाहरण के तौर पर जब हमारे विद्यालय के छात्र भोपाल में मानव संग्रहालय भ्रमण के लिए पहुँचे तो उन्होंने ना केवल वहाँ पर मानव विकास का अध्ययन किया बल्कि विभिन्न आदिवासी समुदायों की संस्कृति एवं सभ्यता को समझने भी का प्रयास किया और हर समुदाय के लोगों की रहन-सहन, रीति-रिवाज एवं संस्कृति के बारे में जानने का प्रयास अवसर मिला।
वहीं आंचलिक विज्ञान केंद्र और आईआईएसईआर के भ्रमण से उन्होंने विज्ञान और उस पर आधारित विभिन्न प्रकार के उदाहरण सहित नई मशीन एवं नए विज्ञान के विकास के बारे में जानने का प्रयास किया।

सीएसआईआर-एम्प्री के भ्रमण में पदार्थ इंजीनियरिंग, अपशिष्ट से मूल्यवान पदार्थों संबंधी प्रौद्योगिकियों, हल्के और टिकाऊ कंपोजिट और औद्योगिक अपशिष्ट से मूल्य वर्धित उत्पादों के क्षेत्र में राष्ट्रीय और वैश्विक चुनौतियों को समझा एवं विज्ञान में निहित नवीन समाधान विकसित करने के बारे में जाना, जिससे उनके अंदर अंतर्विषयी अनुसंधान धातु विज्ञान, नैनोमटेरियल्स, बायोमटेरियल्स, पर्यावरण इंजीनियरिंग, एयरोस्पेस, रक्षा, आधारसंरचना और ऊर्जा जैसे नए-नए प्रमुख क्षेत्रों की जानकारी को प्राप्त करते हुए आत्मनिर्भरता के नवीन विकल्पों को समझा।

जैसा कि हम जानते हैं कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है लेकिन यह आश्चर्य का विषय है कि शहरी क्षेत्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राएँ हमारी इस प्रमुख आवश्यकता से संबंधित फसलों एवं उनके समय चक्र के बारे में कुछ भी नहीं जानते संभवतः वह दिन दूर नहीं जब बच्चों को केवल यही पता होगा की आटा, दाल, चावल तो बाजार से ही आता है। नदी, तालाब, झरने आदि केवल किताबों और वीडियो में ही देख सकेंगे।

सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का सपना तब तक साकार करना असंभव है जब तक हम साझा दृष्टिकोण, साझा कार्रवाई और प्रत्येक बच्चे की पहुँच और सफलता के लिए साझा जवाबदेही के साथ काम न करें। शिक्षकों और समुदायों को यह सुनिश्चित करने के लिए और अधिक

निकटता से मिलकर काम करने की आवश्यकता है कि हमारे सभी युवाओं को एक उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान की जाए जो उन्हें कार्यस्थल और सक्रिय नागरिक के तौर पर भागीदारी के लिए तैयार करें। हमारे स्कूलों को न केवल उन समुदायों के लिए, जिनकी वे सेवा करते हैं, बल्कि अपने स्वयं के लिए भी, अधिक सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

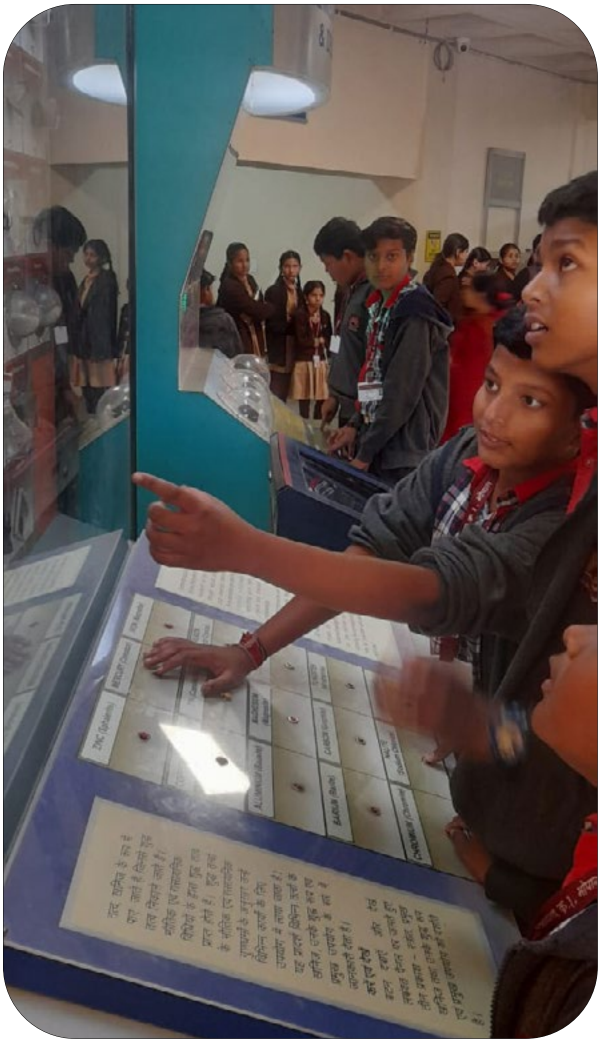

कृष्ण कुमार श्रीवास्तव
पुस्तकालय अध्यक्ष
पीएम श्री के.वि. क्रमांक 3
(द्वितीय पाली) भोपाल

(कार्य- जीवन संतुलन: एक शिक्षक का दृष्टिकोण)
(Work-Life Balance: A Teacher's Perspective)

The demanding nature of a teacher's job — classroom teaching, mentoring pupils, organizing school events, and furnishing data on an almost daily basis — makes their work truly challenging. Any undue stress that teachers carry from work is bound to affect their personal lives as well. Hence, striking a perfect balance between professional responsibilities and personal life is essential for a healthy and successful life. Engaging in hobbies, practicing yoga or meditation, spending time honing one's skills, reading, or listening to music can help ease stress and make life more purposeful. The better the work-life balance, the happier and more effective the teacher will be — both personally and professionally.

25

Balancing Chalk and Life: A Teacher's Journey Towards Harmony

Work-life balance is often described as the art of maintaining equilibrium between professional responsibilities and personal well-being. For teachers, however, this balance is far more complex than it may appear from the outside. The school bell may signal the end of the day for students. Still, for teachers, it often marks the beginning of another round of work—lesson planning sprawled across the dining table, notebooks waiting to be graded, or training sessions scheduled on weekends. Add to this a fair share of cultural events, club activities, and endless paperwork, and it is easy to see why teachers often struggle to carve out time for themselves.

Teaching, at its heart, is a gratifying profession—one that thrives on patience, commitment, and passion. Yet beneath its noble surface lies a challenging reality. Extended work hours often mean evenings sacrificed to finish lesson plans or assess assignments. Many teachers spend weekends preparing students for debates, plays, or competitions, leaving little room for rest or family time. The profession also demands an emotional investment that few other jobs require. A teacher is not only expected to instruct but also to nurture, counsel, and care. Helping struggling learners, managing disruptive classrooms, and worrying about a child facing bullying or family difficulties can be emotionally exhausting. It is no wonder that fatigue and burnout are familiar companions in the teaching journey.

And the challenges do not stop there. Administrative responsibilities such as filling endless reports or chasing deadlines for evaluations often eat into precious teaching time. In many schools, limited resources force teachers to go the extra mile, improvising with what is available. Professional development, while essential, can also add to the pressure when training sessions are scheduled outside of regular working hours or when new teaching tools must be mastered without proper support. On top of it all, societal expectations loom large. Teachers are

expected to be role models, mentors, and motivators—always available, consistently exemplary. The weight of such expectations can blur the boundaries between professional duty and personal life.

Yet, amid these challenges, teachers have found ways to reclaim balance. Some learn to set clear boundaries—designating certain hours of the evening as strictly “family time,” or carving out a small workspace at home to keep professional tasks from spilling into personal spaces. Others adopt time management strategies, batching tasks like grading in one go or using digital tools to simplify routine work. Many rediscover the joy of hobbies, a morning walk, or a quiet hour of reading, reminding themselves that caring for their own well-being is just as important as caring for their students.

Support systems also play a vital role. A teacher who collaborates with colleagues, shares lesson resources, or leans on friends and family for encouragement finds the journey less lonely. Professional networks, too, offer comfort and guidance, creating a sense of community where challenges and solutions are exchanged freely. Still, personal strategies alone cannot shoulder the entire burden. Institutions must step up to share the responsibility. Reducing unnecessary paperwork, scheduling training during school hours, and providing access to mental health programs can make a significant difference. Flexible work arrangements, from hybrid teaching models to remote grading, are no longer luxuries but necessities in today’s fast-paced world.

Perhaps the most meaningful change occurs when schools cultivate a culture of empathy—where workloads are distributed fairly, personal boundaries are respected, and teachers are encouraged to disconnect after hours. Such institutional support not only protects teachers from burnout but also enables them to continue teaching with enthusiasm and creativity. After all, a content and balanced teacher is more likely to inspire students and foster a healthier classroom environment.

Work-life balance, then, is not simply about finding extra hours in the day—it is about reimagining the teaching profession as one that honours both dedication and rest. It requires a blend of personal discipline and systemic reform, a willingness to care for oneself while continuing to care for others. When teachers are supported in achieving this harmony, the rewards ripple outward: healthier educators, happier families, and, ultimately, students who learn in an environment filled with energy and joy.

In the end, balancing chalk and life is not an indulgence; it is a necessity—for teachers, for schools, and for the future of education itself.

Scan this QR Code for the audio story.

Dr. T. A. V. Sharma
Principal
PM SHRI KV NPA
Shivarampally, Hyderabad

26

Balancing Creativity and Curriculum in the Classroom

“Creativity requires the courage to let go of certainties. – There is nothing in a caterpillar that tells you it’s going to be a butterfly.”

As a teacher, I often find myself standing at the crossroads of two equally important paths—Creativity and Curriculum. One represents freedom, imagination, and expression. The other stands for structure, targets, and academic goals. The challenge lies in walking both paths together, in harmony.

The curriculum we follow is well-structured and thoughtfully designed, especially with recent reforms like the NEP 2020 that emphasise holistic development. Yet, there are times when the pressure of completing the syllabus, preparing students for exams, and meeting deadlines leaves very little room for flexibility. In such situations, creativity can start to feel like a luxury we cannot afford.

But I’ve learned that creativity is not about replacing the curriculum—it’s about enriching it.

For example, while teaching a lesson in English or EVS, I often encourage students to enact a part of the story, draw a scene from the chapter, or write a few lines from a character’s point of view. These small additions bring a burst of energy into the classroom. Students get more involved, and even the shy ones open up.

Creativity doesn’t always mean elaborate activities. Sometimes, it’s just about asking the right question, allowing students to think beyond the textbook. It’s about giving space for imagination, opinions, and even mistakes. I’ve seen students surprise me with perspectives I hadn’t even considered—just because I gave them that little extra space to think freely.

Technology has also become a helpful ally. Using audio-visual tools, interactive quizzes, and online storytelling platforms adds a fresh flavour to regular lessons. These tools don’t take away from the curriculum—they make it more relatable and memorable.

That said, balancing the two requires planning. I strive to blend creative tasks with curriculum-based outcomes, ensuring that neither feels like a compromise. If I’m preparing students for a grammar

lesson, I might ask them to write a short poem using the new concepts. If it's a science chapter, we might turn an idea into a simple class experiment or model-making task.

What I've noticed is that when students engage creatively with content, retention improves, and interest grows. They look forward to learning—not just to scoring marks, but to experiencing something new.

As teachers, we often worry: "Will I be able to complete the syllabus if I try too many new ideas?" I've had those thoughts too. But with time, I've realised that a few minutes of creativity can do wonders, even within the time constraints.

In conclusion, the curriculum provides direction, but creativity enriches our teaching life. In Kendriya Vidyalaya, where we are encouraged to be both structured and student-friendly, I believe striking this balance is not only possible but necessary. After all, education is not just about covering chapters—it's about uncovering the potential in each child.

Scan this QR Code for the audio story.

Ishita Verma
PRT
PM SHRI KV No. 2, Naval Base, Kochi

27

समझ, संवेदना और सशक्तिकरण

विश्वास करो, स्वीकार करो, ध्यान केंद्रित करो, परिश्रम करो, खुश रहो, शांत रहो

पिछले कुछ वर्षों में माइंडफुलनेस, मानसिक स्वास्थ्य और कार्य-जीवन संतुलन पर बहुत चर्चा हुई है—चाहे वह लेखों के माध्यम से हो, सोशल मीडिया पर पोस्ट के रूप में हो या सामान्य बातचीत में। फिर भी, ये विषय आज भी उतने ही गंभीर और चिंता का कारण बने हुए हैं। अब केवल इन पर बात करने का समय नहीं है, बल्कि ठोस और स्वस्थ उपाय अपनाने की आवश्यकता है।

आज के युग में विद्यालय प्रमुख केवल प्रशासनिक कार्यों तक सीमित नहीं हैं। वे अब परिवर्तन के वाहक बन चुके हैं—शैक्षिक उत्कृष्टता को दिशा देते हुए, सकारात्मक विद्यालय वातावरण बनाते हुए, और विद्यार्थियों की सफलता सुनिश्चित करते हुए एक सक्षम नेतृत्वकर्ता विद्यालय की समग्र प्रगति, शिक्षकों की संतुष्टि और छात्रों की उपलब्धियों पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

इक्कीसवीं सदी में शिक्षकों की भूमिका भी पूरी तरह से बदल चुकी है। तकनीकी प्रगति और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के आगमन के साथ अब शिक्षक केवल जानकारी देने वाले माध्यम नहीं रह गए हैं। आज का शिक्षक एक मार्गदर्शक, प्रेरक और विद्यार्थी का सच्चा मित्र है। इस डिजिटल युग में यह आवश्यक है कि शिक्षक अपने अनुभवों को साझा करें, अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोणों के माध्यम से शिक्षा को एक नई दिशा दें।

शिक्षकों के अनुभव और कथानक शिक्षा की प्रक्रिया को समृद्ध बना सकते हैं। इसके लिए उन्हें आधुनिक शिक्षण विधाओं और अकादमिक लेखन से जुड़ना होगा। पारंपरिक पद्धतियों की जगह अब नवाचारों और तकनीक-समन्वित शिक्षण विधियों को अपनाने की आवश्यकता है। साथ ही, समावेशी कक्षा की अवधारणा पर भी ध्यान देना चाहिए, विशेष रूप से केन्द्रीय विद्यालयों में जहाँ विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों से विद्यार्थी आते हैं। किसी भी प्रकार का भेदभाव—चाहे वह लिंग आधारित हो, आर्थिक हो या सामाजिक—स्वीकार्य नहीं है।

एक विद्यालय प्रमुख के रूप में, मैं प्रतिदिन देखती हूँ कि हमारे शिक्षक समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए किस हद तक दबाव में काम कर रहे हैं। अन्य पेशेवरों की तरह शिक्षकों की कोई पहचान वाली पोशाक नहीं होती, लेकिन वे अनेक अदृश्य 'भूमिकाएँ' निभाते हैं। यही भूमिकाएँ उनके निजी जीवन को भी प्रभावित करती हैं, जिससे कार्य और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना कठिन हो जाता है फिर भी अनेक शिक्षक इन चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना कर रहे हैं। वे तकनीक का उपयोग करते हुए अपने कार्य को सरल बना रहे हैं—ब्लॉग्स, ऐप्स, शैक्षिक साइट्स और सुनियोजित योजनाओं की मदद से। उनके पास

स्पष्ट रूप से तैयार किए गए वार्षिक योजना, यूनिट योजना, पाठ योजना और सूक्ष्म पाठ योजनाएँ होती हैं।

संतुलन बनाए रखने के लिए हमें अपनी भूमिकाओं को सरल बनाना चाहिए, अपनी गलतियों को क्षमा

करना चाहिए, और स्वयं को यह विश्वास दिलाना चाहिए— *"तुम कर सकते हो।"* हमें अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी चाहिए, समुदाय से जुड़ाव बनाए रखना चाहिए, और यह सीखना चाहिए कि कुछ चीज़ों को जाने देना भी ज़रूरी होता है। हमें नित नए विचारों के साथ सीखते, भूलते और फिर से सीखते रहना चाहिए।

परिवार हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। कार्य का बढ़ता दबाव हमें अक्सर अनजाने में परिवार से दूर कर देता है। इसका असर हमारे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर पड़ता है। ऐसे में एक साथ भोजन करना या बच्चों के साथ टहलने जाना हमें मानसिक रूप से तरोताज़ा कर सकता है।हमारी सामाजिक परिस्थितियाँ हमारे भावनात्मक स्वास्थ्य से जुड़ी होती हैं। जब हम छात्रों, विद्यालय और समुदाय का ख्याल रखते हैं, तब भी हमें अपने मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी चाहिए। शिक्षण आज के समय में अत्यंत तनावपूर्ण पेशा बन गया है—कार्यभार, भावनात्मक थकावट और सुरक्षा की कमी जैसे कारणों से शिक्षक बर्नआउट का सामना कर रहे हैं।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें सीमाएँ तय करनी चाहिए, केवल उन्हीं चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो हमारे नियंत्रण में हैं, परिवार और मित्रों के साथ जुड़ाव बनाए रखना चाहिए, पर्याप्त नींद लेनी चाहिए, शरीर को सक्रिय रखना चाहिए और हास्य व आत्म-देखभाल को अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए। सबसे ज़रूरी बात यह है कि हमें अपने आप से यथार्थवादी अपेक्षाएँ रखनी चाहिए। विद्यार्थियों के साथ खेलकूद व संगीत के माध्यम से शिक्षक अपने मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत कर सकते हैं

केवल व्यक्तिगत प्रयासों से समाधान नहीं मिलेगा। शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और समग्र कल्याण के लिए बहुस्तरीय और व्यापक रणनीतियाँ आवश्यक हैं। शिक्षकों के किए गए प्रयासों को समय समय पर पुरस्कृत करना भी आवश्यक है ताकि उनके आत्मबल में वृद्धि हो। हमें एक ऐसा शैक्षिक परिवेश बनाना होगा जहाँ शिक्षक स्वयं को समर्थ, सुरक्षित और प्रेरित महसूस करें। क्योंकि जब शिक्षक सशक्त होते हैं, तब छात्र और समाज भी समृद्ध होता है।

Scan this QR Code for the audio story.

कृति
प्राचार्य
के.वि.एस.एस.बी., श्रीनगर

(केंद्रीय विद्यालय में बहुभाषावाद/ भाषा शिक्षण)
(Multilingualism/Language teaching in Kendriya Vidyalaya)

बहुभाषिकता हमारे राष्ट्र की अनूठी ताकत और विशेषता से युक्त है। विभिन्न भाषाओं का समन्वय, भाषाओं के भिन्न-भिन्न रूपों का समन्वय, भाषानुवाद आदि शिक्षण में एकात्मकता लिए हुए हैं। भाषा के द्वारा ही विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं नैतिक मूल्यों का विकास होता है। बहुभाषिक योग्यता अर्जित करना 21वीं सदी की प्राथमिकता है।

28

हिंदी हैं हम

प्राथमिक कक्षा में हिंदी केवल एक विषय नहीं है– यह एक अनुभव व अनुभूति है, जो कहानियों की दुनिया, हँसी-सी-ठिठोली, कविताएँ,और आत्मा को शब्दों में ढालने की पहली कोशिश होती है। जैसा कि हम जानते हैं, केन्द्रीय विद्यालयों में छात्र विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आते हैं, क्योंकि उनके माता-पिता की नौकरियाँ स्थानांतरित होती रहती हैं। ऐसे में हिंदी पढ़ाना अपने आप में कई चुनौतियाँ और अवसर लेकर आता है। मैंने कक्षा 4 और 5 में लंबे समय से हिंदी पढ़ाई है, और मैंने स्वयं अनुभव किया है कि किस प्रकार हिंदी भाषा के माध्यम से बच्चों के कोमल और विकसित होते मस्तिष्क को आकार देने का यह एक जटिल लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है।

हिंदी, भारत की एक राजभाषा और कई राज्यों में संपर्क भाषा होने के नाते, बच्चों को जोड़ने में एक सेतु की भूमिका निभाती है। प्राथमिक स्तर पर हिंदी सिखाने का उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना सिखाना नहीं है, बल्कि बच्चों में भाषा के प्रति प्रेम और रुचि विकसित करना है। हिंदी में सशक्त आधार न केवल संवाद कौशल को मजबूत करता है, बल्कि अन्य विषयों के अधिगम को भी आसान बनाता है।

"मैम, अब मैं हिंदी में सपने देखता हूँ," — मिज़ोरम के एक छात्र ने कहा।
ऐसे क्षण हमें याद दिलाते हैं कि भाषा का शिक्षण वास्तव में आत्मा से जुड़ा कार्य है।

केन्द्रीय विद्यालयों में हिंदी शिक्षण की पद्धति राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के मूल सिद्धांतों पर आधारित है, जिनमें अनुभवात्मक अधिगम, बहुभाषिकता तथा संकल्पनात्मक स्पष्टता को अत्यंत महत्व दिया गया है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को भाषा सीखने के पारंपरिक तरीकों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें अनुभव, गतिविधि और सहभागिता से सीखने के अवसर प्रदान करता है। इसी उद्देश्य से हिंदी शिक्षण को विविध, आनंदमय और प्रयोगात्मक रूप दिया गया है ताकि बच्चे भाषा को केवल विषय न समझें, बल्कि उसे जीवन-व्यवहार से जोड़ सकें।

बच्चे तब अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं जब वे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। हिंदी कक्षाओं में विभिन्न खेलों, कहानियों, कविताओं, नाट्य रूपांतरणों और भूमिका-निर्वहन गतिविधियों का प्रयोग विद्यार्थियों की समझ को समृद्ध करता है तथा सीखने को आनंददायक बनाता है। शब्द-अंताक्षरी जैसे खेल बच्चों के शब्द-भंडार का विस्तार करते हैं, जबकि "शब्दों का बाज़ार" संवाद-कौशल को स्वाभाविक रूप से विकसित करता है। "मात्रा योग" जैसी गतिविधियाँ भाषा की कठिन अवधारणाओं को सरल और रोचक बना देती हैं। इसी प्रकार "रहस्यमयी थैला" गतिविधि बच्चों की कल्पनाशीलता, भाषण-कौशल और शब्द-प्रयोग को सुदृढ़ करती है। इस प्रकार के खेल-आधारित तरीकों से भाषा सीखना सहज, जीवंत और अधिक प्रभावी हो जाता है।

प्राथमिक स्तर पर दृश्य और श्रव्य माध्यम अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। चार्ट, फ्लैशकार्ड, चित्र-पुस्तकें, कठपुतलियाँ और अन्य दृश्य सामग्री छात्रों की स्मृति और अवधारणा-निर्माण को मजबूत बनाती है। साथ ही

कविताओं और कहानियों की रिकॉर्डिंग से उच्चारण कौशल तथा श्रवण-समझ विकसित होती है। इन विधियों से बच्चे भाषा को अलग-अलग इंद्रियों के माध्यम से ग्रहण करते हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया बहुआयामी और अधिक प्रभावी हो जाती है।

हिंदी शिक्षण को पर्यावरण अध्ययन, गणित और अन्य विषयों के साथ जोड़कर पढ़ाया जाता है, जिससे विद्यार्थियों में बहुविषयक समझ विकसित होती है। उदाहरणस्वरूप, हिंदी में गिनती सिखाते समय सरल जोड़-घटाव को शामिल किया जाता है। इसी प्रकार "स्वच्छ भारत" विषय पर पोस्टर बनाते समय छात्रों ने न केवल हिंदी नारे लिखे, बल्कि नागरिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता भी प्राप्त की। यह एकीकरण बच्चों में भाषा और विषय दोनों की गहन समझ को प्रोत्साहित करता है।

प्रत्येक बच्चा अपनी गति और शैली के अनुसार सीखता है। इसलिए क्विज़, मौखिक चर्चाएँ, लेखन गतिविधियाँ और निरंतर आकलन के माध्यम से बच्चों की सीखने की स्थिति को समझा जाता है। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर पुनःशिक्षा, समृद्धि या अतिरिक्त अभ्यास जैसी गतिविधियाँ प्रदान की जाती हैं, जिससे प्रत्येक छात्र अपनी क्षमता के अनुरूप प्रगति कर सके।

हिंदी शिक्षण को रचनात्मक बनाने के लिए विविध नवाचार अपनाए गए हैं। "मेरा भाषा पिटारा" गतिविधि में बच्चे अपनी लिखी कहानियाँ, कविताएँ, पहेलियाँ, फ्लैशकार्ड और शब्द-डायरी एक सुंदर सजाए हुए डिब्बे में संग्रहित करते हैं, जिससे उनकी अभिव्यक्ति और संगठन क्षमता विकसित होती है। "रचनात्मक लेखन कोना" के माध्यम से छात्र हर सप्ताह नई थीम पर कहानी, कविता, निबंध, संवाद या कल्पनात्मक रचनाएँ लिखते हैं, जिससे उनकी लेखन क्षमता में निरंतर सुधार होता है। 'काहुत' जैसे ऐप द्वारा व्याकरण और भाषा कौशल से जुड़े प्रश्नोत्तरी खेलना बच्चों के लिए अत्यंत रोचक अनुभव बन जाता है। इसके अतिरिक्त स्थानीय संस्कृति, मातृभाषा और राज्यों की विविध साहित्यिक परंपराओं का समावेश उन्हें बहुभाषिक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील बनाता है।

परियोजना-आधारित अधिगम बच्चों को वास्तविक जीवन से जुड़े संदर्भों में हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करता है। "मेरा परिवार" परियोजना में छात्र परिवार वृक्ष बनाकर सदस्यों का वर्णन हिंदी में प्रस्तुत करते हैं। हिंदी दिवस के अवसर पर कविता-पाठ, पोस्टर निर्माण और लेखन प्रतियोगिताएँ छात्रों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देती हैं। एक छात्र द्वारा "सफाई रोबोट" का हिंदी विज्ञापन तैयार करना इस विधि का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ कठिन शब्दों का उचित प्रयोग और रचनात्मक सोच दोनों का अद्भुत संयोजन दिखाई देता है।

केंद्रीय विद्यालयों में भाषाई विविधता अत्यंत सामान्य है। विभिन्न राज्यों से आने वाले छात्रों में कई ऐसे होते हैं जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं होती, जिससे आरंभिक चरण में समझ और रुचि को विकसित करने में कठिनाई आती है। घर पर हिंदी के अभ्यास की कमी और समान अक्षरों व मात्राओं को लेकर होने वाली भ्रम की स्थिति भी चुनौतियाँ उत्पन्न करती है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए "भाषा साथी" योजना, मात्रा-गीत, मातृभाषा का सेतु प्रयोग, नियमित पुनरावृत्ति और अभिभावक सहभागिता जैसी रणनीतियाँ अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुई हैं। "मात्रा संगीत" जैसे प्रयासों ने बच्चों को जिंगल के माध्यम से सीखने के लिए प्रेरित किया और त्रुटियों में उल्लेखनीय कमी आई।

प्राथमिक स्तर पर मूल्यांकन निरंतर और व्यापक होना चाहिए। मौखिक गतिविधियाँ, लेखन कार्य, कक्षा सहभागिता, संवाद कौशल और पोर्टफोलियो—ये सभी साधन एक बच्चे के समग्र भाषा विकास को दर्शाते हैं। यह मूल्यांकन-पद्धति विद्यार्थियों की प्रगति का संतुलित और संवेदनशील चित्र प्रस्तुत करती है।

हम भविष्य में बच्चों द्वारा तैयार किए गए हिंदी ई-बुक्स, स्कूल-स्तरीय हिंदी पॉडकास्ट, अखिल भारतीय हिंदी नाट्य सप्ताह और हिंदी में निर्मित लघु फिल्मों की कल्पना करते हैं। ऐसे नवाचार न केवल भाषा-प्रेम को बढ़ाएँगे, बल्कि बच्चों में सृजनात्मकता, आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति क्षमता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँगे।

केन्द्रीय विद्यालयों में हिंदी शिक्षण केवल भाषा सिखाने का कार्य नहीं, बल्कि बच्चों की अभिव्यक्ति, सहानुभूति और कल्पनाशीलता को पोषित करने का प्रयास है। प्रेम, धैर्य और सतत् मार्गदर्शन से हर बच्चा अपनी भाषा में खिल उठता है—और इन्हीं में से आगे चलकर कोई लेखक बनेगा, कोई कवि, कोई पत्रकार। उद्देश्य केवल पाठ्य-पुस्तक तक सीमित नहीं; उद्देश्य है हर बच्चे के भीतर छिपे कहानीकार को जगाना, उसकी भाषा यात्रा को सुंदर और प्रेरक बनाना।

"हिंदी केवल भाषा नहीं, यह बच्चों के सपनों की पहली आवाज़ है।"

Scan this QR Code for the audio story.

किरन सैनी
प्राथमिक शिक्षिका
पीएम श्री के.वि. सुंजुवाँ, जम्मू

29

बहुभाषावाद: सुर एक, स्वर अनेक

केन्द्रीय विद्यालय में पीजीटी (अंग्रेज़ी) के रूप में कार्य करते हुए मैंने कई बार देखा है कि भाषा केवल संप्रेषण का साधन ही नहीं होती, बल्कि यह संस्कृति, पहचान और अपनत्व का सेतु भी बनती है। भारत, जिसकी 22 अनुसूचित भाषाएँ और असंख्य बोलियाँ हैं, बहुभाषिकता पर ही फलता-फूलता है। (भारत की जनगणना, 2011) हमारे छात्रों के लिए, विशेषकर केन्द्रीय विद्यालयों में, यह कोई अमूर्त धारणा नहीं है, बल्कि एक जीता-जागता अनुभव है। क्योंकि हमारे विद्यालयों में रक्षा, अर्द्धसैनिक बलों और केंद्र सरकार के कर्मचारियों के बच्चे पढ़ते हैं, जिनके स्थानांतरण बार-बार होते रहते हैं, हर कक्षा देश की भाषाई विविधता का प्रतिबिंब बन जाती है। (के.वि.सं., 2022) यही केन्द्रीय विद्यालयों को बहुभाषिक शिक्षा को पोषित करने का अनूठा स्थान बनाता है।

भारत में अधिकांश बच्चे घर पर अपनी मातृभाषा सुनते हुए बड़े होते हैं, अपने परिवेश में क्षेत्रीय भाषा को आत्मसात करते हैं और औपचारिक शिक्षा के माध्यम से धीरे-धीरे हिंदी और अंग्रेज़ी का ज्ञान अर्जित करते हैं (एन.सी.ई.आर.टी., 2005)। मध्य कक्षाओं तक पहुँचते-पहुँचते वे सहज रूप से कई भाषाओं में संवाद करने में सक्षम हो जाते हैं। अपने कक्षा अनुभव से मैंने पाया है कि यह प्राकृतिक बहुभाषिक संपर्क उनकी रचनात्मकता, समझ और आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा के महत्व पर बल देती है और त्रिभाषा सूत्र को प्रोत्साहित करती है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। केन्द्रीय विद्यालयों में हमारे लिए यह नीति केवल दस्तावेज़ तक सीमित नहीं रहती, बल्कि हमारे कक्षा-कक्ष की दैनिक गतिविधियों में जीवंत हो उठती है।

भाषा शिक्षण तब सर्वाधिक प्रभावी बनता है जब विद्यार्थी वास्तविक जीवन परिस्थितियों से सीखने का अवसर प्राप्त करते हैं। भूमिकानुभव, संवाद, नाटक और वाद-विवाद जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को हिंदी, अंग्रेज़ी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में सहज रूप से सोचने और आत्मविश्वास के साथ उत्तर देने के लिए प्रेरित करती हैं। ऐसे अवसर उन्हें सहयोगी वातावरण में अपने विचार स्पष्ट और सुसंगत रूप में व्यक्त करना सिखाते हैं। केन्द्रीय विद्यालयों में स्थानांतरण के कारण विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमियों से आने वाले छात्रों को सहपाठी सहयोग विशेष सहारा प्रदान करता है; कई बार सहपाठी ही बहुभाषाओं में अवधारणाएँ समझाकर, निर्देशों का अनुवाद कर या पाठ की पुनर्व्याख्या कर सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाते हैं।

कहानी सुनाना और रचनात्मक लेखन गतिविधियाँ बच्चों को भाषा के साथ प्रयोग करने, अपने सांस्कृतिक अनुभव साझा करने और अभिव्यक्ति कौशल विकसित करने का मंच देती हैं। प्रातःसभा, भाषा सप्ताह और अन्य मंचों पर हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्रस्तुत की जाने वाली कविताएँ, नाटक और गीत विद्यार्थियों में भाषाई आत्मविश्वास और सांस्कृतिक गर्व दोनों का विकास करते हैं। भाषा शिक्षण में प्रौद्योगिकी का समावेश भी अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है; स्मार्ट बोर्ड, ई-संसाधन और एआई-आधारित प्लेटफ़ॉर्म विद्यार्थी को निरंतरता प्रदान करते हुए सीखने को अधिक रोचक, जीवंत और सहभागितापूर्ण बनाते हैं। "एक भारत श्रेष्ठ भारत" जैसी

गतिविधियाँ बच्चों को जोड़ीदार राज्यों की अभिवादन शैली, कहावतों और लोकगीतों से परिचित कराती हैं, जिससे उनमें सांस्कृतिक जागरूकता, सहानुभूति और राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित होती है। इस तरह ये पद्धतियाँ भाषा शिक्षण को रटने के बोझ से मुक्त कर आनंदमय अनुभव में परिवर्तित कर देती हैं।

अंग्रेज़ी के पीजीटी के रूप में मेरा अनुभव यह दर्शाता है कि बहुभाषावाद छात्रों के केवल भाषाई कौशल ही नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक विकास को भी अत्यंत समृद्ध बनाता है। केन्द्रीय विद्यालयों में विद्यार्थी निरंतर हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत और अनेक क्षेत्रीय भाषाओं के बीच स्विच करते रहते हैं। यह भाषाई लचीलापन उनकी स्मरण शक्ति, समस्या-समाधान क्षमता और त्वरित प्रतिक्रिया कौशल को मज़बूत बनाता है। विभिन्न भाषाओं और परंपराओं के संपर्क से उनमें सांस्कृतिक संवेदनशीलता और सहानुभूति का विकास होता है, जिससे वे विविधता को समझने और उसका सम्मान करने लगते हैं।

साझा परियोजनाओं, प्रातःसभाओं और भाषा-संबंधी कार्यक्रमों में सहभागिता विद्यार्थियों के मन में "विविधता में एकता" के राष्ट्रीय मूल्यों को दृढ़ करती है। साथ ही, हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं का ज्ञान विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं तथा अंतरराष्ट्रीय संवाद के अवसरों के लिए तैयार करता है, वहीं दूसरी ओर यह उन्हें अपनी भाषाई और सांस्कृतिक जड़ों से जोड़े रखता है।

बहुभाषी कक्षाओं में शिक्षण के समक्ष कई व्यावहारिक चुनौतियाँ भी उपस्थित होती हैं। विभिन्न राज्य और भाषाई पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों को नई भाषा को अपनाने में कठिनाई हो सकती है—जैसे दक्षिण भारत से आए छात्र हिंदी या संस्कृत को कठिन पा सकते हैं, वहीं उत्तर भारत के विद्यार्थियों को तमिल या तेलुगु सीखना चुनौतीपूर्ण लग सकता है। कुछ क्षेत्रीय भाषाओं के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी और तीन भाषाओं के साथ अन्य विषयों के संतुलन का दबाव भी सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। अभिभावकों की अपेक्षाएँ, विशेषकर अंग्रेज़ी पर अधिक ध्यान देने का आग्रह, कई बार प्राथमिकताओं में तनाव उत्पन्न कर सकता है। बार-बार स्थानांतरण के कारण विद्यार्थियों को नए भाषाई वातावरण में स्वयं को ढालने के लिए अतिरिक्त समय और सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

इन चुनौतियों के समाधान के लिए गतिविधि-आधारित शिक्षण पद्धतियाँ अपनाना अत्यंत कारगर है। कमज़ोर विद्यार्थियों के लिए सहपाठी सहयोग, पूरक कक्षाएँ और सरल भाषा सामग्री उपलब्ध कराना उन्हें प्रोत्साहित करता है। बहुभाषी फ्लैशकार्ड, द्विभाषी शब्दावलियाँ, चार्ट और दृश्य सामग्री भाषा अधिगम को सहज बनाते हैं। सहयोगात्मक परियोजनाओं के माध्यम से विद्यार्थी शोध, प्रस्तुति और प्रदर्शन में विभिन्न भाषाओं का प्रयोग करते हैं, जिससे उनकी भाषाई दक्षता स्वाभाविक रूप से बढ़ती है। भाषा संगम और मातृभाषा दिवस जैसे भाषाई उत्सव विद्यार्थियों में अपनी भाषा के प्रति गर्व और अन्य भाषाओं के प्रति सम्मान दोनों को सुदृढ़ करते हैं।

केन्द्रीय विद्यालयों में बहुभाषी शिक्षा केवल पाठ्यक्रम की मांग नहीं, बल्कि भारत की भाषाई विविधता का सजीव प्रतिबिंब है। यहाँ भाषाएँ संवाद का साधन भर नहीं, बल्कि संस्कृतियों, परंपराओं और पहचान को जोड़ने वाली कड़ी है। त्रिभाषा सूत्र का विवेकपूर्ण क्रियान्वयन विद्यार्थियों में सहानुभूति, रचनात्मकता और अनुकूलन क्षमता जैसे 21वीं सदी के अनिवार्य कौशलों को विकसित करता है। अंततः बहुभाषावाद हमें यह स्मरण कराता है कि भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं—यह वह दृष्टि है जिसके माध्यम से हम दुनिया को देखते हैं, एक-दूसरे को समझते हैं और सीमाओं से परे संबंध स्थापित करते हैं।

डॉ . मनप्रीत कौर
पीजीटी अंग्रेजी
पीएम श्री के.वि. एंड्रयूज़ गंज,
नई दिल्ली

Scan this QR Code for the audio story.

30

केंद्रीय विद्यालय में हिंदी अध्यापन: चुनौतियाँ एवं समाधान

विविधता किसी भी देश की एक महत्वपूर्ण संपत्ति होती है। भारत में अनेक स्तर पर विविधता दिखाई देती है। विविधता जहाँ एक ओर भारत को समृद्धता प्रदान करती है वहीं दूसरी ओर कुछ चुनौतियाँ भी लेकर आती है। केंद्रीय विद्यालय इन विविधता, समृद्धता और चुनौतियों का संगम हैं। केंद्रीय विद्यालय अनेकता में एकता का प्रतिनिधित्व करता है। पूरे भारत में विद्यालयी स्तर पर इतनी विविधता का व्यापक स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाला एकमात्र संस्थान केंद्रीय विद्यालय संगठन ही है। इसकी कक्षा में भारत के तमाम राज्यों के विद्यार्थी एक साथ बैठे होते हैं , इनमें सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषायी विविधता का संगम दिखाई देता है,ऐसा विद्यालय स्तर पर भारत के अन्य किसी शैक्षणिक संस्थान में दिखाई देना दुर्लभ है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में एक अच्छी शैक्षणिक संस्था के जो लक्ष्य बताए गए हैं, केंद्रीय विद्यालय पर उस पर खरा उतरता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में कहा गया है कि – "एक अच्छी शैक्षणिक संस्था वह है, जिसमें प्रत्येक छात्र का स्वागत किया जाता है और उसकी देखभाल की जाती है। जहाँ एक सुरक्षित और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण मौजूद होता है, जहाँ सभी छात्रों को सीखने के लिए विविध प्रकार के अनुभव उपलब्ध कराए जाते हैं और जहाँ सीखने के लिए अच्छे बुनियादी ढाँचे और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध हैं। ये सब हासिल करना प्रत्येक शिक्षा संस्थान का लक्ष्य होना चाहिए।"

भारत की विविधताओं में से एक भाषाई विविधता भी है। भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। हिंदी भारत सरकार की राजभाषा तथा भारत की संपर्क भाषा भी है। हिंदी का प्रचार-प्रसार अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा किया गया है।ध्यातव्य है कि हिंदी सेवी संस्थाओं पर शोध के दौरान मुझे ज्ञात हुआ कि वर्तमान में हिंदी का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार संस्थागत रूप से पूरे भारत में सबसे व्यापक स्तर पर केंद्रीय विद्यालयों द्वारा किया जा रहा है। यह केंद्रीय विद्यालय संगठन एवं राजभाषा विभाग ,गृह मंत्रालय तथा हिंदी सेवियों के लिए हर्ष का विषय है। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि विविधता के साथ कुछ चुनौतियाँ भी होती हैं चूंकि पूरे भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं तथा विद्यार्थी की भी अपनी मातृभाषा होती है। जब वे विद्यालय आते हैं तो अपनी मातृभाषा एवम् अपनी संस्कृति अपने साथ लेकर आते हैं। केंद्रीय विद्यालय में पढ़ने वाले अनेक विद्यार्थी हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ते हैं। प्रथम भाषा उनकी मातृभाषा होती है । जब हम केंद्रीय विद्यालय के शिक्षक किसी राज्य में हिंदी अध्यापन के लिए जाते हैं तो उस विशेष राज्य में हिंदी अध्यापन की अपनी चुनौतियाँ होती हैं । यदि केंद्रीय विद्यालय के हिंदी/अंग्रेजी अध्यापक इन चुनौतियों को समझ लें तो हिंदी/अंग्रेजी के अध्यापन में उन्हें काफी सहूलियत होगी । यदि शिक्षक इन चुनौतियों को जान लेंगे तो वें विद्यार्थियों को हिंदी सीखने में आ रही चुनौतियों को बता पाएंगे तथा विद्यार्थी उन चुनौतियों पर काम करके अच्छी हिंदी एवं उसका उच्चारण सीखने में सक्षम होंगे। चलिए अब व्यावहारिक बात करते हैं और इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं। मेरी पहली नियुक्ति कश्मीर राज्य में हुई जब मैं वहाँ अध्यापन करने लगा तो मुझे ज्ञात हुआ कि यहाँ के विद्यार्थी हिंदी के कुछ वर्णों का उच्चारण नहीं कर पा रहे हैं तथा लिखने में भी ये वही गलतियाँ कर रहे हैं। इन समस्याओं को समझने के लिए जब मैंने कश्मीरी और हिंदी भाषा का तुलनात्मक अध्ययन किया तो पता चला कि – हिंदी की सभी ध्वनियाँ कश्मीरी में नहीं है तथा कश्मीरी की सभी ध्वनियाँ हिंदी में नहीं हैं ।कश्मीरी में हिंदी अध्यापन करते समय इन्हीं ध्वनियों पर हमें विशेष ध्यान देना पड़ता है । कश्मीर में हिंदी अध्यापन के दौरान हिंदी शिक्षक को जिन बातों पर ध्यान देना चाहिए वे निम्नलिखित हैं –

1.कश्मीरी भाषा में द्वितीय महाप्राण ध्वनियां (घ, झ, ढ, ध, भ) तथा नासिक्य ध्वनियाँ (म, न को छोड़कर) नहीं पाई जाती हैं। उदहारण के लिए – घर को गर, भाई को बाई, झरना को जरना, ढक्कन को दकन पढ़ते और लिखते हैं। कश्मीरी में हिंदी अध्यापन के दौरान ये

उच्चारण संबंधी विधान ध्यान रखने चाहिए। यहाँ के विद्यार्थी (कश्मीरी विद्यार्थी) उच्चारण और लेखन में इन ध्वनियों में त्रुटियाँ करते हैं।
2.कश्मीरी में मिश्रित वर्ण नहीं पाए जाते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि कश्मीरी विद्यार्थी का उच्चारण अशुद्ध हो जाता है, जैसे साइंस को साइनस कहते हैं। फिजिक्स को फिजिकस कहते हैं तथा स्कूल को सकूल कहते हैं।
3.कश्मीरी भाषा में संस्कृत भाषा की ही तरह ड़ और ढ़ नहीं है । ये ड़ , ड बन जाते हैं तथा ढ़ ,र या ड बन जाते हैं। यही कारण है कि कश्मीरी में गढ़ को गड , गड़ना को गडना ,पढ़ते हैं।
4.ण ध्वनि भी कश्मीरी में नहीं है। ण का उच्चारण न होता है।
5.क्ष यदि अंत में है तो बहुधा छ बन जाता है। जैसे अक्ष से अछ बन जाता है। लक्ष का लछ बन जाता है। परंतु यदि क्ष आरम्भ में होता है तो ख बन जाता है। जैसे क्षत्री से खतरी बन जाता है। क्षुर, खुर बन जाता है।
6.कश्मीरी भाषा में द्वित्तों का उच्चारण नहीं होता है । यही कारण है कि भट्ट , बट तथा छप्पर,छपर हो जाता है। यही कारण है कि कश्मीरी विद्यार्थी हिंदी के द्वित्तों का उच्चारण नहीं कर पाते हैं।
7.जिस तरह हिंदी में बहुधा ऋ, र में बदल जाती है; उसी तरह कश्मीरी में भी होता है ऋ, र में परिवर्तित हो जाती है। यथा पृ का पर हो जाता है। कुछ उदाहरण देखें - कृपाण, करपान हो जाता है। अभ्र, ऑबुर हो जाता है।
8.आरंभ की ओ की मात्रा ऊ में बदल जाती है, जैसे डोगरा का डूगरा।
9.आरंभ की ए की मात्रा बहुधा ई में बदल जाती है, जैसे - केशव, रेशम, सेवा बदलकर कीशव, रीशम और सीवा हो जाते हैं ।
10."शब्द के अंत की सारी मात्राएँ लुप्त हो जाती हैं । जैसे - छकरी का छकर, जम्मू का ज़म्म। ज के नीचे बहुधा बिंदी लग जाती है, जैसे - पूज़ा। ज भी बोला जाता है ।
11. यदि किसी शब्द में के आरंभ में इ होती है तो वह य में बदल जाती है जैसे इंद्रावती का यंद्रावती तथा इंद्र का यंद्र हो जाता है।
उपर्युक्त जो बातें मैंने बताई हैं, ये सभी कश्मीर में हिंदी पढ़ाने वाले या कश्मीरी विद्यार्थियों को पढ़ाने वाले सभी शिक्षकों के लिए मददगार होंगी।

यहाँ मैंने उदाहरण के माध्यम से बताया कि कश्मीर में हिंदी अध्यापन की अमुक चुनौतियाँ हैं। इसी तरह केंद्रीय विद्यालय के हिंदी अध्यापक, हिंदी अध्यापन में आ रही चुनौतियों को विद्यार्थियों की मातृभाषा का हिंदी से तुलनात्मक अध्ययन करके उन तमाम चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं। अब यह सवाल उठता है कि इनका तुलनात्मक अध्ययन कहाँ से करें तथा इनका स्रोत क्या हो? इसके कुछ सुलभ उत्तर निम्नलिखित हैं-

1. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने भारतीय भाषाओं का हिंदी के साथ तुलनात्मक अध्ययन करके अनेक शोधपूर्ण पुस्तक प्रकाशित की हैं। हम उन पुस्तकों से तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं। अपने केंद्रीय विद्यालय के पुस्तकालय में भी ऐसी पुस्तकों के क्रय हेतु संस्तुति की जा सकती है। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा प्रकाशित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों की सूची निम्नलिखित है- आंध्र प्रदेश में हिंदी शिक्षण की समस्याएँ- सीताराम शास्त्री,हिंदी असमीया : व्याकरणिक कोटियाँ (व्यतिरेकी अध्ययन) – रामलाल वर्मा,त्रुटि विश्लेषण सिद्धांत और व्यवहार (तिब्बती छात्रों के हिंदी अधिगम के संदर्भ में)राम कमल पाण्डेय हिंदी एवं मलयालम में आगत संस्कृत शब्दावली (व्यतिरेकी अध्ययन) – टी. के. नारायण पिल्लै हिंदी बंगला संयुक्त क्रिया (व्यतिरेकी विश्लेषण)– ललित मोहन बहुगुणा

2. केंद्रीय विद्यालय संगठन के क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा हिंदी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन पर संगोष्ठी व कार्यशाला कराई जा सकती है। इस संगोष्ठी व कार्यशाला में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने वाले विद्वानों को बुलाया जा सकता है । ये विद्वान हिंदी को अन्य भारतीय भाषाओं के साथ सीखने में आ रही दिक्कतों पर महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ करते हैं।

अंत में कोई शिक्षक यह प्रश्न कर सकता है कि हम इस तरह कितनी भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे तो मेरा इस पर उत्तर यह है कि आप जिस राज्य में नियुक्त हैं कम से कम उस राज्य की जो भाषा है उसका हिंदी के साथ तुलनात्मक अध्ययन कर लें। इससे आप कक्षा में हिंदी भाषा का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के बहुत बड़े हिस्से की समस्याओं का समाधान कर पाएंगे। मान लीजिए कि आप ओडिशा राज्य में नियुक्त हैं तो आप ओडिया और हिंदी का तुलनात्मक अध्ययन करें क्योंकि वहाँ विद्यार्थियों का एक बड़ा हिस्सा ओडिया भाषा बोलने वालों का होगा ।ऐसा करने से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक मूलभूत सिद्धांत भी पूरा होगा । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि "बहु भाषिकता और अध्ययन-अध्यापन के कार्य में भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन।" सच मानिए तुलनात्मक अध्ययन से एक बड़ा परिवर्तन दिखाई देगा। आप करके देखिए।

Scan this QR Code for the audio story.

डॉ. कुलदीप कुमार पुष्पाकर
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक,
पीएम श्री के.वि. खिचड़ीपुर,
दिल्ली, प्रथम पाली

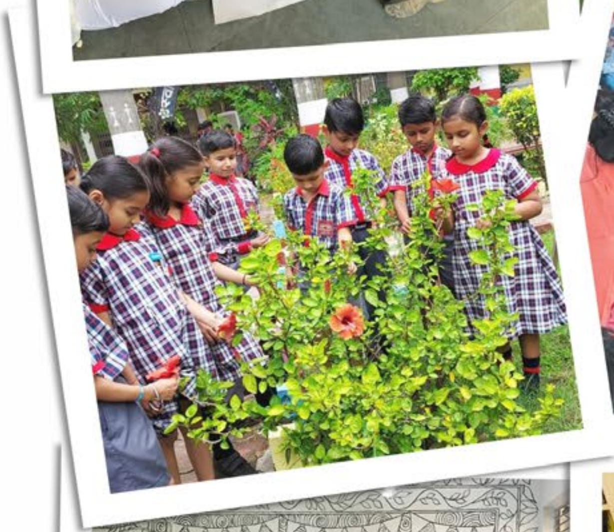

कारीगरों द्वारा
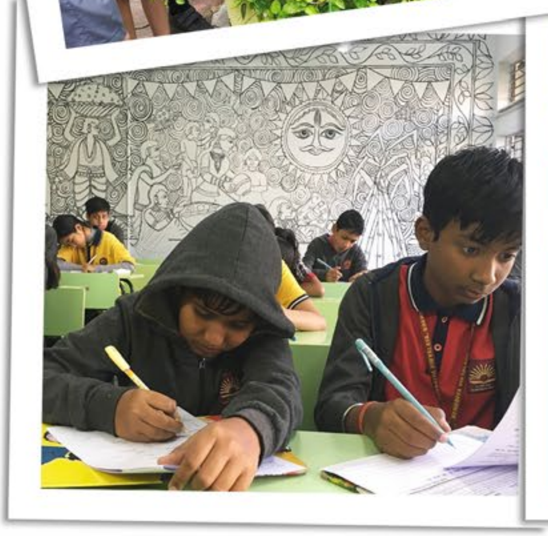

Notes

Notes

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
Kendriya Vidyalaya Sangathan

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110016
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016

---

https://kvsangathan.nic.in/ | @KVSHQ | @KVS_HQ | @kvshqr | KVS HQ